॥ ॐ अर्हं नमः ॥

॥ सर्वसमीहितदायकाय नवपदमयश्रीसिद्धचक्राय नमः ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–शासनसम्राट्–तपागच्छा-
धिपति–जगद्गुरु–भट्टारकाचार्य

श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः

# ॥नवपदमय श्रीसिद्धचक्राराधन विधि विगेरे संग्रहः॥

संयोजक

स्वपरसमयपारावारपारीण–सूरिचक्रचक्रवर्त्ति–शासनसम्राट्–
तपागच्छाधिराजआचार्यमहाराज श्रीमान् विजयनेमिसूरी-
श्वरपट्टालङ्कार सिद्धान्तवाचस्पति–न्यायविशारद –

## आचार्य श्रीमान् विजयोदयसूरि

सद्धर्मकर्मधुरीण श्रेष्ठिवर्य मनसुखभाइ भगुभाइना सुपुत्र वीतरागेक-
धर्मनिष्ठ श्रेष्ठिवर्य माणेकलालभाइए स्वद्रव्यव्ययथी श्रीसिद्धचक्र-
जीनु आराधन करनार भाइ–व्हेनोना उपयोगसारु श्री जैन
प्रथप्रकाशक सभाद्वारा छपावी प्रगट कर्या

प्रत ३००० ] अमूल्य [ प्रथमावृत्ति

आ बुक अमदावाद धीकांटा जेशगभाइनी वाडीमां आवेला
जैन एडवोकेट प्रीन्टींग प्रेसमां वाडीलाल बापुलाल शाहे छापी

## क्षमाभ्यर्थना

आ 'विधि विगेरे संग्रह नो ग्रन्थ फक्त एकज मासमां आयबिलनी ओळी ऊपर तैयार करवानो होवाथी पाछळना केटलाक विषयो, स्तवनो चैत्यवंदनो, सज्झायो विगेरे भागना प्रुफो खंभात चतुर्मास बीराजता "परमपूज्य सिद्धान्त वाचस्पति न्यायविशारद आचार्य महाराज श्रीमान् विजयोदय सूरीश्वरजी महाराजथी 'ने मोकल्वानो उतावळने लीधे टाइम न होवाथी प्रुफो अहींज सुधारेला होवाथी मुद्रण दोषथी या दृष्टि दोषथी जे काइ अशुद्धि रही होय ते सुज्ञ पुरुषो सुधारी वाचशो तेवी नम्र विनन्ति छे

ली० श्री जैनग्रन्थप्रकाशक सभाना
सेक्रेटरी

# आमुख

शास्त्रे भक्तिर्जगद्वन्द्यै-र्मुक्तेर्दूती परोदित्ता ॥
अत्रैवेयमतो न्याय्या,तत्प्राप्त्यासन्नभावत ॥१॥
यस्य त्वनादर शास्त्रे, तस्य श्रद्धादयो गुणा ॥
उन्मत्तगुणतुल्यत्वा-न्न प्रशसास्पद सताम् ॥२॥
पापामयौपधं शास्त्र, शास्त्र पुण्यनिवन्धनम् ॥
चक्षु सर्वत्रग शास्त्र शास्त्र सर्वार्थसाधकम् ॥३॥

---

श्री जगद्वन्द्य तीर्थंकर भगवंताए शास्त्रमा भक्ति राखवी ते मुक्तिनी मोटामा मोटी दूती कही छे , माटे मुक्तिप्राप्तिने नजीकपणु लावनार होवाथी मुक्तिमार्गमा शास्त्रभक्ति ए ज उचित छे ॥१॥

जेने शास्त्र प्रत्ये अनादर छे, तेना श्रद्धा विगेरे गुणो उन्मत्तगुण तुल्य होवाथी सत्पुरुषोने प्रशसानु स्थान नथी ॥२॥

शास्त्र ए पापरोगनु औषध छे,शास्त्र ए पुण्यनु कारण छे शास्त्र ए सर्वव्यापि नेत्र छे अने शास्त्र ए सर्व अर्थनी सिद्धि करनार छे ॥३॥

श्री

॥ आत्म रक्षाकर ॥

# ॥श्री वज्रपञ्जरस्तोत्र ॥

परमेष्ठिनमस्कार, सार नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकर वज्र,–पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥
ॐ नमो अरिहताण,शिरस्क शिरसि स्थितम्
,, नमो सिद्धाण, मुखे मुखपट वरम् ॥ २ ॥
,, नमो आयरियाण, अङ्गरक्षातिशायिनी।
,, नमो उवज्झायाण, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥
,, नमो लोए सव्वसाहूण, मोचके पादयो शुभे
एसो पञ्चनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥

---

श्री नवपद स्वरूप आत्मानी रक्षा करनार अने वज्रना पजर तुल्य श्रीजिनशासनना सार रूप श्री पचपरमेष्ठि नमस्कारनु हु स्मरण करु छु–१

'ओं नमो अरिहताण' ए पद मस्तकपर रहेला मुकुट सदृश छे
'ओं नमो सिद्धाण' ए पद मुख उपर श्रेष्ठ मुखपट समान छे २
'ओं नमो आयरियाण' ए पद अतिशयवाळी अगरक्षा रूप छे
'ओं नमो उवज्झायाण' ए पद बे हस्तने विषे दृढ शस्त्र समान छे ३

'ओं नमो लोए सव्वसाहूण' ए पद बन्ने पगनी रक्षा करनार शुभ मोजडीरूप छे

'एसो पच नमुकारो' ( आ पचपरमेष्ठि नमस्कार ) ए पद नीचे तळीयामा वज्रमय शिलारूप छे ४

सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहि ।
मगलाण च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥ ५ ॥
स्वाहान्त च पद ज्ञेयं, 'पढमं हवइ मगलं' ।
वप्रोपरि वज्रमयं, प्रधान देहरक्षणम् ॥ ६ ॥
महाप्रभावा रक्षेय, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी ।
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभि ॥ ७ ॥
यश्चैव कुरुते रक्षा, परमेष्ठिपदै सदा (ह)।
तस्य न स्याद्भय व्याधि राधिश्चापि कदाचन ॥८॥

---

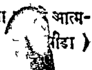
'सव्वपावप्पणासणो' ए पद बहार फरता ( चोमेर )वज्रमय किल्लारूप छे

'मगलाण च सव्वेसि' ए पद किल्ला फरती खेरना अगारावाळी खाइ रूप छे ५

'पढम हवइ मगल' ए पद किल्ला उपर रहेलु मुख्य वज्रमय शरीरना रक्षणरूप छे. सर्व पदोमा 'स्वाहा' पद अन्ते जोडी अग रक्षा करवी. ६

पचपरमेष्ठि पदोथी उत्पन्न थयेली, क्षुद्र उपद्रवोनो नाश करनारी, पूर्वाचार्य भगवतोए बतावेली आ 'आत्मरक्षा' महा प्रभाव वाली छे.

जे माणस हमेशा पचपरमेष्ठि पदोए ( आ आत्म- रक्षा करे छे तेने कोइ दिवस पण भय, पीडा ) अने आधि (मानसिक पीडा) काइ पण



| नवपद अंक | जाप पद | खमा सद स्व- स्तिक सख्या. | काउसग्ग प्रमाण | गुणणु सख्या जाप प्रमाण |
|---|---|---|---|---|
| १ | ऑ ह्री नमो अरिहताण | १२ | १२ लोगस्स | २००० २०नरका० |
| २ | ऑ ह्रॅ नमो सिद्धाण ॥ | ८ | ८ | २००० |
| ३ | ऑ ह्रीँ नमो आयरियाण | ३६ | ३६ | २००० |
| ४ | ऑ ह्रीँ नमो उवज्झायाण | २५ | २५ | २००० |
| ५ | ऑ ह्रॅ नमो लोएसवसाहूण | २७ | २७ | २००० |
| ६ | ऑ ह्रॅ नमो दसणस्स | ६७ | ६७ | २००० |
| ७ | ऑ ह्रीँ नमो नाणस्स | ५१ | ५१ | २००० |
| ८ | ऑ ह्रॅ नमो चारित्तस्स | ७० | ७० | २००० |
| ९ | ऑ ह्रॅ नमो तवस्स | ५० | ५० | २००० |

वे टन प्रतिक्रमण, नव चैत्यवन्दन, त्रिकाळ पूजन, गुरव दन,

## विधि बीजकयन्त्र ॥

| प्रकारान्तरे (१३००अर्थे साधे) गुणणु संख्या | देववन्दन | पडिलेहण. | वर्ण | वर्णानुसार आयंबिल द्रव्य |
|---|---|---|---|---|
| १२०० | त्रण टक | २ टक | श्वेत [धोळो] | चोखा |
| ८०० | ३ टक | २ टक | रक्त [लाल] | घउ |
| ३६०० | ३ टक | २ टक | पीत [पीळो] | चण्या |
| २५०० | ३ टक | २ टक | नील [लीलो] | मग |
| २७०० | ३ टक | २ टक | श्याम [काळो] | अडद |
| ५०० | ३ टक | २ टक | श्वेत (धोळो) | चोखा |
| ५०० | ३ टक | २ टक | श्वेत (धोळो) | चोखा |
| १००० वा ६०० | ३ टक | २ टक | श्वेत (धोळो) | चोखा |
| २०० वा ६०० | ३ टक | २ टक | श्वेत [धोळो] | चोखा |

विशेरे विस्तार विधि-मार्ग बतावाशे.

# अनुक्रमणिका

ॐ अर्हं नमः

॥सर्वसमीहितदायकाय नवपदमयश्रीसिद्धचक्रयन्त्राधिराजाय नमः॥

॥ सर्वतन्त्रस्वतन्त्र सूरिचक्रचक्रवर्ति-शासनसम्राट्
तपागच्छाधिपति-जगद्गुरु भट्टारकाचार्य
श्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ॥

# नवपदमय श्रीसिद्धचक्राराधन-विधि विगेरे संग्रह.

ध्यात्वा श्रीस्तम्भतीर्थेशं, पार्श्वं नवपदीं तथा ॥
नेमिसूरिं गुरुं नुत्वा, वक्ष्ये विध्यादिसङ्ग्रहम् ॥१॥

अरिहं सिद्धायरिया, उज्झाया साहुणो य सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इय पयनवगं परमतत्तं ॥ १ ॥

श्री तीर्थङ्करदेवप्रणीत वीतरागशासनमां श्री अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, साधु, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र अनें तप नवपदो ने १ (कारण)

एएहि नवपएहिं, रहिय अन्न न होइ परमत्थ।
एएसुच्चिय जिणसा-सणस्स सव्वस्स अवयारो ॥२॥
एएसु नवपएसु, अवअरिअ सासणस्स सव्वस्स।
ता एआइ पयाइ, आराहह परमभत्तीए ॥ ३ ॥
जे किर सिद्धा सिज्झति,जे अ,जे आवि सिज्झइस्सति।
ते सव्वे विहु नवपय-झाणेणं चेव निब्भंत ॥ ४ ॥
एय च परमतत्त, परमरहस्स च परममत च।
परमत्थ परमपय, पन्नत्त परमपुरिसेहि ॥ ५ ॥

आ नवपदोथी रहित (बीजायनु) बीजु कोइ परमार्थ नथी, कारण आ नवपदोमा ज समस्त श्रीजिनशासननो (अथवा शासनना सर्वस्वनो) समावेश छे २ (उपदेश)

आ नवपदोमा श्रीवीतरागशासनना सर्वस्वनो समावेश थयेलो छे ते माटे (हे भव्य जीवो !) उत्कृष्ट (बहुमानपूर्वक) भक्तिथी आ नवपदोनी आराधना करो ३ (नवपदाराधन प्रभाव)

पूर्वकाले जेओ सिद्धिपद पाम्या, वर्तमानकाले जेओ सिद्धिपद पामे छे (महाविदेहक्षेत्रादिमा), अने भविष्यकाले जेओ सिद्धिपद पामशे तेओ सर्व पण निश्चयथी आ नवपद(वा नवपद पैकीनु एकादिपद) ना ध्याने करीने ज जाणवु ४ (नवपदमाहात्म्य सार)

श्री तीर्थंकर सर्वज्ञ गणधर पूर्वधर युगप्रधानादि महापुरुषोए

तत्तो तिजयपसिद्धं, अट्ठमहासिद्धिदायगं सुद्धं ।
सिरिसिद्धचक्कमेयं, आराहह परमभत्तीए ॥ ६ ॥

आ श्री सिद्धचक्रयंत्र परमतत्त्वरूप, परमरहस्यरूप, परम मंत्ररूप परमार्थस्वरूप अने परमपद स्वरूप वर्णव्युं छे (दशमा विद्याप्रवादपूर्वमांथी उद्धर्युं छे ) ५ ( नवपदाराधनना फलरूप माहात्म्य तथा उपदेशसार )

ते माटे ( विवेकि भव्य जीवो ! ) 'त्रण जगतमां प्रसिद्ध' आठ महासिद्धिओने आपनार विशुद्ध आ श्री सिद्धचक्रयंत्रनुं उत्कृष्ट 'बहुमान युक्त) भक्तिथी 'आराधना करो' ६

## अनुष्ठानमां विधिनुं माहात्म्य

आसन्नसिद्धियाणं, विहिपरिणामो य होइ सयकालं ।
विहिचाओ अविहिभत्ती, अभव्वजिअदूरभव्वाणं ॥१॥

अर्थ—थोडाकालमां मुक्तिगामि जीवोने विधिनो परिणाम सदाकाल (हमेशा) होय छे, अभव्य अने दीर्घ संसार परिभ्रमणकरनार दूर भव्यजीवोने विधिनो त्याग अने अविधि प्रत्ये भक्ति रहे छे १

धन्नाणं विहिजोगो, विहिपक्खाराहगा सया धन्ना ।
विहिबहुमाणी धन्ना, विहिपक्ख अदूसगा धन्ना ॥ २॥

विधिनो योग (आराधननी प्राप्ति) धन्यपुरुषोने होय छे विधिपक्षनु आराधन करनार सदाकाल धन्य पुरुषो छे विधिनु बहुमान करनार धन्यपुरुषो छे अने विधिपक्षनु दूषण नहि देनार पण धन्य छे २

विधिसहित उत्तमयोगनी आराधन सामग्री मळवा पूर्वक ते सफळ करवा आराधनामा उद्यमवंत थवु ते अपूर्व भाग्योदयथी पुण्यवान् जीवोनेज होय छे, आ आराधना मोक्षप्राप्तिना साधनरूप आलंबनना अवलंबनथीज थाय छे अविच्छिन्न प्रभावशालि त्रिकालाबाधित श्री वीतरागशासनमा शाश्वत अव्याबाध मुक्ति सुखने आपनार आराधना करवा लायक असख्य योगो पैकी श्रीसिद्धचक्र महाराज जेवो परम योग एक पण नथी, कह्यु छे के—

आलंबणाणि जइवि हु, बहुप्पयाराणि संति सत्थेसु ।
तहवि हु नवपयज्झाण, सुपहाण बिंति जगगुरुणो ॥१॥

अर्थ—जोके शास्त्रोमा घणा प्रकारना आलंबनो (मोक्ष साधनो) छे तो पण निश्चयथी जगद्गुरु श्री तीर्थंकर

भगवतो श्री नवपद ध्याननें सर्वथी मुख्य ( आलंबन ) फरमावे छे

श्री सिद्धचक्र भगवान्‌नी आराधनामा तत्पर थयेल भव्यजीवोने जेम जेम ते आराधननो दिवस नजीक आवतो जाय छे तेम तेम उल्लास परिणाम तीव्र थतो जाय छे, भाग्यवान् जीवना हृदयमा एज विचार उद्भवे छे के चीकणा कर्म खपाववाना परम साधनरूप अनन्त पुण्योदये आ श्री सिद्धचक्र महाराजनी आराधना प्राप्त थई छे जगत्‌मा तेवु कोई ध्येय [ध्यान करवा लायक] बाकी नथी के जे आ श्री सिद्धचक्रजी भगवान्‌ना ध्यानमा न आवतुं होय, अर्थात् सर्वध्येयनो आना ध्यानमा समावेश थयेल छे, कारण आ श्रीसिद्धचक्रभगवंतनी आराधनामां धर्मप्रासादना मुख्य अंगरूप पायो, भींतो, पाटडा-तुल्य आराध्य त्रणे तत्त्वोनो समावेश थाय छे

"तन्नास्ति जगति ध्येय-मन्तर्भवति नात्र यत्।
सिद्धचक्रे सन्निविष्ट यस्मात्तत्त्वत्रयं परम् ॥१॥"

## सर्व क्रियाओमा तेनी सफलता माटे राखवु जोईतु मावधानपणु ?

सद्गुरुना उपदेशमा [ आज्ञानुसार ] वर्त्तनार, निधि प्रत्ये बहुमान राखनार, जे क्रिया चालती होय ते क्रियामा चित्तनी एकाग्रता करनार,लघु[हलु]कर्मी भव्य जीवनी समजणपूर्वक नियाणा रहित थती शुभक्रिया- ओ अवश्य फल आपनार होय छे, अने साचे साचुं मुक्तिनु कारण पण तेज छे

दरेक क्रिया करता अनुष्ठानोनु स्वरूप जाणवा लायक छे, तेमाथी हेय [त्याज्य] अनुष्ठानो त्याग करवा अने उपादेय ( आदरणीय ) अनुष्ठानो आदर करवा खास प्रयत्न करवो

रोगग्रस्त अने आरोग्यवान् जीवना भेदथी जेम भोजनादि क्रियाना फलमा भेद पडे छे एकने जे भोजन रोग वृद्धि करनार होय छे ज्यारे बीजाने तेज भोजन बल पोषण करनार होय छे, तेम क्रिया करनारनी परिणतिना भेदथी अनुष्ठानो पण विभिन्न फल आपनार थाय छे,

१ धार्मिक क्रिया(अनुष्ठान)करता आ भव संबंधी द्रव्य, स्त्री, पुत्र, वैभव, भोग, यश, कीर्त्ति आदिनी अभिलाषा करवाथी विषानुष्ठान कहेवाय छे, के जे स्थावर जंगम झेरनी जेम शुभ अन्त करणने तत्काल मारनार थाय छे

२ आ भवनी अपेक्षा न होय पण परभव संबंधी देव ऋद्धि चक्रवर्त्ति आदि वैभव विगेरे अभिलाषा करवाथी गरानुष्ठान थाय छे, के जे संयोग ज झेर कालान्तरे झेरविकारना परिणामनी जेम भवान्तरमा पुण्यक्षय करनार थाय छे

३ कोईपण जातना फलनी अपेक्षा न होय परन्तु सन्निपातमा मुझायेल अगर संमूर्च्छिम जीवनी प्रवृत्तिनी जेम शून्यचित्ते क्रिया करवाथी अननुष्ठान थाय छे आ अनुष्ठानमा कायक्लेशादि हेतुथी अकामनिर्जरा थायछे पण मुक्तिनुं विशिष्ट साधन सकामनिर्जरा तो उपयोगप्रवृत्तिना अभावे थती नथी

४ उत्तम अनुष्ठानना रागथी क्रिया करवाथी तद्धेतु अनुष्ठान थाय छे

—

५ श्री वीतरागदेव जिनेश्वर भगवंते बतावेल मार्ग प्रत्ये उल्लास पामती तीव्रश्रद्धाथी असंख्य प्रदेश वीर्य स्फूर्ति साथे उछळता आनन्दथी शुद्धविधि साचववाथी अमृतानुष्ठान थाय छे

अमृतानुष्ठान अमृतक्रिया ] ना लक्षणो—जे क्रिया करता होय तेमाज शुद्ध एकाग्र उपयोग होय, आडी अवळी दृष्टि न होय, तथा मननी व्यग्रतारूप क्षेप दोष न होय ते 'तद्गतचित्त' १ जे क्रियानो शास्त्रमा जे काल कह्यो होय ते समयेज करवा योग्य शुभ क्रिया करता होय ते 'समयविधान'२ चित्तनो उल्लास अने परिणामधारानी पुष्टि होय ते 'भाववृद्धि' ३ जेम नारकी जीव नरकथी त्रास पामतो होय, केदी केदथी भयवाळो होय छे तेम ससारनु जन्म-जरा-मरणादि दु ख स्वरूप जाणी ससारथी भयवाळो होय ते 'भवभय' ४ जे क्रिया करतो होय ते क्रिया मुक्तिनु परम साधन छे पूर्वे कोई वखत मळेली नथी तेम विचारतो आश्चर्यवन्त थाय ते 'विस्मय'

५.आवु मुक्तिनुं परम कारण म्हने प्राप्त थयु तेम हर्ष थवाथी रुंवे रुवा उचा थाय ते अथवा आ क्रिया करता ससारथी त्रासेल होवाथी भयथी रुंवाटा उचा थाय ते 'पुलक', ६ अपूर्वमुक्तिदाता क्रिया प्राप्त थयेल होवाथी जन्मान्धपुरुषने पुण्योदये नेत्रप्राप्तिथी अथवा सुभटने रणसग्राममा शत्रु जीतवाथी जे आनन्द थाय तेनाथी पण अधिक तात्त्विक आत्मसुख उत्पन्न थाय ते 'प्रमोद' ७ आ सर्व अमृत क्रियाना मुख्य लक्षणो छे आ लक्षणोथी अमृतक्रियानो अनुभव थाय छे आ अमृतक्रिया आभव अने परभवमा अवश्य फल आपे छे अमृतनो बिन्दु मळ्यो होय त्या आरोग्यता माटे बीजा औषधनी जरुर होई शके नहि तेम अमृतक्रिया एकवार पण मळी होय तो बीजा कारणो शिवाय पण मुक्ति पामवामा कोई बाधक आवतु नथी

"अमृतनो लेश लह्यो इकवार,
बीजुरे औषध करवुं नहि एम्नी ।

अमृतक्रिया तिम लहि एकवार,
वीजारे साधन विण शिव नवी अडेजी ॥१॥"

टुकाणमा सारी रीते शास्त्रार्थनु चिन्तवन, क्रियाने विषे मननी एकाग्रता, तथा कालादि साधनोमा अविपरीतपणु ते अमृतानुष्ठाननु लक्षण छे अमृतानुष्ठाननो आनन्द भव्यजीवनना हृदयमा समातो नथी

क्रियानो अगीकार, क्रिया करवामा प्रीति, धर्मने विषे व्याघाताभाव, ज्ञानादि सपत्तिनी प्राप्ति, वास्तविक स्वरूपनी जिज्ञासा, वस्तु धर्मना जाणकार गीतार्थोनी उपासना, ए सदनुष्ठानना लक्षणो छे.

आ पाचे अनुष्ठानोमा प्रथमना त्रण अनुष्ठानो त्याज्य छे कारण तेमा क्रिया दूषित थाय छे, अने छेवटना बे अनुष्ठानो आदरणीय छे वळी क्रियाना दग्ध १ शून्य २ अविधि ३ अतिप्रवृत्ति ४ दोषो पण वर्जवा क्रिया साथे भावनी खास प्रधानता राखवी, कारण एकली क्रियाथी थएल कर्मक्षय देडकाना चूर्ण तुल्य कह्यो छे, अने भावपूर्वक क्रियाथी थएल कर्म

क्षय देडकानी भस्म तुल्य कह्यो छे, देडकाना चूर्णने पाणीनो संयोग मळता जेटला चूर्णना कणीया छे तेटला नवा देडका उत्पन्न थाय छे, तेम अज्ञानताने योगे निमित्त मळता पाछो क्लिष्ट कर्मबन्ध थाय छे अने देडकानी राख थइ होय तो ते राखमाथी गमे ते सयोगे पण पुन देडकानी उत्पत्ति थती नथी, तेम पुन कर्मबन्ध पडतो नथी

क्रिया कृवो खोदवा तुल्य अने भाव शिरा (सेर) पाणी तुल्य छे, कूवो खोद्या शिवाय शिरा (सेर) प्रकटती नथी अने सेर शिवाय अखुट पाणी रहेतुं नथी माटे बेउनी खास आवश्यकता छे

अज्ञानी जीव वर्ष कोटिओमा जेटलु कर्म खपावे तेटलु कर्म ज्ञानी श्वासोच्छ्‌वासमा खपावे छे. तेमा पण भावपूर्वक क्रियानी मुख्यता बतावी छे,

आ दिवसोमा जेम बने तेम आश्रव-कपायनो त्याग विशेष करवो, आरंभोनो त्याग करवो करावबो, बनी शके तेटली अमारि प्रवर्त्तावबी देवपूजनना कार्य

शिवाय वापरवाना कार्यमा सचित्त पाणीनो पण त्याग ज राखवो

आ दिवसोमा विशेषे करी जुठु बोलवुं नहि कोइने कठोर वचन कहेवु नहि, भाषा उपर काबु राखवो, हितकारी प्रिय लागे तेवु सत्य अने प्रमाणो-पेत ज बोलवु

पहेला अने पाछळना दिवसो साथे खास शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळवु, पोताने वापरवाना वस्त्रो अने दागीना विगेरेनु प्रमाण करवु

आ दिवसो माटे खास अमुक प्रमाण दिशानो नियम करी लेवो

जता आवता ईर्यासमितिनो खास उपयोग राखवो

उपाश्रय देहरासरमा प्रवेश करता 'नीसीही' त्रण बोलवा, पण ते मात्र बोलवा पुरतु नहि पण तेनो अर्थ विचारी खास उपयोगमा रहेवु

कोइ पण चीज लेता मुकता कटासणु—सथा-रीयु पाथरता विगेरमा खास जयणा करवी पुजवा प्रमार्जवानो उपयोग राखवो

शुक–चळखो विगेरे जेम तेम नांखी न देवा. जग्या जोइ परठववा, तेना उपर धूळ या रक्षा नाखवी मात्रु, स्थडिल विगेरेमा पण लीलफूल, कीडीना नगरा, वनस्पति विगेरे तमाम जोइने जयणाथी वर्त्तवु

आर्त्त रौद्र ध्यान, अशुभलेश्या, उपाधि सकल्पविकल्पो वर्जवा.

कोइनी साथे कलह, क्रोध विगेरे करवो नहीं तेमज तेनी उदीरणा पण करवी नहि

प्रतिक्रमण, पडिलेहण, देववन्दन, प्रभुपूजन, विगेरे क्रिया करता तथा गुणणु गणवु, आहार वापरवो, मार्गे जता आवता, स्थडिल मात्रु करवा जता विगेरे प्रसगे बोलवुं नहि

आयबिल करती वखते नवकार गणी आहार स्वादिष्ट के विरस होय तो पण आहारनी वस्तु उपर के आहार बनावनार विगेरे उपर राग द्वेष करवो नहि, वापरता 'सुरसुर' 'चवचव' शब्द थाय नहि तेम बहु उतावळ के बहु धीमु नहि, दांणो छांटो पडे नहि

तेवी रीते उपयोग पूर्वक आहार करवो, तेमा द्रव्योनी गणतरी राखवी, बनी शके तो चौद नियमो धारवा उपयोग राखवो

दरेक सूत्रोनु उच्चारण करता तेमा रहेला लघु, गुरु, सयुक्त, असयुक्त वर्णोनु लक्ष्य राखवु पद, स पदा (अर्थाधिकार युक्त विश्रामस्थानो ) नो उपयोग राखवो, अर्थ उपर खास ध्यान राखवु न्यूनाधिक अ क्षरो न करवा, कानो मात्रा अनुस्वार विगेरेनो बील- कुल फेरफार थाय नहि वर्ण, अर्थ, अने आलवन प्रतिमाजी, गुरु, स्थापना विगेरेनु अवलबन करी उपयोगमा वर्त्तवु

दरेक क्रियामा जे जे आलवन होय तेनाथी बाकीनी ऊर्ध्वदिशा (ऊचे) अधोदिशा (नीचे) तिर्य- ग्दिशा (अडखे पडखे) ए त्रणे दिशाओ तरफ जोवानो त्याग करवो, एकज सन्मुखभावे क्रिया करवी

दरेक क्रियामा रुपु अने महोर छापना दृष्टान्ते बहुमान अने भक्तिनी चउभगीनु स्वरूप खास समजी आराधक दशाना भांगानो आदर करवो

वळी प्रीति, भक्ति, वचन अने असंग ए चार अनुष्ठानोना स्वरूप पण अवश्य जाणवा लायक तथा उपादेय ते आदरवालायक छे

देवपूजा, गुरुभक्ति प्रतिक्रमण, देववन्दन, प्रतिलेखनादि दरेक शुभक्रियाओ करतां खेदादि चित्त-अन्त करणना दोषोनो अवश्य त्याग करवो

खेद—क्रिया करता कटाळो आववो, त्या विचारवु के हे चेतन ? बीजाओनी द्रव्यादि लालसाए गुलामगीरी करता, आरभादि कामोमां त्हने कटाळो आवतो नथी, के जे केवळ ससारवृद्धिनु कारण छे अने आ क्रिया त्हने मुक्तिनु निदान प्राप्त थइ छे माटे आमा कटाळो लावीश नहि

उद्वेग—क्रिया उपर अरुचिभाव, हे चेतन ! अहितकारिणी क्रियाओ करी करी भव वगाड्यो त्यां अरुचि न आवी, आ क्रिया एकान्त हितकारिणी छे आमा अरुचि लावीश नहि

क्षेप—एक पण आरभेली क्रिया प्रत्ये चित्तनी

स्थिरता नथी अन्योन्य क्रियाओ प्रत्येनी चचळता, हे चेतन ! अशुभ प्रवृत्तिओमा, व्यापारमा, लेवड देवडमा, हीसाबो तपासवामां रहने अस्थिरता नडती नथी तो एकान्त शुभ प्रवृत्तिरूपी क्रियामा तुं अस्थिरता करीश नहि इत्यादि क्रियाना फलने विनाशकारक महान् दोषोनो अवश्य त्याग करवो

## क्रियानो बाह्यशरीरोपयोग

१ प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन, देववदन, खमासमण, काउसग्ग विगेरे तमाम क्रिया करवाना पवित्र उचित स्थानके चद्रवा बाधेला होवा जोइये

२ आयबिलनी रसोइ, भोजन करवु पाणी ठारवु विगेरे स्थले पण चद्रवा बाधेला होवा जोइए

३ यतना साचववा माटे स्थडिल मात्रु परठववानी जग्यानो खास उपयोग राखवो

४ थाळी, वाडका, पाटला, पनाला, कळशा, पहेरवाना धोतीया, खेस, कामळ विगेरे तमाम वापरवानी

चीजो नाम (अक्षरो) विनाना होवा जोइए तथा धोतीया विगेरे वस्त्रो खेळ विनाना धोयेला राखवा, फाटेला तथा साधेला राखवा नहि, पाटलाओ डगता होवा न जोइए.

४ पाणी पीधा पछी तुरतज ते प्यालो खास ल्होई नाखवो, कारण तेमा अनुपयोग थवाथी भीनो रही जाय तो वे घडी पछी समूर्छिम जीवोनी उत्पत्ति थाय छे तेथी ते माटे खास स्वच्छ लुगडाना कटका अगर रुमाल राखवा

५ पूजा माटेना उपकरणोनी शुद्धिनो खास उपयोग राखवो

६ पूजा भणावतां भावशुद्धि विशेष थवाना साधनो अवश्य राखवा

७ पूजा करती वखते पूजाना उपकरणो जेवा के कलश, धूपधाणु, केशर चदननी वाटकी, नैवेद्य, फलनो थाळ विगेरे नाभिनी उपर अने मुख तथा नासिकानो श्वास न लागे तेवी रीते हाथमा राखवा.

८ नवकारवाली तथा पुस्तक विगेरे पवित्र उंचे स्थानके मुकवानो उपयोग राखवो, चरवळे भरावी देवानी तथा कटासणा उपर के जेम तेम मुकी देवानी घणी खरी प्रथा देखाय छे पण तेम करवाथी आशातना थाय छे माटे तेम न करवु

९ पुरुषोए चरवळा गोळ दाडीवाळा अने स्त्रीओए चोरस दाडीवाळा राखवा

१० सामायिक, प्रतिक्रमण करता पहेला मात्रु स्थंडिलनी बाधानो उपयोग करी लेवो, कदाच सामायिकमा प्रतिक्रमणमा बाधा थाय तो ते माटे माथे ओढवानी कामळी तथा पुजवाना दंडासणनो तथा अचित्त पाणीनो खास उपयोग राखवो, घणे ठेकाणे कामळीना अभावे कटासणुं माथे नाखी जता देखाय छे पण तेम करवाथी विराधना थाय छे माटे ते सबधी खास उपयोग राखवो पडिलेहणादि वखते काजो उद्धरवा काजा उद्धरणी ( पुजणी ) सुपडीनो उपयोग राखवो

## पुस्तक वांचता राखवो जोइतो उपयोग



१ अविनय आशातना न थाय माटे बहुमान सहित पवित्र उंचे आसने पुस्तकने राखवु

२ वाचती वखते तेना वर्णो उपर खास लक्ष्य राखवु पद क्या पुरु थाय छे, संपदा क्या अटके छे, ह्रस्व, दीर्घ, लघु, गुरु, संयुक्त, असयुक्त, अनुस्वार, कानो, मात्रा विगेरेमा फेरफार न थइ जाय माटे खास उपयोग राखवो

३ अर्थविचारणा करवी तथा ते आत्मामा घटाववा काळजी राखवी

४ नाभिथी उपर पुस्तक रहे तेवी रीते सापडा या बाजोट विगेरे उपर राखी हाथनो परसेवो न लागे, डाघ विगेरे न पडे तेनो उपयोग राखवो हालमा केटलाक अज्ञानताथी या संकोचवृत्तिथी या सगवडतानी खातर सापडाओ तदन न्हाना राखे छे माटे ते संबंधी काळजी राखवी

८ नवकारवाली तथा पुस्तक विगेरे पवित्र उचे स्थानके मुकवानो उपयोग राखवो, चरवळे भरावी देवानी तथा कटासणा उपर के जेम तेम मुकी देवानी घणी खरी प्रथा देखाय छे पण तेम करवाथी आशातना थाय छे माटे तेम न करवु

९ पुरुषोए चरवळा गोळ दाडीवाळा अने स्त्रीओए चोरस दाडीवाळा राखवा

१० सामायिक, प्रतिक्रमण करता पहेला मात्रु-स्थंडिलनी बाधानो उपयोग करी लेवो, कदाच सामायिकमा प्रतिक्रमणमा बाधा थाय तो ते माटे माथे ओढवानी कामळी तथा पुजवाना दंडासणनो तथा अचित्त पाणीनो खास उपयोग राखवो, घणे ठेकाणे कामळीना अभावे कटासणुं माथे नाखी जता देखाय छे पण तेम करवाथी विराधना थाय छे माटे ते सबंधी खास उपयोग राखवो पडिलेहणादि वखते काजो उद्धरवा काजा उद्धरणी ( पुजणी ) सुपडीनो उपयोग राखवो

---

आवश्यक साचववाना छे, शिष्ये हमेशा पोताना श्वा-सोच्छ्वास, अधोवात विगेरेथी गुरुनी आशातना टाळवा माटे गुरुना अवग्रहथी बहार रहेवु जोइये त्यां रह्यो छतो उभा उभा "इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए नीसीहीआए अणुजाणह मे मिउग्गह" आटलुं बोली अवग्रहमां पेसवानी आज्ञा मागता मस्तक नमाववु

खमासमण विधिमा बतावेल नव सडासा प्रमार्जी 'नीसीही' बोलता अवग्रहमां प्रवेश करवो

उभडक पगे बेसीने खमासमण विधिमा कहेला १० थी १४ सुधीना पाच सडासा प्रमार्जी चरवळा उपर मुहपत्ती मुकवी (गुरु चरण स्थाने स्थापवी) बेउ हाथ बे ढींचणनी अदर राखी दस

---

साथे तमाम प्रकारनी अविनय आशातनाओ वर्जवानो अर्थ होवाथी गुरवन्दन सूत्र कहेवाय छे, आ सूत्रथी कोनी कोनी वन्दना करवी विगेरे विचार खास समजवा योग्य छे

५ पुस्तकने थुंक लगाडवु नहि, पानु फेरवता केटलाको थुकवाळी आगळी करे छे ते मोटामा मोटी भुल छे, पुस्तक पासे छते वाछूट करवी नहि, पग लगाडवो नहि, पुस्तक पासे छते झाडो, पेशाब, करवा नहि, पुस्तक उपर बेसवु के सुवु नहि, पुस्तक पासे राखी भोजन करवु नहि, अक्षर थुकथी भूसवो नहि, पुस्तकने जेम तेम उचेथी पटकवु नहि, पुस्तकनो अग्नि के पाणीथी नाश करवो नहि, पुस्तकने फाडवु के बीजी कोइ रीते नाश करवो नहि

॥ आवश्यक (प्रतिक्रमण) विगेरे क्रियामां राखवो जोइतो उपयोग तथा साचववानो विधि ॥

वादणानु नाम द्वादशावर्त्तवन्दन[1] अथवा गुरु[2] महाराजनु उत्कृष्टवन्दन कहेवाय छे, वादणा देता २५

१ आ सूत्र बोलतां बार आवर्त्तो साचववाना होवाथी द्वादशावर्त्तवन्दन सूत्र कहेवाय छे

२ गुरु महाराजनी वन्दना पूर्वक सुखशाता ( कुशळ ) पृच्छा

आवश्यक साचववाना छे, शिष्ये हमेशा पोताना श्वासोच्छ्वास, अधोवात विगेरेथी गुरुनी आशातना टाळवा माटे गुरुना अवग्रहथी वहार रहेवु जोइये त्या रह्यो छतो उभा उभा "इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए नीसीहीआए अणुजाणह मे मिउग्गह" आटलु वोली अवग्रहमां पेसवानी आज्ञा मांगवा मस्तक नमाववु

खमासमण विधिमा वतावेल नव संडासा प्रमार्जी 'नीसीही' वोलता अवग्रहमां प्रवेश करवो

उभडक पगे वेसीने खमासमण विधिमा कहेला १० थी १४ सुधीना पाच सडासा प्रमार्जी चरवळा उपर मुहपत्ती मुकवी (गुरु चरण स्थाने स्थापवी ) वेउ हाथ वे ढींचणनी अदर राखी दस

---

साथे तमाम मकारनी अविनय आशातनाओ वर्जवानो अर्थ होवाथी गुरुवन्दन सूत्र कहेवाय छे, आ सूत्रथी कोनी कोनी वन्दना करवी विगेरे विचार खास समजवा योग्य छे

आगळीओ भेगी करी जेम भींत उपर थापो मारता होय तेवी रीते गुरुचरण स्थानापन्न चरवला उपर मुकेली मुहपत्ती (साधु साध्वीए मुहपत्ती ढींचण उपर राखवानी होवाथी ओघानी दशीओ) उपर उंधा हाथे दश आगळीयोथी हळवे स्पर्श करता 'अ' अक्षर बोलवो, तेवीज रीते चत्ता हाथे कपालने स्पर्श करता 'हो' अक्षर बोलवो

पूर्वनी माफक उधे हाथे मुहपत्तीने स्पर्श करतां 'का' अक्षर बोलवो, कपाले स्पर्शता 'य' अक्षर बोलवो, वळी मुहपत्तीने स्पर्शता 'का' अक्षर बोलवो अने कपाले स्पर्शता 'य' अक्षर बोलवो, बन्ने हाथो मुहपत्ती उपर चत्ता मुकी तेमा मस्तक अडाडता 'सफास' पद बोलवु 'खमणिज्जो भे किलामो' ए पदो बोलता बे हाथ अजलि जोडेला मस्तके लगाडवा पूर्वनी माफक बेउ हाथे मुहपत्तीने स्पर्शता 'ज' अक्षर बोलवो, वच्चे हाथ राखता 'त्ता' अक्षर बोलवो, ललाटे (कपाले) स्पर्शता 'भे' अक्षर बोलवो एज प्रमाणे

पूर्वनी माफक 'ज' 'व' 'णि' ए त्रण अक्षरो बोलवा, वळी तेज प्रमाणे 'ज्जं' 'च' 'भे' ए त्रण अक्षरो उच्चारवा, वळी मस्तक अडाडता 'खामेमि खमासमणो' ए पदो बोलवा, 'देवसिअं वइक्कमं' बोली छेल्ला त्रण सडासा प्रमार्जता 'आवसिआए' ए पद बोली अवग्रह बहार नीकळवुं,आज प्रमाणे बीजे वादणे पण करवुं मात्र बीजे वादणे अवग्रहथी बहार नीकळवानु न होवाथी 'आवास्सियाये' पद बोलवु नहि एटले ते आवश्यक ओछुं समजवु, मन, वचन, कायानी एकाग्रता राखवी, 'अहो' विगेरे बवे अक्षरोमा पहेलो अक्षर उदात्त, ( उचे स्वरे ) बोलवो, बीजो अनुदात्त ( नीचे स्वरे बोलवो, 'जत्ताभे' विगेरे त्रणमां पहेलो उदात्त, बीजो स्वरित (मध्यमस्वरे)अने त्रीजो अनुदात्त बोलवो, [ आ विधिनो खास उपयोग राखवो कारण विधिनी अज्ञानताए प्रमादवशे क्रियानु यथार्थ फल पामी शकातु नथी] आज प्रमाणे मुहपत्ती पडिलेहवी, काउस्सग्ग करवा विगेरे विधिओमा पण उपयोग राखवो

प्रतिक्रमण (श्रावकोने वदित्तु) सूत्र बोलता केवुं 'वीरासन' करवु, देववन्दनमा मुद्राओ केवी करवी, सूत्रो बोलता केवी विधि साचववी विगेरे विधिना जाणकार पासेथी समजी यथार्थ रीते वर्तवु(आमानो केटलोक विधि आगळ पण कहेवाशे





## ॥ आराधनाना दिवसोनो विचार-काल रहस्य.॥

आराधनानी शरुआत—कर्मना क्षय, क्षयोपशम, उपशम विगेरे करवामा द्रव्यक्षेत्रादिनी माफक काल पण एक विशिष्ट कारण छे आम्रना परिपाकमां तथा खेती विगेरे करवामा जेम अमुक काल आवश्यक छे, तेम धर्मना परिपाकमा, तथा तप क्रिया ध्यान विगेरे साधनोथी राग, द्वेष, काम, क्रोध, विषयवासना आदि काटाओ दूर करी आत्मभूमिमा धर्मबीज आरोपण करवामां कालनी पण खास अगत्यता छे विद्या-मन्त्रादिनी साधना करवामा पण काल तथा जाप विगेरे साधनोनी पण जरुरीयात होय छे आवा अनेक हेतुओने लइने प्राचीन महापुरुषोए श्री सिद्धचक्रजी भगवानना आराधन माटे आश्विन अने चैत्र मासना नव नव दिवसो बताव्या छे, आ दिवसोने १ तीर्थ-

यात्रा २ रथयात्रा ३ अष्टाह्निकायात्रा ए त्रण यात्राओ [महोत्सवो] पैकी अष्टाह्निकायात्राना भेदोमा शाश्वत-यात्रा (महोत्सव) तरीके गणाव्या छे, तेमां पण प्रथम शरुआत परम निवृत्तिमय काल होवाथी आश्विन मासमां करवामा आवे छे, अने ते क्रमथी पूर्णाहुति पण आश्विन मासमांज थाय छे वळी आ शरद् अने वसन्त ऋतुना लगभग मध्य दिवसोमा आर्यबिलनी तपस्या शारीरिक आरोग्यताने अगे वैद्यकीय(डाक्टरी) सिद्धान्त प्रमाणे पण केटली लाभप्रद छे ते कालविचारस्वरूपज्ञ पुरुषो पासे समजवा लायक छे हालनी प्रवृत्तिए शुदि ७ थी १५ सुधीना नव दिवसोनु आराधन छे वचमा तिथिनी वृद्धि होय तो आठमथी, अने तिथिनी हानि होय तो छठथी शरु आत थाय छे सातम बे होय तो बीजी सातमथी अने आसो बे होय तो बीजा आसोमा शरुआत थाय छे. एज प्रमाणे बे चैत्र होय तो बीजा चैत्रमां आराधना कराय छे

---

## आराधक भव्य जीवोनुं प्रारंभ कृत्य

शरुआतमा दीन अनाथादि जीवोने मनमां सन्तोष उपजाववाने दान आपवु, छ री पाळवी, एटले के १ शुद्ध ब्रह्मचर्य धारी २ भूमि संस्तारी ३ एकाहारकारी. ४ उभटक प्रतिक्रमणकारी ५ सचित्त त्यागकारी ६ पादचारी ( जोडा विगेरेनो त्याग करी ऊघाडा पगे नियमित भूमिमा चालनार ) थवु अमारी प्रवृत्ति करावबी, जेटली बनी शके तेटली द्रव्यादि आपीने पण जीवदया प्रवर्त्तावबी, घाणी भट्ठी विगेरे तमाम आरंभो बध करावबा, चैत्योमां आंगी पूजाओ रचाववी विगेरे पूर्व सेवाकृत्यो करवा

## आराधक जीवोनु अधिकारिपणु

आराधक जीव शान्त होवो जोइए अल्प आहारवान्, अल्प निद्रा करनार, कामना ( अभिलापा ) रहित, कपायरहित, धैर्यतावान्, परनिन्दा नहि कर-

नार, गुरु उपासनामा प्रीतिवान्, कर्मक्षयनो अर्थी, रागद्वेपनी मन्दतावाळो, दयालु विनयनी अपेक्षा राखनार, आलोक परलोकना फलनी स्पृहा नहि करनार, इत्यादि गुणवान् जीव तपनो अधिकारी छे अल्प गुणवाने यथाशक्ति गुणो मेळववा उद्यम करवो



# प्रथम दिवसनो कर्त्तव्यविधि

रात्रिनो चार घडी काल शेष रहे त्यारे जागृत थाय, परमेष्ठिमंत्रनुं स्मरण करे, पोताना स्वरूपनो विचार करे—'हु कोण छु,' 'क्याथी आव्यो छु,' 'क्या जवानो छु,' 'मारु कुल कयु,' 'मारो धर्म कयो' 'मारा देव कोण,' 'मारा गुरु कोण,' 'मारा धर्मने मारा कुलने उचित कर्त्तव्य शु छे, में उत्तम कर्तव्यो शा शा कर्यां अने शा शा बाकी छे' इत्यादि विचारणा करवी, अनन्त पुण्योदये आराधननो काल प्राप्त थयेल होवाथी अपूर्व उत्साह अने वीर्योल्लास साथे स्वस्थ थइ श्री अरिहत महाराजना आराधनानो पवित्र दिवस होवाथी श्री तीर्थंकर भगवानना द्रव्यगुण पर्यायोनी चिन्तवना करी तेमना ध्यानमां आपणा आत्माने लीन करी सामायिक अंगीकार करे कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग (कर्म परिणामनी विचित्रताथी जीवघात-मैथुनादि सबधी रौद्रस्वप्न आव्यु होय तो 'सागरवरगभीरा' सुधी

४ लोगस्स अने सामान्य विचारथी 'चदेसु निम्मलयरा' सुधी ४ लोगस्स ) करी अप्रमत्तपणे वीर्य न छुपावता विधिसहित उपयोग पूर्वक प्रतिक्रमण करवु

सूर्योदय लगभगमा तमाम पडिलेहणा सपूर्ण थाय ते प्रमाण क्रियामा वापरवाना तथा रात्रे संथाराना उपयोगी सर्व उपकरणोनी पडिलेहणा करी सपूर्ण पडिलेहण कर्या बाद आठ स्तुति अने पाच शक्रस्तवे देववदन करे 'मन्हजिणाण' (श्रावककर्तव्य सूचक) सज्झाय करे, पवित्र उचे स्थानके श्री सिद्धचक्र भगवाननुं यत्र पूर्व दिवसे प्रतिष्ठावी स्थापन कर्युं होय तो ठीक, नहि तो ते दिवसे स्थापन कराने, वासक्षेपथी पूजन करे त्रण खमासमण देवा

---

१ दरेक पूज्य वस्तुओ तथा पूज्यनी पूजामा उपयोगी चीजो उपकरणो विगेरे नाभिप्रदेशथी उचे स्थानके राखवा

॥ गुणो प्रत्येनुं बहुमान तेज गुणिनु बहुमान होवाथी गुणोनुं स्मरण करवा साथे प्रदक्षिणापूर्वक खमासमण (पंचांग प्रणिपात) देवां ॥

श्री केवलज्ञान उत्पन्न थये श्री तीर्थंकर प्रभुनी श्री तीर्थंकर नामकर्म उदयथी प्रातिहार्य तथा अनेक अतिशयो गर्भित चार मूलातिशय स्वरूप अतिशयोथी थयेली विशिष्टता ध्यानमां लाववा माटेना चार गुणो—

अशोकाख्य वृक्षं सुरविरचित पुष्पनिकर ।
ध्वनि दिव्य श्रव्यं रुचिरचमरावासनवरम् ॥
वपुर्भासभार सुमधुररव दुन्दुभिमथ ।
प्रभो प्रेक्ष्यच्छत्रत्रयमधिमन कस्य न मुद ॥१॥
अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनश्च ।
भामण्डल दुन्दुभिरातपत्र सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥२॥

---

१ माप दरेक क्रियामा इरियावहिनी प्रधानता ( प्रथम करवा पणु) होवाथी कोइस्थले खमासमण देता पहेला इरियावही करवानु पण बतावे छे

अपायापगमो ज्ञान, पूजा वचनमेव च ।
श्रीमत्तीर्थकृता नित्य, सर्वेभ्योऽप्यतिशेरते ॥३॥
प्रातिहारज आठ छे, मूल अतिशय चार ।
चार गुण अरिहतदेव, नमो नमो बहु वार ॥४॥

## अर्हत्पदनमस्कार अर्हत्स्वरूपमां लीनता करनारुं स्वरूपसूचक दुहाओ



परम पंच परमेष्ठिमा, परमेश्वर भगवान ।
चारनिक्षेपे ध्याइये, नमो नमो जिनभाण ॥१॥
अरिहतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायरे ।
भेद छेद करी आतमा, अरिहत रूपी थायरे ॥१॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, तुमे साभळजो चित्त लावीरे
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवी आवीरे ॥२॥

आ प्रमाणे दूहा बोली जयणा पूर्वक प्रदक्षिण दइ १ स्वस्तिक करी यथाशक्ति फल, नैवेद्य, नाण विगेरे मूकी १७सडासा प्रमार्जवापूर्वक खमासमण देवु

## ॥ खमासमणा (पचांग प्रणिपात)देवानो विधि ॥

'इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए, नीसीहिआए' एटला पदो उभा उभा बोली चरवलाथी जमणा पगनो पाछलनो भाग [केडथी प्हानी सुधी]प्रमार्जवो १ बे पगनो मध्यभाग २ तथा डाबो पग ३ एज प्रमाणे आगळना पजा सुधीना त्रण भाग ६ ढींचणो स्थापवानी आगळनी जमीन त्रणवार ९ प्रमार्जी ढींचणभर बेसी जमणा हाथमां मुहपत्ती लइ मुहपत्तीथी कपालनी जमणी बाजुथी आखो डाबो हाथ पाछळ कोणी सुधी १० तेज प्रमाणे डाबा हाथमा मुहपत्ती लइ डाबा कपालथी जमणो आखो हाथ चरवलानी दाडी मुहपत्तीथी प्रमार्जी ११ ज्यां बे हाथ साथे माथु स्थापवु छे ते चरवलानी दशीओना भागनी आगळ मुहपत्तीथी त्रणवार १४ प्रमार्जी 'मत्थएण वंदामि' ए पद बोलतां बे हाथ जोडी माथु नीचे नमाववु (जमीन उपर लगाडवु) एटले के आ सूत्र बोलता बे ढींचण बे हाथ अने मस्तक ए पाचे

अगो जमीन उपर लगाडवाना होवाथी पंचाग प्रणि
पात दडक कहेवाय छे

उपरनी चौद सडासा ( सदशक ) प्रमार्जनामा
ऊठती वखत पहानीओ स्थापवानी पाछळनी जमीन
त्रणवार पुजवी, आ प्रमाणे सत्तर १७ सडासा जाणवा,
आ प्रमाणे विधि साचववा साथे दूहा बोली प्रदक्षिणा
दइ स्वस्तिक करवा पूर्वक खमासमण देवा एकेक खमा-
समण दइ एकेक गुण सभारवा पूर्वक नमस्कार
पद बोलवु

॥ बार गुणगर्भित नमस्कार पदो

१ श्री अशोकवृक्षप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
आ प्रमाणे गुणसूचक नमस्कारपद बोलवुं वळी
पूर्वनी माफक दूहा बोली प्रदक्षिणा दई स्वस्तिक
करी खमासमण देवु ए प्रमाणे दरेक गुणे समजवुं
२ श्रीपुष्पवृष्टिप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम.॥
३ श्रीदिव्यध्वनिप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥

४ श्रीचामरयुगलप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम.॥
५ श्रीस्वर्णसिहासनप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हने नम
६ श्रीभामण्डलप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
७ श्रीदुन्दुभिप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
८ श्रीछत्रत्रयप्रातिहार्यविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
९ श्रीलोकालोकप्रकाशककेवलज्ञानस्वरूपज्ञानातिशय-
विभूपिताय श्रीमदर्हते नम.॥
१० श्रीसुरासुरनरगणनायककृतसमवसरणप्रातिहार्यादि-
विशिष्टपूजातिशयविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
११ श्रीसर्वभापानुगामिसकलसशयोच्छेदकपचत्रिशद्गु-
णालङ्कृतवचनातिशयविभूपिताय श्रीमदर्हते नम ॥
१२ श्रीस्वपरापायनिवारकापायापगमातिशयविभूपिताय
श्रीमदर्हते नम. ॥

छेवटे एक खमासमण दइ अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कड' कहेवु

---

## ॥ आ बार गुणोनी हृदयमा भावना रहेवा माटे तेनी अर्थविचारणा ॥

श्री तीर्थंकर प्रभुना बाह्य ऐश्वर्य सूचवनार प्रतिहार भक्त (सेवक देवो)ना भक्ति कर्त्तव्य आठ प्रातिहार्यो तथा आन्तर ऐश्वर्य अने अनेक अतिशयना बीजक रूप चार मूलातिशयो ए बार गुणोए श्री अरिहंत प्रभुने ध्यान करवा

१ प्रभु ज्या ज्या स्थिरता करे त्या त्यां सर्व शोकादि दूर करनार प्रभुना बार गुणो अशोकवृक्ष देवताओ रचे छे, वायुथी फरकती तथा चमकती अनेक ध्वजाओ अने घूघराओथी सुशोभित अशोक वृक्ष रूप प्रातिहार्य

२ एक योजन प्रमाण क्षेत्रमा अधोमुखवाळा ढींचण प्रमाण पांचवर्ण पुष्पवृष्टिरूप प्रातिहार्य

३ मालव कौशिक रागे थती भगवतनी वाणीने अनुसरता दिव्य ध्वनिरूप प्रातिहार्य

४ भगवंतनी बे बाजु वींजाता उत्तम चामररूपप्रातिहार्य
५ भगवंतने बेसवा माटे उत्तम कान्तिवाळा रत्नजडित सिंहासनरूप प्रातिहार्य
६ भगवंतनीपीठेरहेलदेदीप्यमानभामंडलरूपप्रातिहार्य
७ भगवंतना विहारादि अवसरे आकाशमा अदृश्य दुंदुभिरूप प्रातिहार्य
८ अर्जुन सुवर्णनी सळीओवाळा मोतीओना गुच्छा समेत अनेक सफेद पुष्पमालाओथी वींटायेल श्वेत दिव्य वस्त्रमय छत्रत्रयरूप प्रातिहार्य ए आठ प्रातिहार्यों तथा
९ लोकालोक प्रकाशकरनार श्रीकेवलज्ञानरूपज्ञानातिशय
१० सुर असुर मनुष्यादिए करेली समवसरण प्रातिहार्यादि स्वरूप विशिष्ट पूजातिशय
११ देव, मनुष्य, तिर्यंच सर्वेनी भाषाने अनुसरती सकल संशयने उच्छेद करनार, पांत्रीश गुणोए शणगारायेल वाणीरूप वचनातिशय,
१२ पोताना घातीकर्मोरूप कष्टनिवारण थया तथा

दुवालसगुणविभूसियसिरिअरिहतपयाराहणत्थ ( द्वादशगुणविभूषितश्रीअर्हत्पदाराधनार्थं ) काउस्सग्गं करेमि·

पचेन्द्रिय सुधीना जीवोनी विराधनाना मिच्छामिदुक्कड आवे छे जेनी सख्या १८२४१२० थायछे, 'जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचिंदिया' जे मे जीवो विराध्या एकेन्द्रिय थी यावत् पचेन्द्रिय सुधी,अहीं एकेन्द्रियथी पचेन्द्रिय सुधीना ५६३ जीवभेद लेवा,[एकेन्द्रिय २२ पृथ्वीकाय(४) सूक्ष्म अपर्याप्त, सूक्ष्म पयाप्त, बादर अप०,बा०प० एव अप्काय (४) तेउकाय(४). वायुकाय(४) साधारण वनस्पतिकाय (४). आगळना तमाम जीवो बादर ज होय छे जेथी प्रत्येकवन० अप० (१) प्रत्येक वन० प० (२) द्वीन्द्रिय २ अप० द्वी० १ प०द्वी २ त्रीन्द्रिय २ चतुरि०२ पचेन्द्रियतिर्यंच २० जलचर (४) सम्मू० अप०, स०प०, गर्भज अप०, गर्भज पयाप्ता. चतुष्पद ( ४ ) उर परिसर्प ( ४ ). भुजपरि० ( ४ ) खेचर ( ४ ) नारक १४. सात अप०, सात प०. मनुष्य ३०३ पाच भरत, पाच ऐरवत, पाच महाविदेह, ए १५ कर्मभूमि, पाच हिमवत, पाच हिरण्यवत, पाच हरिवर्ष, पाच रम्यक्, पाच देवकुरु, पाच उत्तरकुरु, ए ३० अकर्मभूमि, छप्पन अतर्द्वीप, कुल १०१ सम्मू० मनु० अपर्याप्ताज होय माटे ते १०१, अने गर्भज अप०१०१ पर्याप्ता १०१(३०३) देवता १९८,दश भुवनपति, पदर परमाधामी, ८ व्यतर, ८ वाणव्यतर, १० तिर्यग् जृभक, ५ चरज्योतिष, ५ स्थिर ज्यो०, ३ किल्बिषिक, बार देवलोक, ९

( जो गुरुनी जोगवाइ होय तो गुरु आदेश आपे ' करेह ' इच्छं, दुवालसगुणविभूसियसिरि

लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर, ( १०, १५, ८, ८, १०, ५, ५,३,१२,९,९,५,कुल ९९ ). अप० ९९, पर्या० ९९ (१९८) सर्व मळी जीवभेद ( २२, २, २, २, २०, १४, ३०३, १९८ ) ५६३ विराधनाना ' अभिहिया ' सामा आवता हण्या १, ' वत्तिया ' धूळे ढांक्या २, 'लेसिया' जमीन साथे घस्या ३, 'संघा-इया' शरीरे शरीर एकठा कर्या ४ ' संघट्टिया ' स्पर्शथी दूहव्या ५, 'परियाविया' परिताप्या ६, 'किलामिया' मृतप्राय कर्या ७,'उद्दविया'त्रास पमाडया ८,'ठाणाओ ठाणं संकामिया' एकस्थानथी बीजे स्थाने मूक्या ९, ' जीवियाओ ववरोविया ' प्राणथी जुदा कर्या (मार्या) १०, ए दश भेदे गुणता ५६३०,रागद्वेषथी विराधना थाय छे माटे राग अने द्वेष बेथी गुणता ११२६०, मन वचन कायाए विराधना कराय छे जेथी ए त्रणे गुणता ३३७८०,करवु करावयु अने अनुमोदयु ए त्रण विराधनाना भेदो होवाथी त्रणे गुणता १०१३४०, वर्त्तमान अतीत अने अनागत ए त्रण काले गुणता ३०४०२०,ते विराधनाने अरिहंत सिद्ध साधु देव गुरु आत्मा ए ६ साक्षिए मिच्छामि दुक्कड होवाथी ६ ए गुणता १८२४१२० भेद थाय छे. विचारसित्तरीमा उपयोग अने अनुपयोगे विराधना थती होवाथी ते बे भेदे गुणता ३६४८-२४० भेद पण बताव्या छे.

अरिहंतपयाराहणत्थ करेमि काउस्सग्ग वदणवत्ति० अन्नत्थ० चार लोगस्स 'चदेसु निम्मलयरा' सुधी काउस्सग्ग करवो यथाशक्ति उभा उभा काउसग्ग करवा उपयोग राखवो अने तेमा 'जिनमुद्राए' उभा रहेवु एटले वेउ पगना आगळना पजाना भागमा [ चार आगळनु ] अतर राखवु अने पाछल पहानीना भागमा 'किंचिन्यून चार आगळनु' अतर राखवु डावा हाथमा चरवळो अने जमणा हाथमा मुहपत्ती राखवी, काउसग्ग माटे तेना आगारो तथा दोपो तरफ खास उपयोग राखवो, काउसग्गमा आगार शिवाय अग बीलकुल चलावबु नहि, केटलाक सख्या गणवा माटे आगलीना वेढा गणवा, होठ फफडाववा विगेरे करे छे, परन्तु तेम करवाथी दोप लागे छे वास्तविक रीतिए अदर जीभ पण हालवी जोईये नही दाते दातनो स्पर्श करवो नही, इत्यादि खास उपयोग राखवानी आवश्यकता छे काउसग्ग पारी प्रकट लोगस्स कही खमा०दइ अविधिआशातना मिच्छा मि दुक्कड कहेवु

## ॥ नव चैत्यवन्दन विधि ॥

ऋद्धिमत भाग्यवान् जीवे दरेक मन्दिरे तेना उपयोगी पूजोपकरण कलश धूपधाणु, पूजानी वाटकी, फूलछाबडी, केसर, सुखड, वाळाकुची, बरास, बरख विगेरे तमाम यथासपत्तिए लइ जवा तथा फल फूल नैवेद्य सोनानाणु, रूपानाणु विगेरे यथाशक्ति लइ महोत्सव सहित दीन, अनाथादिने दानादि आपता देहेरासरे जइ विधि साचवता नीसीही त्रिकादि पूर्वक चैत्यवदन करवु सर्व मन्दिरे ते प्रमाणे शक्ति न होय तो मुख्य एक मन्दिरे पूजोपकरणादि मुकवा अथवा यथाशक्ति स्वस्तिकादि करवा, देहेरासरमा प्रवेश करता पाच अभिगम साचववा, एक वस्त्रनुं उत्तरासग [ छेडा आतरी वाळो खेस] अवश्य करबुं, (हालमा उत्तरासग [खेस] नी प्रवृत्ति बहुज ओछी जोवामां आवे छे पण तेमा विधिनी न्यूनता थाय छे ते खास लक्ष्यमा राखवु ) प्रथम नीसीही कहेवी 'निसीही' कार्यना निषेधथी थयेल (नैषेधिकी) एटले प्रथम घरव्यापार कुटुंबादि

अरिहंतपयाराहणत्थ करेमि काउस्सग्ग वदणव
अन्नत्थ० चार लोगस्स 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी क
सग्ग करवो यथाशक्ति उभा उभा काउसग्ग क
उपयोग राखवो अने तेमा 'जिनमुद्राए' उभा
एटले बेउ पगना आगळना पंजाना भागमां [
आगळनु ] अतर राखवु अने पाछल पानीना भा
'किंचिन्न्यून चार आगळनु' अतर राखवु
हाथमा चरवळो अने जमणा हाथमा मुहपत्ती रा
काउसग्ग माटे तेना आगारो तथा दोषो तरफ
उपयोग राखवो, काउसग्गमा आगार शिवाय
बीलकुल चलाववु नहि, केटलाक सख्या गणवा
आंगलीना वेढा गणना, होठ फफडाववा विगेरे
छे, परन्तु तेम करवाथी दोष लागे छे वास्तविक
तिए अदर जीभ पण हालवी जोईये नही दाते द
स्पर्श करवो नहीं, इत्यादि खास उपयोग राख
आवश्यकता छे काउसग्ग पारी प्रकट लोगस्स
खमा०दइ अविधिआशातना मिच्छा मि दुक्कड व

## ॥ नव चैत्यवन्दन विधि ॥

ऋद्धिमत भाग्यवान् जीने दरेक मन्दिरे तेना उपयोगी पूजोपकरण कलश धूपधाणु, पूजानी वाटकी, फूलछावडी, केसर, सुखड, वाळाकुची, बरास, वरख विगेरे तमाम यथासपत्तिए लइ जवा तथा फल फूल नैवेद्य सोनानाणु, रूपानाणु विगेरे यथाशक्ति लइ महोत्सव सहित दीन, अनाथादिने दानादि आपता देहेरासरे जइ विधि साचवता नीसीही त्रिकादि पूर्वक चैत्यवदन करवु सर्व मन्दिरे ते प्रमाणे शक्ति न होय तो मुख्य एक मन्दिरे पूजोपकरणादि मुकवा अथवा यथाशक्ति स्वस्तिकादि करवा, देहेरासरमा प्रवेश करता पाच अभिगम साचववा, एक वस्त्रनुं उत्तरासग [ छेडा आतरी वाळो खेस] अवश्य करवु, (हालमा उत्तरासंग [खेस] नी प्रवृत्ति बहुज ओछी जोवामा आवे छे पण तेमा विधिनी न्यूनता थाय छे ते खास लक्ष्यमा राखवु ) प्रथम नीसीही कहेवी 'निसीही' कार्यना निषेधथी थयेल (नैषेधिकी) एटले प्रथम घरव्यापार कुटुंबादि

संबधी तमाम चिन्तानो त्याग करी हुं प्रवेश करुं छु त्यारबाद दहेरासर सबधी सभाळवानु कार्य (आशातना विगेरे दूर करवु इत्यादि) सभाळी बीजी नीसीही कही ते सबधी चिन्तानो हवे आगळ गभारा पासे आवता त्याग कर्यो अने चैत्यवन्दन करवा बेसता भावस्तवमां आत्माने लीन करवा त्रीजी नीसीही बोलवी. प्रभुमदिरमा प्रवेश करता प्रभुदृष्टिमा आवे के तुरत मस्तक नमाववु, अजलि जोडवी, प्रणाम करवो त्रण प्रदक्षिणाओ देवी, प्रदक्षिणा देता समवसरणमा प्रभुना जेम चार दिशाए दर्शन थाय छे तेम चार तरफ प्रभुना दर्शन करवा अगर तेनी भावना करवी

पुरुषे हमेशा प्रभुना जमणा अग तरफ अवग्रह साचवी ऊभा रहेवु अगर बेसवु, अने स्त्रीओए डाबी बाजुए अवग्रह साचवी रहेवु त्यां धूपपूजा चामर ढाळवा विगेरे यथोचित करवु, प्रभुनी सन्मुख दिशा शिवाय बीजी कोइ दिशा तरफ दृष्टि नाखवी नही, शरीरने खणवू विगेरे कोइपण आशातनानु स्थान

सेववु नहि, 'आशातना' एटले के आय-सम्यग्दर्शनादि निज गुणोनो लाभ, तेनी शातना-खडना एटले विनाश थवो आ आशातनानो सामान्य अर्थ पण जोता तेमा आत्माने हानि थाय छे माटे ते स्थान सेववु नही. प्रभुनी सन्मुख गभाराद्वारे उभा रही प्रभुना स्वरूपनु चिन्तवन करी असाधारण गुणसूचक प्रभुनी स्तुति करवी, पछी स्वस्तिकादि यथाशक्ति करी चैत्यवन्दन करवु, चैत्यवन्दनमा त्रणमुद्रानो विधि साचववो, योग-मुद्रा, मुक्ताशुक्तिमुद्रा, जिनमुद्रा, 'योगमुद्रा' एटले वेउ हाथनी दशे आगलीओ माहेमांहे अन्तरित करी कम-ळना डोडा आकारे वेउ हाथ पेट उपर कूणीओ रहे तेम राखवा, आ मुद्राथी प्रभु प्रत्ये आपणी नम्रता थाय छे, प्रभु गुणनी अधिकतानो भास थाय छे, अने यथार्थ एकतानवृत्ति थाय छे, 'मुक्ताशुक्तिमुद्रा' एटले मोती उत्पन्न थवानी छीपना जोडाना आकारे वेउ हाथ सरखा गर्भित राखी ललाट (कपाल)ना मध्यभागे लगाडवा बीजा आचार्य मध्यभाग आगल राखवा

पण लगाडवा नहि तेम कहे छे स्त्रीओए हाथ उचा करता स्तनादि अवयवो देखाय नेम थवुं न जोईये, जिनमुद्रा एटले बेउ पग आगलनी आगलीओना भाग (पहोंचा)नु अतर चार आगल थाय अने पाछलनी प्हानीओनु अतर किचिन्न्यून थाय तेवी रीते राखी उभा रहेवु

## मुद्राओनो उपयोग

स्तुति स्तोत्र, खमासमण, चैत्यवन्दन, शक्रस्तव (नमुत्थुण) स्तवन विगेरे सूत्रो योगमुद्रा साचवी बोलवाना छे

प्रणिधानसूत्र चैत्योनी वन्दनानु सूत्र "जावति चेइआइ" मुनिवन्दन सूत्र "जावत केवि साहू" अने प्रार्थना सूत्र "जयवीयराय–आभवमखडा" सुधी ए सूत्रो मुक्ताशुक्तिमुद्रा साचवी बोलवाना छे

वादणा देवा, अरिहत चेईयाण विगेरे कार्योत्सर्गना सूत्रो बोलवा, काउस्सग्ग करवो विगेरेमा जिनमुद्रा साचववानी छे

चैत्यवन्दन करता वनता सुधी जे प्रभु सन्मुख चैत्यवन्दन करता होईए तेमनुज चैत्यवन्दन, स्तवन, स्तुति बोलवी

चैत्यवन्दन करता वर्ण-अर्थ अने आलवननो अवश्य उपयोग राखवो जेनु स्वरूप प्रथम कह्युं छे

स्वस्तिकादि तथा चैत्यवन्दनादि प्रभुभक्तिमां लीन थता आत्माओने ते समये धर्मना चारे अग दान, शील, तप अने भावनी समकाले आराधना थाय छे आश्रव कषायादि कर्मवन्धना साधनोनो त्याग थाय छे, तथा किंचिदशे भव्यजीवोने वारे व्रतोनी पण आराधना थाय छे तथा सम्यकृत्वशुद्धि, दृढता तथा वृद्धिनु तो मुख्य साधन छे

## गुरुवन्दन व्याख्यानश्रवण प्रत्याख्यान ग्रहणविधि

प्रभु दर्शन-पूजन जेटलु अगत्यनुं छे तेटलुज गुरुवन्दन पण खास अगयत्यनुं छे माटे गुरुना स्थानमा आवी विधिपूर्वक गुरुवन्दन करवु, स्वस्तिक

करवा पूर्वक गुरुमुख कमलथी श्रवण विधिपूर्वक श्री-सिद्धचक्र महाराजना माहात्म्यनु, ससारनी असारतानुं, पोतानी सामाचारीनु विगेरे मुक्तिमार्गने देखाडनारु व्याख्यान श्रवण करवु, विधिसहित प्रत्याख्यान ग्रहण करवु, प्रत्याख्यान ग्रहण करता दायक–ग्राहकनी जाणग–अजाणगनी चउभगी खास ध्यानमा राखी आराधक भागो लेवो, प्रत्याख्यानमा म्हारे केवी रीते वर्त्तवु, शो त्याग कर्यो आवा शा शा आगारो छे विगेरे तमाम समजवा उपयोग राखवो

प्रभातमा प्रतिक्रमण वखते, दहेरासरे चैत्यवंदन कर्या पछी प्रभुसमक्ष पच्चक्खाण ग्रहण कर्युं छे तो पण गुरुसमक्ष लेवानी खास जरुर छे, मनमां दृढ-नियम कर्यो होय तो पण शास्त्रोक्त सूत्रोच्चार सहित गुरु समक्ष लेवाथी सील मारवामा आवे छे

स्वस्थाने आवी पूजा सामग्री तैयार करी स्नान करवु, स्नाननु पाणी कोइ वासणमा झीली लेवुं के विधिए स्नान करे, हम्मेंशा स्नान परनालवाला

जमीनथी उंचा बाजोठ उपर स्नान करे, जेथी तेनो रेलो जवाथी, कीडी, कुथुआ, लीलफुल आदि कोइ जीवनी विराधना न थाय अने ते पाणी निर्जीव शुद्र स्थंडिल भूमि जोइ छुट्ट छुट्ट परिठववुं के जेथी तुरतमा सुकाइ जवाथी समूर्छिम जीवोत्पत्ति तथा लीलफूल विगेरे थवानो सभव न रहे, शरीर लोही नाखी निर्जल थये वीजु वस्त्र फेरवी शुद्ध सफेद वी जाए नहि वापरेल पवित्र वस्त्रो पूजा माटे राखवा, पूजामा रेशमी दुकूल-वस्त्रो वीजा उत्तम वर्णना होय तो पण चाले छे स्त्री अने पुरुषोना वस्त्रोमा वीलकुल फेर-फार करवो नहि, फाटेला साधेला मेला वापरवा नहि वस्त्र शुद्धि राखवी

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपकरण सार।
न्यायद्रव्य विधिशुद्धिता, शुद्धि सात प्रकार ॥ १ ॥

ए सात शुद्धिनो वनतो उपयोग राखवो, अग, अग्र, भाव विगेरे अनेक पूजा भेदोनु स्वरूप समजी जेम विशिष्ट पूजन थाय तेम वर्तवु, जे जे पदाराधननो दिवस होय ते ते दिवसे ते ते पदनी विशिष्ट पूजा करवी विगेरे,सपूर्णविधि साचववासाथे पूजा अष्टप्रकारी आदि विस्तारथी करवी श्री अरिहतपदनी विशेष पूजा करवी.

## ॥ श्री सिद्धचक्र यत्रनी पुन धूपादिथी पूजा करवी ॥

मध्याह्नकाले पुन देववदन आठ थोइए करवुं देववदनमा श्री तीर्थंकर देवना चारे निक्षेपानी आराधना तथा ज्ञानादि गुणोनी, तीर्थादिनी आराधनाओ थाय छे देववदनना बार अधिकारोनो घणो विचार समजना लायक छे

"ॐ ह्रीँ नमो अरिहताणं" ए मत्र जाप पदनो वे हजार [ वीश नवकारवाळी ] जाप करवो, पच्चख्खाणनो टाइम थये पच्चख्खाण पारवु

### ॥ पच्चक्खाण पारवानो विधि ॥

खमा० इरियावही पडिक्मी खमा० इच्छाकारेण सदिसह भगवन् चैत्यवदन करु ? इच्छ, जगचिन्तामणिथी यावत् जयवीयराय सुधी चैत्यवन्दन करवुं, खमा० इच्छा० सज्झाय करुं, इच्छ नवकार गणी "मह-जिणाणं आंण" ए पाच गाथानी सज्झाय ( आ सज्झायमा श्रावकनी उत्तम करणीनु स्वरूप बतावेलुं

छे ते खास विचारवा लायक छे तेमांनी आपणी शक्ति अनुसार केटली करणी करी अने हवे केटली बाकी छे ते खास स्मरणमा राखी यथोचित अवसर मळ्ये ते ते करणीओ करवा प्रयत्न करवो ) करवी.

खमा० इच्छा० मुहपत्ती पडिलेहु, इच्छं, कही मुहपत्ती पडिलेहवी, खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पारुं 'यथाशक्ति' खमा० इच्छा० पच्चक्खाण पार्युं, 'तहत्ति' कही, मुट्ठि सहित जमणो हाथ चरवळा उपर स्थापी एक नवकार गणी "उग्गए सूरे नमुक्कारसहिय पोरिसी साढपोरिसी सुरे उग्गए पुरिमड्ढ मुट्ठिसहिय पच्चक्खाण कर्युं चोवीहार आयंबिल एकासणु पच्चक्खाण कर्युं तिविहार पच्चक्खाण [1]फासिय [2]पालिय [3]सोहियं

१ 'फासिय' लीधेलु पच्चक्खाण तेना काळ सुधी सारी रीते स्पर्श्युं ( आराध्यु )

२ 'पालिय' पच्चक्खाणनो काळ पूरो न थाय त्यांसुधी वारवार संभारी साचव्यु

३ 'सोहिय' गुरुादिने निमंत्रण करी व्होरावी वापरवाथी शोभाव्यु

[1]तीरियं [2]किट्टिय [3]आराहिय ज च नआराहिय तस्स " मिच्छा मि दुक्कड " आ प्रमाणे पाठ बोली पच्चक्खाण पारवुं एक नवकार गणवो

आयंबिलना पच्चक्खाणनी साथे काल सबधी पोरिसी, साड्ढपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ विगेरे पोतानी शक्ति प्रमाणेनु पच्चक्खाण छे, एकवार भोजननु एकासण पच्चक्खाण छे, प्रासुक पाणीनु पाणस्सनु पच्चक्खाण छे, ते साथे मुट्ठिसहिय, पोते धारेलु गठसहियादि पच्चक्खाण छे

१ 'तीरिय ' काल पूर्ण थया पछी तेनी शुद्धि माटे थोडा अधिक काल सुधी सबुर राखीने पारवाथी पार उतार्यु

२ 'किट्टिय' वापरती वखते आज म्हारु अमुक पच्चक्खाण हतु ते में सपूर्ण आराध्यु, हवे हु वापरु छु तेम पच्चक्खाणनी स्तवना (स्मरण) करवाथी वखाण्यु

३ ' आराहिय ' आ म्हारु पच्चक्खाण उपर प्रकारनी सर्व शुद्धि सहित श्री जिनाज्ञा पाळवा पूर्वक फलाशसा रहितपणे केवळ कर्मक्षयनी अभिलाषाथी कर्यु छे.

पछी आहार (आयंबिल) करवाना स्थानके आवी श्रीसिद्धचक्र भगवान्नु ध्यान धरतो छतो बनता सुधी [1]उत्कृष्ट आयंबिलना प्रकारवाळुं तथा श्री अरिहंतप्रभुनु ध्यान तथा सात्त्विक वृत्ति रहेवा माटे उज्ज्वलवर्णे चोखानु आयंबिल करे, आयंबिल करतां आहार करता जे विधि प्रथम बताव्यो छे ते उपर खास लक्ष्य राखवु

आयंबिल कर्या बाद स्वच्छ म्हों (मुखशुद्धि) करी ठाम चउविहार बनी शके तो ते, नहि तो तिविहारनु पच्चक्खाण करे, साथे उपयोगनी तीव्रता माटे मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण करवु, त्यारबाद पाणी पीवुं होय तो चैत्यवन्दन करी, जो मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण होय तो ते नवकार गणी पारी पाणी पीवु, पुन मुट्ठिसहियादि पच्चक्खाण करी लेवु, आ

१ आयंबिलना प्रकारो गीतार्थ गुरुमहाराज पासे समजी यथाशक्ति उत्कृष्ट थाय तेवो उपयोग राखवो, उत्कृष्ट न थइ शके तो पण यथाशक्ति आराधना अवश्य करवी.

प्रमाणे करवाथी उपयोगनी तीव्रता साथे विशेष लाभनु कारण विरतिपणु आत्माने रहे छे

॥ शेषकालनुं कर्त्तव्य ॥

आ दिवसोमा जेम बने तेम प्रमाद सेववो नहि, विकथा करवी नहि कषायने अवकाश आपवो नहि अने श्री सिद्धचक्र भगवाननु अपूर्व माहात्म्य हृदयमा स्फुरायमान थाय, तेमना ध्यानमा आत्मानी विशेष लीनता थाय ते माटे तेमनु आराधन करनार श्रीपाल महाराजना चरित्रगर्भित श्री श्रीपालमहाराजनो रास वाचवो अगर साभळवो, तेनी अर्थविचारणा करवी साजनुं पडिलेहण करवु, देववन्दन करवु,

देववन्दन कर्या बाद पाणी पीवातुं नथी, सन्ध्याकालनी आरती, धूप, दीप विगेरे पूजा करवी, श्री सिद्धचक्र यन्त्रनी पण सध्याकाले धूपादि यथोचित पूजा करवी, सांझे देवासिक प्रतिक्रमण करवु, प्रतिक्रमण कया बाद गुरमहाराजश्रीनी जोगवाई होय

तो गुरुशुश्रूषा करवी, श्री अरिहंत प्रभुनु ध्यानादि स्वरूप विगेरे धर्मकथा करवी,

प्रहर रात्रि लगभग थये सथारा पोरिसी साभळवी संथाराविधि उपर लक्ष्य राखी ते प्रमाणे वर्त्तवु, पोताना आराधन करेला दिवसनी सफलता मानतो, श्री पंचपरमेष्ठि मत्रनो जाप करतो सथारो पाथरवानी जग्या चरवलाथी प्रमार्जी सथारीयु, उत्तरपट्टो पाथरी श्री अरिहत प्रभुनु शुक्लवर्णे ध्यान करतो तेमना गुणोने हृदयमा भावतो अल्प निद्रा करे,

॥ इति प्रथम दिवस कर्त्तव्य विधि ॥





## ॥श्री सिद्ध पदाराधन वीजा दिवसनुं कर्तव्य.॥

---

उपर प्रमाणेज जाग्रत थयाथी तमाम कृत्य समजवुं, मात्र आज सिद्ध परमात्मानु ध्यान करवानुं छे, अविनाशि स्वभावनो वोध आपवारूप भव्यजीवो उपर असाधारण उपकार करनार सिद्ध परमात्मा सकल कर्मरहित थइ केवी शुद्ध अवगाहनामां त्यां वीराजमान छे, तेमना आत्मानी साथे पोताना आत्मानो भेदाभेद चिन्तववो, तेमना ज्योति स्वरूप रूपातीत अवस्थाना शुद्ध ध्यानमा आत्माने तन्मय वनाववो,

---

## ॥ श्री सिद्ध भगवंतना गुणोनो विचार.

जो के कर्मक्षयना योगे सिद्ध परमात्माना अनन्त गुणो प्रकाशित थयेला छे, तो पण महापुरुषोए ध्यान करवाने माटे एकत्रीश गुणोनो अथवा पदर भेदे सिद्ध थता होवाथी पंदर भेदोना जाप विगेरे विधि अन्य तप विगेरेमा आवे छे, तो पण अहीं आठ कर्ममलथी लेपायेल आत्मा ते कर्मना क्षयथी कया कया गुणने प्राप्त करे छे तथा आत्मानु निर्लिप्त दशानुं स्वरूप केवु होय ते विगेरे ध्यान करवा तथा आत्माने ते ध्यानमां लीन करवा आठ कर्मक्षयथी उपजेल आठ गुणोनु ग्रहण कराय छे

॥ सिद्धपदना ८ गुणो ॥

एक एक कर्मना क्षय थकी, नीपन्यो गुण एक एक।
आठ गुणे इम प्रणमीये, सिद्ध प्रभु सुविवेक ॥ १

अनन्त केवलज्ञान, ज्ञानावरणसक्षयात् ।
अनन्त दर्शन चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥ १ ॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व–चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात्क्रमात् ॥२॥
आयुष क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थिति ।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ–मूर्तानन्तावगाहना ॥ ३ ॥

आ प्राचीन श्लोकोथी सिद्ध परमात्माना आठ गुणो बताव्या छे, जो के उपरोक्त श्लोकोमा मोहनीय क्षयथी सम्यकृत्व १ अने क्षायिकचारित्र २ ए बे गुणो बताव्या छे, अने नाम तथा गोत्र ए बेउ कर्मना क्षयथी 'अमूर्त अनन्त अवगाहना' नामनो एक गुण बताव्यो छे, सरयामा गुण ८ छे, परन्तु बीजा अनेक स्थलोए मोहक्षयथी उत्पन्न थयेल बेउगुणने एकज लीधा छे, अने नाम कर्मक्षयथी अरूपी गुण अने गोत्रक्षयथी अगुरुलघुस्वभाव गुण एम जुदा जुदा बे गणाव्या छे अन तेज प्रमाणे अहीं पण खमासमण देवामा ते मुजब गुणो गणाव्या छे

॥ सिद्धपद नमस्कारपूर्वक सिद्ध स्वरूपमां आत्म-
लीनता स्वरूप सूचक खमासमणना दूहाओ ॥

गुण अनन्त निर्मल थया, सहज स्वरूप ऊजास ।
अष्ट कर्म मल क्षय करी, भये सिद्ध नमो तास॥१॥
रूपातीत स्वभाव जे, केवल दसण नाणीरे ।
ते ध्याता निज आत्मा, होय सिद्ध गुण खाणीरे॥२॥

वीर जिनेश्वर उपदिशे०

॥ सिद्धना ८ गुणगर्भित नमस्कार पदो.

१ ॥ज्ञानावरणीयकर्मक्षयोद्भूतानन्तज्ञानगुणविभूपिते-भ्य श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

२ ॥दर्शनावरणीयकर्मक्षयोद्भूतानन्तदर्शनगुणविभूपि-तेभ्य श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

३ ॥वेदनीयकर्मक्षयोद्भूताव्यावाधसुखगुणविभूपितेभ्यः श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

४॥मोहनीयकर्मक्षयोद्भूतानन्तसम्यक्त्वचारित्रगुणवि-
भूपितेभ्य श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

५ ॥ आयुष्कर्मक्षयोद्भूताक्षयस्थितिगुणविभूपितेभ्य
श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

६ ॥ नामकर्मक्षयोद्भूतारूपित्वादिगुणविभूपितेभ्य
श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

७ ॥ गोत्रकर्मक्षयोद्भूतागुरुलघुगुणविभूपितेभ्य श्री-
सिद्धेभ्यो नम ॥

८ ॥अन्तरायकर्मक्षयोद्भूतानन्ताकरणवीर्यगुणविभूपि-
तेभ्य श्रीसिद्धेभ्यो नम ॥

काउस्सग्ग वखते ' अडगुणविभूसियसिरिसिद्ध-पयाराहणत्थ काउस्सग्ग करेमि ' (अष्टगुणविभूपित-श्रीसिद्धपदाराधनार्थं ) आ प्रमाणे बोलवु जापमां ' ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाण ' जपवुं, सिद्धपदनु विशेष पूजन करवु,

बाकी तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो,

मात्र श्री सिद्ध परमात्मानु रक्तवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी आयंबिलमां पण रक्तवर्ण घउनु द्रव्य लेवु

---

## श्री सिद्धगुणोनी हृदयमा भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ.

१ ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल, अनन्त ज्ञान (केवलज्ञान) गुण

२ दर्शनावरणीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त केवल दर्शन गुण,

३ वेदनीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अव्याबाध सुख गुण.

४ मोहनीय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल क्षायिक सम्यक्त्व अने अनन्त चारित्रगुण,

५ आयुष्य कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अक्षय स्थिति (फरी पाछुं आववुं न होवाथी) गुण

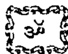
६ नाम कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अवगाहना सहित अमूर्त्त गुण,

७ गोत्र कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अवगाहना सहित अगुरुलघु गुण.

८ अन्तराय कर्मना क्षयथी प्रकट थयेल अनन्त अकरण [आत्मिक] वीर्य प्रभृति गुण

आ आठ गुणोथी विभूषित श्री सिद्धभगवानने नमस्कार थाओ





## आचार्यपदाराधन त्रोजा दिवसनुं कर्त्तव्य

### श्री आचार्यपद माहात्म्य तथा तेमना गुणोनो विचार.

पाच आचारना शुद्ध स्वरूपने आराधन करी बतावचा रूप उपकारथी ध्यान करवा योग्य श्री आचार्यभगवतना अनेक गुणो पैकी छत्रीश छत्रीशीओ मुख्य छे, सबोधप्रकरणमा श्री हरिभद्रसूरि भगवते तेथी पण वधारे छत्रीशीओ गणावी श्री आचार्यभगवतना गुणो गाया छे तेमनु ध्यान करवा मुख्य छत्रीशी (३६ गुणो) ए जाप करवामा आवे छे

॥श्री आचार्य पदना ३६ गुणो॥

पडिरूवाइ चउद्दस, खतिमाइय दसविहो धम्मो ।
वारस य भावणाओ, सूरिगुणा हुंति छत्तीस ॥१॥
पडिरूवादिक चोदगुण, क्षान्त्यादिक दश धर्म ।
भावना वार छत्रीश ए, सूरिगुणनु मर्म, ॥१॥

## श्री आचार्यपद नमस्कार पूर्वक तन्मयतासूचक खमासमणना दूहा ॥

छत्रीश छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुणींद ।
निजमत परमत जाणता, नमो तेह सूरींद ॥१॥
ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे ।
पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे ॥१॥
॥ वीर० ॥२॥

---

## प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करी खमा० देइ बोलवाना आचार्यपदना ३६ गुणगर्भित नमस्कार पदो

१ श्रीप्रातिरूपगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नमः
२ श्रीतेजास्वितागुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नमः
३ श्रीयुगप्रधानागमगुणविभूपिताय श्रीआचार्यायनमः
४ श्रीमधुरवाक्यगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नमः
५ श्रीगाम्भीर्यगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नमः
६ श्रीधैर्यसुबुद्धिगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नमः

७ श्री उपदेशतत्परतागुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
८ श्रीअपरिश्राविगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
९ श्रीसौम्यप्रकृतिगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
१० श्रीसग्रहशीलतागुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम.
११ श्रीअभिग्रहगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
१२ श्रीअविकत्थकगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
१३ श्रीअचपलतागुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम.
१४ श्रीप्रशान्तहृदयगुणविभूपिताय श्रीआचार्यायनम
१५ श्रीक्षमाधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
१६ श्रीमार्दवधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
१७ श्रीआर्जवधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम.
१८ श्रीमुक्तिधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम.
१९ श्रीतपोधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
२० श्रीसयमधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
२१ श्रीसत्यधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
२२ श्रीशौचधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम

२३ श्रीआकिंचन्यधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्यायनम·
२४ श्रीब्रह्मचर्यधर्मगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम
२५ श्रीअनित्यभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्री-आचार्याय नम
२६ श्रीअशरणभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआ-चार्याय नम
२७ श्रीससारभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआ-चार्याय नम
२८ श्रीएकत्वभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआ-चार्याय नम
२९ श्रीअन्यत्वभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्री-आचार्याय नम
३० श्रीअशुचित्वभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्री-आचार्याय नम
३१ श्रीआश्रवभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआ-चार्याय नम
३२ श्रीसवरभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआ-चार्याय नम

३३ श्रीनिर्जराभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम

३४ श्रीलोकस्वभावभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्री आचार्याय नम

३५ श्रीबोधिदुर्लभत्वभावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम

३६ श्रीधर्मकथकार्हन्त एव इति भावनाभावितत्वगुणविभूपिताय श्रीआचार्याय नम

—०—

## श्रीआचार्य भगवंतना ३६ गुणोनी हृदयमा भावना रहेवा नमस्कारपदोनो अर्थ

१ जेमना देखता पूर्वमहापुरुषो श्री गौतमस्वामी आदि स्मृतिमा आवे तेवा स्वरूपवन्त होय ते प्रतिरूप गुण

२ सूर्य समान तेजस्वी प्रतापवत०ते तेजस्विता गुण

३ युगप्रधान भगवत समान ज्ञानवंत० ते युगप्रधानागम गुण

४ अमृतसरखा मधुरवचनवान् ०ते मधुर वाक्य गुण
५ समुद्र सरखा गभीरता गुणवान्० ते गाम्भीर्य गुण.
६ उत्तमबुद्धिनिधान धैर्यतावान्० ते धैर्य सुबुद्धि गुण
७ उपदेश देवामा हमेशा परायण० ते उपदेश तत्परता गुण
८ जेमने निवेदन करेली गुह्य वात होठ बहार जाय नहि ते अपरिश्रावि गुण
९ चन्द्र समान सौम्य शीतल स्वभाववत० ते सौम्य-प्रकृति गुण
१० गच्छ हितने माटे जोइतो संग्रह करवाने स्वभाव-वत० ते संग्रहशीलता गुण
११ द्रव्य क्षेत्र काल भावथी विविध अभिग्रहधारी होय ते अभिग्रह गुण
१२ आत्मश्लाघा नहि करनार ते अविकत्थक गुण
१३ पर्वत सरखा चलायमान थाय नहि ते अचल स्थि-रता गुण

१४ वैराग्यरंजित हृदयवत होय ते प्रशात गुण
१५ क्षमाधर्मथी विभूपित० ते क्षमा गुण
१६ कोमळता धर्मथी विभूपित० ते मार्दव गुण
१७ सरळता धर्मथी विभूपित० ते आर्जव गुण
१८ वाह्याभ्यन्तर परिग्रहथी मुक्त मुक्तिधर्मथी विभूपित० ते मुक्ति गुण
१९ वाह्याभ्यंतर वारभेदे तपधर्मथी विभूपित० ते तपो गुण
२० सत्तरप्रकारे सयमधर्मथी विभूपित० ते सयम गुण.
२१ सत्यता धर्मथी विभूपित० ते सत्य गुण
२२ शुचिगुणपवित्रता सयममां निरतिचारपणारूप धर्मथी विभूपित० ते शौच गुण
२३ शरीर धर्मोपकरणादि विपे पण निर्ममत्व धर्मथी विभूपित० ते आकिंचन्य गुण
२४ नववाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य धर्मथी विभूपित० ते ब्रह्मचर्य गुण

२५ शरीरादि सर्व अनित्य छे ते अनित्यत्व भावनाभावितत्व गुण

२६ मात पिता विगेरे कोइनु पण शरण नथी ते अशरणत्वभावनाभावितत्व गुण

२७ चतुर्गति ससार केवल दु खनी खाण छे विगेरे ससारभावनाभावितत्व गुण

२८ जीव एकलो आव्यो छे एकलो जाय छे एकलो कर्म वाधे छे, भोगवे छे विगेरे एकत्वभावना० गुण.

२९ शरीरादि बाह्य वस्तुथी आत्मा भिन्न छे तेवी अन्यत्व भावना० गुण

३० मलमूत्रनी खाण शरीर अशुचिनो भडार छे तेवी अशुचित्व भावना० गुण

३१ मिथ्यात्व अविरति कषाय अने योग विगेरे कर्म आववाना मार्ग छे ते आश्रव भावना० गुण

३२ समिति गुप्ति आदि कर्म अटकाववाना मार्ग छे ते संवर भावना० गुण

३३ बाह्य अभ्यन्तर तप कर्म खपाववाना मार्ग छे ते निर्जरा भावना० गुण

३४ चौदराज लोकनु षड्द्रव्यादिनु स्वरूप चिन्तववा रूप लोकस्वभाव भावना० गुण

३५ सर्व वस्तु सुलभ छे पण केवली प्रणीत धर्मनी श्रद्धारूप बोधि दुर्लभ छे ते बोधि भावना० गुण०

३६ धर्मना कहेनार श्री तीर्थंकर प्रभुज छे ते धर्मकथक दुर्लभत्वभावना० गुण

आ ३६ गुणे विभूषित श्री आचार्य भगवतने म्हारो नमस्कार थाओ श्री आचार्य पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र "छत्तीसगुणविभूसिय सिरिआयरियपयाराहणत्थं काउस्सग्ग करेमि" (षट्त्रिंशद्गुणविभूषितश्रीआचार्यपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवु ३६ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो जापपद ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं" जपवु आ दिवसे श्री आचार्य पदमा जेम विशेष लीनता थाय तेम आचार्य गुणोनु [illegible]ण विशेष करवु

शेप तमाम विधि पूर्वनी माफक [ प्रथम दिवसनी जेम ] जाणवो, मात्र शासनस्तभ गच्छधोरी आचार्य भगवतनु ध्यान पीतवर्णे करवानु होवाथी चणानी दाळना द्रव्यनु आयबिल करवुं उचित छे





श्री उपाध्यायपदाराधन
चतुर्थ दिवसनुं कर्त्तव्य.

श्री उपाध्याय माहात्म्य तथा तेमना गुणोनो विचार.

शास्त्रप्रतिपादित यथार्थ विधिसहित सकल शास्त्राध्ययन पूर्वक शुद्ध चारित्राराधनमा लीन रही केवल उपकारक दृष्टिथी साधुसमुदायने अनेक प्रकारे सयम सेवनामा, मुक्तिमार्गमा साहाय्यता आपी पत्थर समान जडबुद्धि शिष्योने पण शास्त्रप्रवीण बनावे, उत्तम आचारमा सुविनीत नीपजावे,तेवा आचार्य पदनी योग्यतावान् सकल श्री सघना साहाय्यक श्री उपाध्याय भगवंतना अनेक गुणो पैकी अंगीयार अग

तथा चौद पूर्वना पाठकता रूप तेमना असाधारण पचीश गुणोनु ध्यान तथा जाप विगेरे करी आत्माने तन्मय बनाववा आ दिवसनी आराधना छे जो के श्री उपाध्यायजी भगवान्ना पचीश गुणोनी अनेक पचीशीओ शास्त्रमा वर्णवेली छे तो पण मुख्य उपरोक्त पचीशीनु अथवा अन्यत्र आराधनामा ११ अगीयार अंग १२ बार उपाग, १ चरणसित्तरी, १ करणसित्तरी [अथवा १ द्वादशागी सूत्रपाठकता अने १ द्वादशाग्यर्थपाठकता,) रूप पचीशीनी आराधना कराय छे

## श्री उपाध्याय पदना २५ गुणो

इक्कारस अगाइ, चउदस पुव्वाइ जो अहिज्जेइ ।
अज्झावेइ परेसिं, पणवीसगुणो उवज्झाओ ॥१॥
अग अग्यार भणे तथा, चउद पूर्व वळी जेह ।
परने भणावे प्रेमथी, उपाध्याय गुण एह ॥१॥

## श्रीउपाध्यायपद नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक खमासणना दूहा

बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत।
भणे भणावे सूत्रने, जयजय पाठक गीत ॥१॥
तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अगनो ध्यातारे।
उपाध्याय ते आतमा जगबधव जगभ्राता रे॥१॥वीर०

## ॥ श्री उपाध्याय भगवंतना २५ गुण गर्भित नमस्कार पदो.

१ श्रीआचारागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

२ श्रीसूत्रकृतागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

३ श्रीस्थानागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य. श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

४ श्रीसमवायागसूत्र पठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

५ श्रीभगवत्यगसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपिते-
भ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

६ श्रीज्ञाताधर्मकथागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणवि-
भूतेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

७ श्रीउपासकदशागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

८ श्री अन्तकृद्दशागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

९ श्रीअनुत्तरौपपातिकदशागसूत्रपठनपाठनतत्परता-
गुणविभूपितेभ्य श्री उपाध्यायेभ्यो नम

१० श्रीप्रश्नव्याकरणागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणवि-
भूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

११ श्रीविपाकागसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपिते-
भ्य श्री उपाध्यायेभ्यो नम

१२ श्रीउत्पादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपिते-
भ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

१३ श्रीअग्रायणीयपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

१४ श्रीवीर्यप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

१५ श्रीअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परता-
गुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम

१६ श्रीज्ञानप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
तेभ्य श्री उपाध्यायेभ्यो नम. ॥

१७ श्रीसत्यप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्री उपाध्यायेभ्यो नम ॥

१८ श्रीआत्मप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभू-
पितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

१९ श्रीकर्मप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपि-
तेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम. ॥

२० श्रीप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुण-
विभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

२१ श्रीविद्याप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

२२ श्रीकल्याणप्रवादपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

२३ श्रीप्राणावायपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्रीउपाध्यायेभ्यो नम ॥

२४ श्रीक्रियाविशालपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य उपाध्यायेभ्यो नम ॥

२५ श्रीलोकबिन्दुसारपूर्वसूत्रपठनपाठनतत्परतागुणविभूपितेभ्य श्री उपाध्यायेभ्यो नम ॥

---

॥ श्रीउपाध्याय भगवतना २५ गुणोनी हृदयमां भावना रहेवा नमस्कार पदोना अर्थ ॥

---

१ श्रीआचारांग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर,
२ श्री सुयगडाग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर,
३ श्रीठाणाग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर

४ श्री समवायाग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर
५ श्री भगवतीअग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर
६ श्रीज्ञाताधर्मकथाग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर
७ श्री उपाशकदशाग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर.
८ श्री अतगडदशांग सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर
९ श्री अणुत्तरोववाइय सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर
१० श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र भणवा भणाववामा तत्पर.
११ श्री विपाकअंग सूत्र भणवा भणाववामां तत्पर
१२ एक क्रोड पदप्रमाण द्रव्यना उत्पाद, व्यय अने ध्रौव्यपणानुं स्वरूप बतावनार पहेलु उत्पाद-पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.
१३ ९६ लाख पदप्रमाण, सर्व प्रकारना वीजनी कुल सख्या बतावनार बीजु अग्रायणीय पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर,
१४ ७० लाख पदप्रमाण, वीर्य जे बळ-प्रयत्न तेनो अर्थ वीर्यवन्तनुं स्वरूप कहेनार त्रीजुं वीर्यप्रवाद भणवा भणाववामा तत्पर

१५ ६० लाख पदप्रमाण कुल अस्तिनास्तिस्वभाव-
रूप सप्तभगीने स्याद्वादनु स्वरूप बतावनार चोथु
अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

१६ एक उणा क्रोड पद प्रमाण मति विगेरे पाचे ज्ञाननु
स्वरूप बतावनार पाचमु ज्ञान प्रवाद पूर्व भणवा
भणाववामा तत्पर.

१७ एक क्रोडने छ पद प्रमाण सत्यादि भाषानुं स्वरूप
अने भाष्यभाषक तेमज वाच्यवाचकनुं स्वरूप
कहेनार छट्ठु सत्यप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा
तत्पर.

१८ छवीशक्रोड पदप्रमाण आत्मद्रव्यनु कर्तृत्व,भोक्तृत्व
व्यापकत्व नित्य,अनित्यादि स्वरूप कहेनार सातमु
आत्मप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

१९ एक क्रोडने एशीलाख पद प्रमाण आठे कर्मोना
बध, उदय, उदीरणा विगेरेनु स्वरूप कहेनार आ-
ठमु कर्मप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामां तत्पर.

२० ८४ लाख पद प्रमाण सर्व प्रकारना पच्चक्खाणनुं

स्वरूप द्रव्य, भाव, निश्चय, व्यवहारथी उपादेय प्रमुख सर्व शैली बतावनार नवमु पच्चख्खाणप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

२१ एक क्रोडने दश लाख पद प्रमाण गुरु लघु अगुष्ट सेना प्रश्नादि सातसें विद्याआनु तेमज रोहिणी प्रमुख ५०० महाविद्याओनु स्वरूप बतावनार दशमु विद्याप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

२२ छवीश क्रोड पदप्रमाण, सर्व ज्योतिष् शास्त्रनुं स्वरूप, त्रेशठ शलाका पुरुषोनु स्वरूप, चार प्रकारना देवोनु स्वरूप अने पुण्यना फलनु स्वरूप बतावनार अग्यारमा कल्याणप्रवाद पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर,

२३ तेर क्रोड पदप्रमाण आयुर्वेदादि आठ प्रकारनी चिकित्सा, प्राण, अपान उदानादि वायुनु स्वरूप तथा पच महाभूतनु स्वरूप अने प्राणायामादि योगनुं स्वरूप बतावनार बारमा प्राणावायपूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

२४ नव क्रोड पद्प्रमाण छद् शास्त्र, शब्दशास्त्र, व्याकरण, सर्वशिल्प, सर्वजातनी कला. सर्व गुण ज तात्त्विक उपाधिरूप छे तेनुं स्वरूप बतावनार तेरमु क्रियाविशाल पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

२५ बार क्रोडने पचास लाख पद्प्रमाण, अथवा कर्मग्रथ अभिप्राये साडाबार लाख पद्प्रमाण [तत्त्व केवलिगम्य] छ आरा विगेरे काळनु स्वरूप व्यवहार विधि, सर्व वस्तुना परिकर्म अने निःशेष श्रुतसपदाथी भरपूर चौदमु 'लोकविन्दुसार' पूर्व भणवा भणाववामा तत्पर

आ अगीयार अग तथा चौद पूर्व भणवा भणाववामा तत्परता रूप २५ गुणोथी विभूषित श्री उपाध्याय भगवतने म्हारो नमस्कार थाओ

श्री उपाध्याय पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र "पणवीसइगुणविभूसियसिरि उवज्झायपयाराहणत्थं काउस्सग्ग करेमि" (पञ्चविंशतिगुणविभूषित श्री उपाध्यायपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं.

२५ लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जापपद् ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं " जपवुं आ दिवसे श्री उपाध्याय पदमा जेम विशेष लीनता थाय तेम श्री उपाध्यायना गुणोनुं ध्यान स्मरण विशेष करवु.

शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो मात्र भव्य जीवोना महान् उपकारक श्री उपाध्यायजी भगवाननु नीलवर्णे ध्यान करवानुं होवाथी मगनी दाळना द्रव्यनु आयबिल करवु उचित छे,





## श्री साधुपदाराधन पंचम दिवसनुं कर्त्तव्य

### श्री साधुपद माहात्म्य तथा तेमना गुणोनो विचार ॥

---

आत्माने तत्त्वज्ञानथी वासित करी, सांसारिक सुखोनी असारता जाणी, जन्म मरणना अनन्त दुःखोना बन्धनथी त्रास पामी, संसारभ्रमण टाळवा तथा शाश्वत सुखोमां उत्तरोत्तर स्थिर थवा आत्मशक्ति प्रकाश करनार, सांसारिक बन्धनो तोडी अनन्तभवे दुर्लभ, शाश्वत आनन्दमय मुक्तिपदप्रापक, उज्वल रत्नत्रयीनुं आराधन करवा तेना पालक सद्गुरु चरणनुं अवलंबन लइ अप्रमत्तपणे केवल आत्मामां ज लक्ष्य राखी आवता कर्मने रोकनार, शुद्ध संयमनुं प्रतिपालन करनार अने आत्मार्थी जनोने जिनशासन रूप प्रासादमां प्रवेश करवाने द्वारसमान, प्रवेश करेलाओने यथाशक्ति सत्य मार्ग बतावी साहाय्य आपनार, भव्य

जीवोना महान् उपकार करनार, रमणीय गुणोना भंडार साधु भगवंतोना अनेक गुणो पैकी २७ गुणोनु ध्यान तथा जापादि करी आत्माने तद्रूप बनाववा आ दिवसनी आराधना छे जो के साधु भगवंतोना गुणोनी सत्तावीशीओ अनेक प्रकारे शास्त्रोमां वर्णवी छे छता मुख्यताए आ आगळ बतावेल २७ गुणोए ध्यान तथा जाप कराय छे

॥ श्री साधुपदना २७ गुणो ॥

छव्वय ६ छकायरक्खा १२, पंचिंदिय १७ लोहनिग्गहो १८ खंती १९ ॥
भावविसुद्धी २० पडिले-हणाइकरणे विसुद्धी २१य ॥१॥
संजमजोगे जुत्तो २२, अकुसलमणवयणकायसरोहो २५।
सीयाइपीडसहण २६, मरणलुवसग्गसहणं २७ च ॥२॥
सत्तावीस गुणेहि, अन्नेहिं जो विभूसिओ साहू ।
जिणपासायपवेसे, दुयारसमो रम्मगुणनिवहो ॥ ३ ॥
व्रत छ काय रक्षण तथा, इन्द्रिय लोभनिरोध ।
क्षमाभाव शुद्धि वळी, पडिलेहणादि विशोध ॥१॥

संयमयोगे युक्तता, अशुभ मन वच काया शान्त ।
शीतादि परीषह तथा, मरणोपसर्ग सहत ॥ २ ॥
इम सगवीस गुणावलि, मौक्तिकमाल धरंत ।
मुक्तिमार्गसाधक मुनि, रमणीय गुण सोहंत ॥ ३ ॥

---

श्रीसाधुपदना नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक
॥ खमासमणना दुहाओ ॥

---

स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समतासंग ॥
साधे शुद्धानन्दता, नमो साधु शुभरंग ॥ १ ॥
अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवी हरखे नवि शोचेरे ।
साधुसुधा ते आतमा, शु मुंडे शु लोचेरे ॥वीर०॥

॥ श्रीसाधुपदना २७ गुणगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ सर्वतः प्राणातिपातविरमणव्रतगुणाविभूषितेभ्य श्रीसाधुभ्यो नमः

२ सर्वतो मृषावादविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्य श्रीसाधुभ्यो नमः

३ सर्वतोऽदत्तादानविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्य' श्री-
साधुभ्यो नम

४ सर्वतो मैथुनविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्य श्री-
साधुभ्यो नम

५ सर्वत परिग्रहविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्य श्री-
साधुभ्यो नम

६ सर्वतो रात्रिभोजनविरमणव्रतगुणविभूषितेभ्य श्री-
साधुभ्यो नम

७ सर्वत पृथ्वीकायरक्षणगुणविभूषितेभ्य श्रीसाधु-
भ्यो नम

८ सर्वतोऽप्कायरक्षणगुणविभूषितेभ्य श्रीसाधुभ्यो
नम

९ सर्वत तेजस्कायरक्षणगुणविभूषितेभ्य श्रीसाधु-
भ्यो नम

१० सर्वतो वायुकायरक्षणगुणविभूषितेभ्य श्रीसाधु-
भ्यो नम

११ सर्वतो वनस्पतिकायरक्षणगुणविभूषितेभ्य. श्री-
साधुभ्यो नम

१२ सर्वतो द्वीन्द्रियादित्रसकायरक्षणगुणविभूपितेभ्यः श्रीसाधुभ्यो नम·

१३ सर्वत स्पर्शनेन्द्रियविपयनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम

१४ सर्नतो रसनेन्द्रियविपयनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम

१५ सर्वतो घ्राणेन्द्रियविपयनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम

१६ सर्वतश्चक्षुरिन्द्रियविपयनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

१७ सर्वत श्रोत्रेन्द्रियविपयनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

१८ सर्वतो लोभनिग्रहगुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

१९ सर्नत क्षमागुणविभूपितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

२० सर्वतो भावविशुद्धिगुणविभूपितेभ्य साधुभ्यो नम ॥

२१ सर्वत प्रतिलेखनादिक्रियाविशुद्धिगुणविभूपितेभ्य. श्री साधुभ्यो नम ॥

२२ सर्वत सयमयोगयुक्ततागुणविभूषितेभ्य श्री साधु-भ्यो नम ॥

२३ सर्वतोऽकुशलमनोयोगनिरोधगुणविभूषितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

२४ सर्वतोऽकुशलवचनयोगनिरोधगुणविभूषितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

२५ सर्वतोऽकुशलकाययोगनिरोधगुणविभूषितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

२६ सर्वत शीतादिपरिषहसहनशीलतागुणविभूषितेभ्य श्री साधुभ्यो नम ॥

२७ सर्वतो मारणान्तिकोपसर्गसहिष्णुतागुणविभूषिते-भ्य श्रीसाधुभ्यो नम ॥

---

## साधुना सत्तावीस गुणोनी हृदयमा भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ ॥

---

१ सर्वथा जीवहिंसाथी विरमवा रूप पहेलु महाव्रत

२ सर्वथा असत्य वचनथी विरमवारूप बीजु

३ सर्वथा नही दीधेलु लेवाथी विरमवारूप त्रीजुं महाव्रत
४ सर्वथा मैथुन सेवनाथी विरमवारूप चोथु महाव्रत.
५ सर्वथा परिग्रहमूर्छाथी विरमवारूप पाचमु महाव्रत.
६ सर्वथा रात्रिभोजनथी विरमवारूप छट्ठ महाव्रत
७ सर्वथा पृथ्वीकायजीवोना रक्षणरूप साधुधर्म
८ सर्वथा अप्काय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म
९ सर्वथा तेउकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म
१० सर्वथा वायुकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म
११ सर्वथा वनस्पतिकाय जीवोना रक्षणरूप साधुधर्म
१२सर्वथा बेइंद्रियादित्रसकायजीवोना रक्षणरूप साधुधर्म.
१३ सर्वथा स्पर्शेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म
१४ सर्वथा रसनेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म
१५ सर्वथा घ्राणेन्द्रियनो विषय निग्रह करवारूप साधुधर्म
१६ सर्वथा चक्षुरिन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म
१७ सर्वथा श्रोत्रेन्द्रियनो विषयनिग्रह करवारूप साधुधर्म
१८ सर्वथा लोभकषायने निग्रह करवारूप साधुधर्म
१९ सर्वथा क्रोधने उपशम करवारूप क्षमा धर्मरूप साधुधर्म

२० सर्वथा भावविशुद्धिरूप साधुधर्म

२१ सर्वथा पडिलेहणादिक क्रियामा शुद्धि राखवा स्वरूप साधुधर्म

२२ सर्वथा सयम व्यापारमा उपयोग राखवा स्वरूप साधुधर्म

२३ सर्वथा अशुभमनोयोगने रूधवा स्वरूप साधुधर्म.

२४ सर्वथा अशुभ वचनयोगने रूधवा स्वरूप साधुधर्म

२५ सर्वथा अशुभ काययोगने रूधवा स्वरूप साधुधर्म

२६ सर्वथा शीतादिपरिषहोने सहनशीलता स्वरूप साधुधर्म

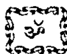
२७ सर्वथा मारणान्तिक उपसर्गोने पण सहन करवा स्वरूप साधुधर्म

आ २७ गुणोथी विभूपित श्री साधु भगवन्तोने म्हारो नमस्कार थाओ श्रीसाधु पदाराधननो [illegible] पूर्वनी माफक जाणवो मात्र "सगवीसइगुणविभूसियाणं [illegible] पयाराहणत्थ काउस्सग्ग करेमि " ([illegible] गुणविभूषित श्रीसाधुपदाराधनार्थ) आ [illegible] बोलवुं [illegible] स्सनो काउस्सग्ग करवो, जाप पद "ओं ह्रीं

सवसाहूणं जपवु, आ दिवसे श्रीसाधुपद स्वरूपमां आत्मानी विशेष लीनता थाय तेम साधु भगवतना गुणोनु ध्यान स्मरण करवु

शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र मुक्तिमार्गना साधनभूत श्री साधुभगवंतोनुं श्यामवर्णे ध्यान करवानु होवाथी अडदनी दाळना द्रव्यनुं आयंबिल करवु उचित छे





## श्री सम्यग्‌दर्शनपदाराधन छट्ठा दिवसनुं कर्त्तव्य.

### श्री सम्यग्दर्शन माहात्म्य तथा गुणविचार

श्री सर्वज्ञ भगवते प्रतिपादन करेला जीव, अजीव, पुण्य पाप, आश्रव, सवर, वध, निर्जरा, मोक्ष ए नवे तत्त्वो, षद्‌द्रव्यो, चार निक्षेपा, सप्तनय प्रमाण सप्तभंगी, द्रव्य क्षेत्र काल भाव आदि तमाम पदार्थोनी श्रद्धामय अनन्तानुवन्धी ४ तथा मिथ्यात्वमोहनीयादि क्षय क्षयोपशम उपशमथीज प्रगट थयेल निर्मल आत्मपरिणाम स्वरूप, ज्ञान चारित्रादि सकल आत्मगुणोनो पायो श्री सम्यग्दर्शन रूप आत्मधर्म अनेक स्वरूपो पैकी ६७ स्वरूपोए जीवोना सात्विक आनन्द रूप उपकार गुणे ध्यान–जाप करवा योग्य छे एक बाजु लौकिक लोकोत्तर सर्वधर्मो एकत्रित करो अने एक बाजु एकलुं सम्यग्दर्शन मुको पण सम्यग्दर्शन-

नी तुलनामा कोइ आवी शके तेम नथी, आवा अनेक परमगुणमय सम्यग्दर्शनना प्रतापेज देवनु देवत्व अने गुरुनु गुरुत्व, पूजा, वन्दन, भक्ति, वहुमानादिने योग्य छे ते ध्यान करवा योग्य सम्यक्त्वनुं ६७ भेद स्वरूप आ छे श्रीतीर्थंकर प्रतिपादित आराधित श्री सम्यग्दर्शनादि चारे गुणोनु उज्वल श्वेतवर्णे ध्यान करवानु होवाथी उज्वल चोखाना द्रव्यनुं आयंबिल करवु उचित छे

## श्री सम्यग्दर्शनना ६७ भेद स्वरूप

चउसद्दहण ४ तिलिग ७, दसविणय १९ तिसुद्धि २० पंचगयदोस । २५ अट्ठपभावणं ३३ भूसण -३८ लक्खण ४३ पचविहसजुत्त ॥१॥

छव्विहजयणा ४९गार५५ छब्भावणभाविय ६१ च छट्ठाणं ६७॥ इयसत्तसट्ठि लक्खण भेयविसुद्ध च सम्मत्तं ॥२॥

चउसद्दहणा ४ तिलिग ७ छे, दशविध विनय १७ विचारोरे ॥

त्रणशुद्धि २० पण दूषण २५ आठ प्रभावक धारोरे
३३ ॥ १ ॥

प्रभावक अडपंच भूषण ३८ पंचलक्षण ४३ जाणीये,
षट् जयणा ४९ षट् आगार ५५ भावना छव्विहा ६१
मन आणीये ॥

षट्ठाण समकित तणा, सडसठ, भेद एह उदार ए, ।
एहनो तत्व विचार करता लहीजे भवपार ए ॥२॥



-श्रीसम्यग्दर्शनना नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक
खमासमणना दूहाओ

---

लोकालोकना भाव जे, केवलिभाषित जेह ।
सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ॥१॥
शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे ।
दर्शन तेहीज आतमा, शुं होय नाम धरावेरे ॥१॥
वीर जिनें०

## ॥ दर्शनपद ६७ भेदगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ परमार्थसंस्तवश्रद्धानस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः
२ परमार्थज्ञातृसेवनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
४ कुदर्शनवर्जनस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
५ शुश्रूषालिङ्गस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
६ धर्मरागलिंगस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
७ वैयावृत्त्यलिंगस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
८ अर्हद्विनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
९ सिद्धविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
१० चैत्यविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
११ श्रुतविनय स्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
१२ क्षमादिधर्मविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
१३ साधुवर्गविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
१४ आचार्यविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम
१५ उपाध्यायविनयस्वरूपश्रीसम्यग्दर्शनाय नम

१६ प्रवचनरूपसघविनयस्व० श्री सम्यग्दर्शनाय नम

१७ दर्शनविनयस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम.

१८ मन शुद्धि स्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

१९ वचनशुद्धिस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२० कायशुद्धिस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२१ शकादूपणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय-नम.

२२ कांक्षादूपणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

२३ विचिकिंत्सादूपणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२४ मिथ्यादृष्टिप्रशसादूपणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२५ मिथ्यादृष्टिससर्गदूपणत्यागस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२६ प्रवचनप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२७ धर्मकथिकप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२८ वादिप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

२९ नैमित्तिकप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नमः

३० तपस्विप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम

३१ विद्याभृत्प्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३२ सिद्धप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३३ कविप्रभावकस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३४ जिनशासनक्रियाकौशलभूपणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३५ प्रभावनाभूपणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३६ तीर्थसेवाभूपणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३७ स्थैर्यभूपणस्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३८जिनशासनभक्तिभूपणस्वरूप श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
३९ उपशमलक्षणस्वरूपश्रीसम्यगूदर्शनाय नम
४० सवेगलक्षणस्वरूपश्रीसम्यगूदर्शनाय नम
४१ निर्वेदलक्षणस्व० श्रीसम्यगूदर्शनाय नम
४२ अनुकम्पालक्षणस्व० श्रीसम्यगूदर्शनाय नम.
४३ आस्तिक्यलक्षणस्व० श्रीसम्यगूदर्शनाय नम
४४ परतीर्थिकदेवपरतीर्थिकगृहीतजिनप्रतिमावन्दनत्यागरूपयतनास्वरूपश्रीसम्यगूदर्शनाय नम.

४५ परतीर्थिकदेवपरतीर्थिकग्रहीतजिनप्रतिमानमन-
त्याग० यतनास्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय नम.
४६ मिथ्यादृष्टिसहालापवर्जन०यतनास्व०श्रीसम्यग्द-
र्शनाय नम
४७ मिथ्यादृष्टि सहसलापवर्जन०यतनास्व०श्रीसम्यग्-
दर्शनाय नम
४८ मिथ्यादृष्टिअन्नपानदानवर्जन०यतनास्व० श्रीस-
म्यग्दर्शनाय नम
४९ मिथ्यादृष्टिवारंवारान्नपानदानवर्जन०यतनास्व०
श्रीसम्यग्दर्शनाय नम
५० राजाभियोगाकारयुक्तास्व० श्रीसम्यग्दर्शनाय०
५१ गणाभियोगाकार ,, , श्रीसम्यग्दर्शनाय०
५२ बलाभियोगाकार ,, ,, श्रीसम्यग्दर्शनाय०
५३ देवाभियोगाकार ,, ,, श्रीसम्यग्दर्शनाय०
५४ गुरुनिग्रहाकारयुक्तस्व० श्री ,, ,,
५५ श्रीवृत्तिकान्ताराकारयुक्तास्वरूप श्रीसम्य०
५६ श्रीधर्मवृक्षमूलमिति भावनास्व० श्रीसम्य०

५७ श्रीधर्मपुरद्वारमिति भावनास्व० श्रीसम्य० „
५८ श्रीधर्मप्रासादप्रतिष्ठानमिति भावनास्वरूपश्रीसम्य०
५९ श्रीधर्माधार इति भावनास्व० श्रीसम्यग्० ,
६० श्रीधर्मभाजनमिति भावनास्व० श्रीसम्यग्० „
६१ श्रीधर्मनिधानमिति भावनास्व० श्रीसम्यग्० „
६२ श्रीअस्ति जीव इति श्रद्धास्थानस्वरूपश्रीसम्यग्०
६३ श्रीनित्यानित्यो जीव इति श्रद्धास्थानस्वरूप श्री .
६४ श्रीकर्मण कर्ता जीव इति श्रद्धास्थानस्व० श्री „
६५ श्रीकर्मणो भोक्ता जीव इति श्रद्धास्थानस्व० श्री ,
६६ श्रीजीवस्य मोक्षोऽस्तीति श्रद्धास्थानस्व० श्रीसम्यग्
६७ श्रीमोक्षोपायोऽस्तीति श्रद्धास्थानस्व० श्रीसम्यग्०

## सम्यग्दर्शनना ६७ भेदोनी हृदयमां भावना राखवा माटे नमस्कार पदोनो अर्थविचार

१ प्रवचनप्रतिपादित जीवादिक नवतत्त्वोनी अर्थ-विचारणा करी श्रद्धा राखवी ते परमार्थसंस्तव

२ परमार्थना जाणनार मुनिओनी आराधना करवी ते परमार्थज्ञातृसेवन

३ समकितथी भ्रष्ट थयेला निन्हवो पाखण्डी कुलिंगीया, वेपविडवको तेओथी अलग रहेवुं ते व्यापन्नदर्शनवर्जन

४ मिथ्यात्ववासित जीवोना संसर्गनो त्याग करवो ते कुदर्शनवर्जन

५ धर्मश्रवण करवानी तीव्र अभिलाषा ते सुश्रूषा

६ धर्मउपर गाढरुचि ते धर्मराग

७ देवगुर्वादिकनु अप्रमत्तपणे [illegible] करवुं ते वैयावृत्य

८ अरिहंत परमात्मानी [illegible] ते विनय ते अर्हद्विनय

९ कर्मरहित सिद्धभगवंतनी भक्ति आदि विनय ते सिद्धविनय

१० जिनेश्वर देवनी [illegible] प्राव- आदि विनय ते [illegible]

११ आचाराग विगेरे अग उपाग विगेरे सिद्धान्तोने भक्ति आदि विनय ते श्रुतविनय.

१२ क्षमा आदिक दशधर्म प्रत्ये वहुमानादिक भक्ति आदि विनय ते क्षमादिधर्मविनय

१३ क्षमादि धर्मना पालणहार साधु भगवंतोनो विनय ते साधुविनय

१४ पाच आचारना पालक आचार्य भगवतोनो भक्ति आदि विनय ते आचार्यविनय

१५ सूत्र सिद्धान्तना भणावनार उपाध्याय भगवंतोनो भक्ति आदि विनय ते उपाध्यायविनय,

१६ तीर्थंकर देवोए स्थापन करला चतुर्विध सघनो भक्ति आदि विनय ते प्रवचनविनय,

१७ क्षायिकादि सम्यक्त्वना भेदोनो भक्ति आदि विनय ते दर्शनविनय,

१८ श्री जिनेश्वर तथा जिनेश्वरप्रतिपादित तत्त्वो ते शिवाय तमाम जुठु छे एवी जे दृढ अत करणनी विचारणा ते मन शुद्धि,

१९ जिनेश्वरनी भक्तिथी जे सिद्ध न थाय ते बीजाथी होइ शकेज नही एवी जे दृढता ते वचनशुद्धि,

२० छेदन भेदनादि अनेक प्रकारे सहन करता पण जिनेश्वर शिवाय बीजा देवने नमे नही ते कायशुद्धि,

२१ जिनेश्वरदेवना वचनमा सर्वथी के देशथी शका न करवी ते शकादूपणत्याग,

२२ अन्यमतनी सर्वथी के देशथी अभिलापा न करवी ते काक्षादूपणत्याग,

२३ धर्मना फळना सदेहादि न करवां तथा साधुना मळादिकनी जुगुप्सा न करवी ते विचिकित्सादूपणत्याग,

२४ मिथ्यादृष्टिना मिथ्यात्वबृद्धिकारक गुणोनी स्तवना न करवी ते मिथ्यादृष्टिप्रशसादूपणत्याग

२५ मिथ्यादृष्टि जीवोनी सगति न करवी ते मिथ्यादृष्टिससर्गदूपणत्याग,

२६ वर्त्तमानश्रुतना सूत्र अर्थना पारगामी ते प्रावचनिकप्रभावक,

२७ उपदेशादिकथी अनेक जीवोने रंजित करी प्रतिबोध करे ते धर्मकथिकप्रभावक,
२८ निपुणतर्कशास्त्रना जाणकार राजमंदिरमा पण जीतने मेळवनार ते वादिप्रभावक,
२९ परमतने जीतवा माटे अविरुद्धपणे निमित्तादिकने कहेनारा ते नैमित्तिकप्रभावक,
३० निर्निदानपणे शुद्धज्ञानपूर्वक तीव्र तपस्याने करनारा तपस्वीप्रभावक,
३१ विद्यामन्त्रादिके करीने वज्रस्वामि भगवाननी पेठे शासनोन्नति करनार ते विद्याभृत्प्रभावक,
३२ अंजनचूर्णादिकना योगथी कालिकाचार्य भगवंतनी माफक शासन उन्नति करनारा ते सिद्धप्रभावक,
३३ मधुर अर्थथी भरपूर अलंकारयुक्त धर्महेतुथी उत्तम काव्यो बनावी सिद्धसेनदिवाकरजीनी पेठे राजाने प्रतिबोध करनारने कविप्रभावक,
३४ प्रवचनप्रतिपादित क्रिया अनुष्ठानने विषे दक्षपणु ते जिनशासनक्रियाकौशलभूषण,

३५ जेम जिनशासननी घणा जीवो अनुमोदना करे तेवा उत्तम प्रभावनाना कृत्यो करवा ते प्रभावना भूषण,

३६ ससार समुद्रथी तारनार स्थावर अने जंगम तीर्थोनी आराधना करवी ते तीर्थसेवाभूषण

३७ सम्यक्त्वधर्मथी कोइनाथी पण चलायमान थाय नही ते स्थैर्यभूषण,

३८ देवगुर्वादिकनी भक्ति करवी ते जिनशासनभक्तिभूषण

३९ अपराधी जीवो उपर पण कोइजातनु प्रतिकूल चितववु नही ते उपशमलक्षण,

४० देव मनुष्यना सुखोने पण दु खरूपे मानी केवल मुक्ति सुखनी अभिलापा करवी ते सवेगलक्षण,

४१ केदीने केदमाथी, नारकीने नरकमाथी जेम नीकळवानी इच्छा, तेम ससारथी नीकळवानी इछा, ते निर्वेदलक्षण,

४२ दु खी जीवो प्रत्ये द्रव्यथी अने धर्महीन प्रत्ये

५९ शम दम विगेरे धर्मना गुणोनो आधार सम्यग्दर्शन छे तेवु जे भाववु ते धर्माधारभावना

६० शान्ति सवरादि स्वरूप अमृतरसने जीलवाने भाजन सरखु सम्यग्दर्शन छे तेवु जे मानवु ते धर्मभाजनभावना

६१ श्रुतज्ञान, शील विगेरे रत्नोनो भडार सम्यग्दर्शन छे एवु जे चिन्तववु ते धर्मनिधानभावना

६२ चैतन्यलक्षणथी जीवनामनो पदार्थ छे एवी जे श्रद्धा ते पहेलु स्थान

६३ पर्याये करीने जीव अनित्य छता स्वस्वरूपे नित्य छे तेवी जे नित्यानित्यत्वविचारणा ते बीजुस्थानक

६४ कर्मनो कर्त्ता चेतन छे तेवु भाववु ते त्रीजुस्थानक.

६५ कर्मना फलनो भोक्ता पण पोतेज छे तेवु जे भाववुं ते चोथु स्थानक,

६६ सकल कर्मनो क्षय थवाथी जीवनो मोक्ष थाय छे तेवु जे भाववु ते पाचमु स्थानक.

६७ सम्यग्ज्ञानक्रियास्वरूप मुक्ति पामवाना उपायो छे

तेवु जे चिन्तववुं ते छट्ठुं स्थानक,

उपर कहेली ४ सद्दहणा ३ लिंग, १० विनय,३ शुद्धि, ५ दूषणत्याग, ८ प्रभावक, ५ भूषण, ५ लक्षण, ६ यतना ६ आगार, ६ भावना, ६ स्थान ए प्रमाणेना ६७ भेदे विभूषित श्रीसम्यग्दर्शनपदने मारो नमस्कार थाओ सम्यग्दर्शनपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र सगसट्ठिगुणविभूसियसिरिदंसणपयाराहणत्थ काउसग्ग करेमि (सतषष्टिगुणविभूषितश्रीदर्शनपदाराधनार्थं) आ प्रमाणे बोलवुं ६७लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जाप पद ॐ ह्रीं नमो दसणस्स जपवु, आ दिवसे श्रीसम्यग्दर्शन स्वरूपमा जेम विशेष लीनता थाय तेम सम्यग्दर्शनना स्वरूपनुं ध्यान स्मरण विशेष करवु

बाकीनो तमाम विधि पूर्वनी माफक, मात्र सम्यगदर्शन पदनु शुक्लवर्णे ध्यान करवानु होवाथी चोखाना द्रव्यनु आयंबिल करवु उचित छे



## श्री ज्ञानपदाराधन सप्तम दिवसनो विधि

### श्रीज्ञानपदमाहात्म्य तथा तेना भेद विचार

जीवनु शुद्ध चेतन्य स्वरूप, जड चेतननो विभाग, गुणदोप, भक्ष्याभक्ष्य, पेयापेय, हिताहित, कर्त्तव्याकर्त्तव्य हेयोपादेय प्रमुख विवेकने जणावनार निविड कर्मोनी निर्जरानु परम साधन, मोह हाथीना मदने उतारवामा केसरी सिह समान, श्रीसम्यग्दर्शननी निर्मलता तथा वृद्धिनु कारण, इन्द्रियादि आश्रवस्थानोने कावुमा राखी कर्मवन्धने अटकावनार, राग द्वेपनी मन्दता करी शान्तिपदनु परमस्थान देनार, जड वस्तुथी आत्मानो भेद समजवानु मुख्य लिङ्ग, आत्माना मुख्य गुणरूप ज्ञानपदनु आराधन करवा जो के अन्यत्र मुख्यभेदनी अपेक्षाये पाच

भेदोथी आराधन करवानु जणावाय छे. तोपण आ स्थळे तेना ५१ भेदोथी ध्यान, नमस्कार विगेरे कराय छे

## श्री ज्ञानपदना ५१ भेद स्वरूप

अष्टाविंशति भेदाढ्या, मति पूर्वमित श्रुतम् ॥१॥
षोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मन पर्यवमीरितम् ॥ १ ॥
एक केवलमाख्यात-मेकपञ्चाशादित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता भव्याम्भोजविकासका' ॥ २ ॥
मति अठावीस भेद छे, श्रुतना चौद प्रकार । -
षड्विध ओही वर्णव्यो, मन पर्यव दुगधार ॥ १
केवल एक वखाणीये, इम एकावन मान ।
ज्ञानभेद जिनवर कह्या, वहु धरी वहुमान ॥ २

श्री ज्ञानपद नमस्कारपूर्वक तत्मरनासूचक खमासमणना दुहाओ

अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रम भीति ।
सत्यधर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति

ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे।
तो हूए एहीज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे।
वीर० ॥

## श्री ज्ञानपदना ५१ भेद गर्भित नमस्कार पदो

१ स्पर्शनेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्वरूप श्रीमतिज्ञानाय नम
२ रसनेंद्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नम
३ घ्राणेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नम
४ श्रोत्रेन्द्रियव्यञ्जनावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नम.
५ स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रहस्व०श्रीमतिज्ञानाय नम.
६ रसनेन्द्रियार्थावग्रहस्वरूपश्रीमतिज्ञानाय नम
७ घ्राणेन्द्रियार्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नम.
८ चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह० ,, मतिज्ञानाय नम
९ श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
१० मनोऽर्थावग्रहस्व० ,, मतिज्ञानाय नमः
११ स्पर्शनेन्द्रियेहास्व० ,, मतिज्ञानाय नम.
१२ रसनेन्द्रियेहास्व० ,, मतिज्ञानाय नम

१३ घ्राणेन्द्रियेहास्वरूप श्रीमतिज्ञानाय नम·
१४ चक्षुरिन्द्रियेहा स्व० „ मतिज्ञानाय नमः
१५ श्रोत्रेन्द्रियेहास्व० „ मतिज्ञानाय नम.
१६ मनईहास्व० श्री मतिज्ञानाय नमः
१७ स्पर्शनेन्द्रियापायस्व० श्रीमतिज्ञानाय नमः
१८ रसनेन्द्रियापायस्वरूप० „ मतिज्ञानाय नम.
१९ घ्राणेन्द्रियापायस्व० „ मतिज्ञानाय नम·
२० चक्षुरिन्द्रियापायस्व० „ मतिज्ञानाय नम
२१ श्रोत्रेन्द्रियापायस्व० „ मतिज्ञानाय नमः
२२ मनोऽपायस्व० „ मतिज्ञानाय नम·
२३ स्पर्शनेन्द्रियधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नम·
२४ रसनेन्द्रियधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नम
२५ घ्राणेन्द्रियधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नम
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नम.
२७ श्रोत्रेन्द्रियधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नमः
२८ मनोधारणास्व० „ मतिज्ञानाय नम.
२९ अक्षरस्व० श्री श्रुतज्ञानाय नम

३० अनक्षरस्वरूप श्री श्रुतज्ञानाय नम॰
३१ संज्ञिश्रुतज्ञानाय नम॰
३२ असंज्ञि श्रुतज्ञानाय नम
३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नम
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नम
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नम
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नम
३८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नम
३९ गमिकश्रुतज्ञानाय नम
४० अगमिकश्रुतज्ञानाय नम
४१ अगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम
४२ अनगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नम
४३ आनुगामिकाऽवधिज्ञानाय नम
४४ अनानुगामिकाऽवधिज्ञानाय नम
४५ वर्धमानावधिज्ञानाय नम
४६ हीयमानावधिज्ञानाय नम

४७ प्रतिपात्यवधिज्ञानाय नम

४८ अप्रतिपात्यवधिज्ञानाय नम

४९ ऋजुमतिमन.पर्यवज्ञानाय नम'

५० विपुलमतिमन पर्यवज्ञानाय नम

५१ लोकालोकप्रकाशनश्रीकेवलज्ञानाय नम'

---

## ज्ञानपदना ५१ भेदोनी हृदयमां भावना राखवा नमस्कारपदोनो अर्थविचार

२८ मतिज्ञानना भेदो—

४ चक्षु अने मन ए बे वस्तुनी साथे सबध पाम्या शिवाय ज्ञान करनार बाकीनी चार स्पर्शेन्द्रिय, रसना (जीभ ) घ्राण (नाक) श्रोत्र (कान) ए चार इन्द्रियोथी थता चार व्यजनावग्रह (अव्यक्तज्ञान)

६ पाच इन्द्रिय अने मनथी थता छ अर्थावग्रह (काइक छे तेवु ज्ञान, )

६ पाच इन्द्रिय अने मनथी थती छ ईहा ( घणु करी आम होवु जोइए, )

६ पाच इन्द्रिय अने मनथी थता छ अपाय [ अमुक ज छे तेवो निश्चय]
६ पाच इन्द्रिय अने मनथी थतीं छ धारणा [ घणा काळ सुधी ते ज्ञानने धारण करी राखवु ]
ए अठावीश मति ज्ञान

२४ श्रुत ज्ञानना भेदो —

१ सज्ञा (लीपी) व्यजन ( उच्चार ) स्वरूप अक्षरथी थतु अने लब्धि (उपयोग) अक्षर स्वरूप जे श्रुतज्ञान ते "अक्षरश्रुत"
२ खोखारा, छींक, ऊधरस विगेरे अव्यक्त ध्वनिथी थतु श्रुत ते अनक्षरश्रुत
३ दीर्घकालिकी सज्ञावाळा मनसहित जीवने थतु श्रुत ते सज्ञिश्रुत,
४ मनरहित असज्ञिजीवोने थतु श्रुत ते असज्ञिश्रुत.
५ सम्यगदृष्टि जीवोनु ज्ञान ते 'सम्यक्श्रुत'

६ मिथ्यात्विओनु ज्ञान ते 'मिथ्याश्रुत'

७ भरत ऐरवतनी अपेक्षाये तीर्थप्रवृत्तिनी शरुआतथी प्रवर्त्युं ते 'सादिश्रुत'

८ महाविदेहनी अपेक्षाये अनादिकालथी चाल्यु आवतु ते 'अनादिश्रुत'

९ भरत ऐरवतनी अपेक्षाये तीर्थव्यवच्छेद थता ते 'सपर्यवसितश्रुत'

१० महाविदेहनी अपेक्षाये तीर्थनो व्यवच्छेद न होवाथी ते 'अपर्यवसितश्रुत'

(आ सादि अनादि विगेरे चारे पदोनो द्रव्यादि अपेक्षाये पण विचार समजवो )

११ सरखा पाठ आलवावालु सूत्र होय ते दृष्टिवाद विगेरे 'गमिकश्रुत'

१२ सरखा पाठ आलावा रहित सूत्र होय ते आचारांगादि 'अगमिक श्रुत'

१३ बार अंगस्वरूप सूत्र होय ते 'अंगप्रविष्टश्रुत'

१४ अंगथी बहारनु आवश्यक उपांगादि स्वरूप ते 'अनंगप्रविष्ट'

६ अवधिज्ञान —

१ चक्षुनी जेम अवधिज्ञानीनी साथे जनार ते आनु-गामिक अवधि '

२ साकळे बांधेल फाणसनी जेम साथे न आवनार अर्थात् जे क्षेत्रे उत्पन्न थयु तेथी बीजा क्षेत्रमा न आवे ते ' अनानुगामिक अवधि '

३ क्रमे क्रमे वधतु वधतु केवलज्ञानदशाए आत्माने लइ जाय ते ' वर्धमान अवधि '

४ क्रमेक्रमे घटतु घटतु नाश पामी जाय ते ' ही-यमान अवधि

५ एकदम पडी जाय अगाशीथी भूसकानी जेम, ते ' प्रतिपाति अवधि '

६ आव्यु पाछु जाय नहि ते ' अप्रतिपाति अवधि '

२ मन पर्यवज्ञान —

१ अढीद्वीपना सञ्ज्ञिजीवना मनोगत भावने सामान्य-स्वरूपे जाणनारने 'ऋजुमति मन पर्यव'

२ विशेषे करी स्वच्छ अने विस्तीर्ण पर्यायो जणावनार ने ' विपुलमति मन पर्यव '

१ केवलज्ञान—

१ लोकालोकना त्रिकालवर्ति रूपि अरूपि आदि समग्रद्रव्य,क्षेत्र,काल,भावने प्रकाश करनार 'केवलज्ञान '

५१ भेदोए विभूपित श्री ज्ञानपदने म्हारो नमस्कार थाओ, श्री ज्ञानपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र एगावन्नभेयविभूसियसिरिनाणपयाराहणत्थ काउसग्गं करेमि (एकपञ्चाशद्भेदविभूपितश्रीज्ञानपदाराधनार्थ ) आ प्रमाणे ५१ लोगस्सनो काउसग्ग करवो, जापपद ॐ ह्रीँ "नमो नाणस्स" जपवुं, आ दिवसे ज्ञानस्वरूपमा जेम विशेष लीनता थाय तेम ज्ञान स्वरूपनु ध्यानस्मरण विशेष करवु शेष तमाम विधि पूर्वनी माफक, मात्र ज्ञानपदनुं ध्यान शुक्लवर्णे करवानु होवाथी चोखाना द्रव्यनुं आंबिल करवु.



## श्री चारित्रपदाराधन अष्टमदिवसनो विधि ॥

### श्री चारित्रमाहात्म्य तथा तेना गुण विचार

प्रवाहथी चाल्या आवता आठे कर्मोना निवीड वन्धनथी आत्माने छूटो पाडी शुद्ध स्फटिकरत्न तुल्य निर्मल कषायरहित शुद्ध आत्मस्वरूपने पमाडनार, परमानन्दमय आत्मसाम्राज्यनुं परम साधन, इन्द्रादि देवो पण जे स्वरूप माटे मनुष्य भवनी जखणा करे छे, जेना सुखने चक्रवर्ति पण पहोंचवा समर्थ नथी जेना प्रभावथी ज मनुष्यगतिनी दुर्लभता–उत्तमता वर्णवी छे, जेमा चार कषायोनो अभाव छे, आरंभ परिग्रहनो त्याग छे, अशुभ क्रियाओथी निवृत्ति अने शुभ क्रियाओमा प्रवृत्ति होय छे आवता

कर्मोने अटकाववा ( नवो कर्मबंध न थवा देवो ) ते तेनु वास्तविक फल छे, केमके सर्व संवरचारित्र ( शैलेशीकरण ) ना प्रतापे ज जीव मुक्तिपद पामे छे, आवा अनेक स्वरूपथी ध्यान करवा योग्य चारित्रपदना मूल गुणरूप तथा सदा आराध्य चरणसित्तरी भेदोए ध्यान कराय छे

---

## श्री चारित्रपदना ७० भेद ।

वय ५ समणधम्म १५ संजम ३२ वेयावच्च ४२ च बंभगुत्तीओ ५१ ॥
नाणाइतिय ५४ तव ६६ कोह-निग्गहाइ ७० चरणमेय ॥ १ ॥

व्रत पांच ने दश श्रमणधर्म ज, संयम सत्तर जाणीये
दश भेद वेयावच्च नवविध, बंभ गुत्ती वखाणीये ॥२॥
ज्ञानादि त्रण तप बार भेदे, कषाय चार निरोधीये
आराधीने इम चरणसित्तरी, निजचरण संशोधीये ॥३॥

## श्री चारित्रपद नमस्कारपूर्वक तन्मयतासूचक खमासमणना दूहाओ

रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फल करी सदीव ।
भावरयणनु निधान छे, नमो नमो सयम जीव ॥
॥ वीर० ॥ १ ॥
जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमा रमतोरे ।
लेश्या शुद्ध अलकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥
वीर० ॥ २ ॥

## ॥ चारित्रपदना ७० भेदगर्भित नमस्कार पदो ॥

१ सर्वत प्राणातिपातविरमणव्रतस्वरूप श्रीचारित्राय नमः
२ सर्वत मृपावादविरमणव्रतस्व० „चारित्राय नमः
३ सर्वतोऽदत्तादानविरमणव्रतस्व० „चारित्राय नम-
४ सर्वतो मैथुनविरमणव्रतस्व० „चारित्राय नमः
५ सर्वत परिग्रहविरमणव्रतस्व० „चारित्राय नमः

| | | |
|---|---|---|
| ६ | सत्यक्क्षमाधर्मस्वरूप | श्रीचारित्राय नम॰ |
| ७ | ,, मार्दवधर्मस्व० | ,,चारित्राय नमः |
| ८ | ,,आर्जवधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम |
| ९ | ,, मुक्तिधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम॰ |
| १० | ,, तपोधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम॰ |
| ११ | ,, सयमधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम |
| १२ | ,, सत्यधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम |
| १३ | , शौचधर्मस्व० | ,,चारित्राय नमः |
| १४ | ,,आकिंचन्यधर्मस्व० | श्रीचारित्राय नमः |
| १५ | ,, ब्रह्मचर्यधर्मस्व० | ,,चारित्राय नम |
| १६ | पृथ्वीकायजीवरक्षासयमस्व० | श्रीचारित्राय नम. |
| १७ | अप्कायजीवरक्षासयमस्व० | ,,चारित्राय नम. |
| १८ | तेजस्कायजीवरक्षासयमस्व० | ,, ,, ,, |
| १९ | वायुकायजीवरक्षासयमस्व० | श्रीचारित्राय ,, |
| २० | वनस्पतिजीवरक्षासयमस्व० | ,, ,, |
| २१ | द्वीन्द्रियजीवरक्षासयमस्व० | ,, ,, |
| २२ | त्रीन्द्रिय[illegible]क्षासयमस्व० | ,, |

२३ चतुरिन्द्रियजीवरक्षासंयमस्वरूप    ,,    ,,
२४ पञ्चेन्द्रियजीवरक्षासंयमस्व०    ,,    ,,
२५ अजीवसंयमस्व०    श्रीचारित्राय नम
२६ प्रेक्षासंयमस्व०    श्रीचारित्राय नम.
२७ उपेक्षासंयमस्व०    ,,चारित्राय नम
२८ प्रमार्जन संयमस्वरूप    ,,चारित्राय नम
२९ परिष्ठापन संयमस्व०    ,,चारित्राय नम
३० मन संयमस्व०    ,,चारित्राय नम
३१ वचनसंयमस्व०    ,,चारित्राय नम
३२ कायसंयमस्व०    ,,चारित्राय नम.
३३ आचार्यवैयावृत्त्यस्व०    ,,चारित्राय नम
३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यस्व०    श्रीचारित्राय नम
३५ तपस्विवैयावृत्त्यस्व०    ,,चारित्राय नम
३६ लघुशिष्यवैयावृत्त्यस्व०    श्रीचारित्राय नम.
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नम
३८ स्थविरवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नम
३९ समनोज्ञसामाचारीकारकवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नम

४० श्रमणसंघवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४१ चन्द्रादिकुलवैयावृत्त्यस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४२ कौटिकादिगणवैयावृत्त्यस्वरूप श्रीचारित्राय नमः

४३ स्त्रीपशुपंडकरहितवसतिवासशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्री चारित्राय नमः

४४ स्त्रीसहसरागवार्तालापवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्री चारित्राय नमः

४५ स्त्रीआसनवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४६ स्त्रीसरागांगोपांगनिरीक्षणवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूप श्रीचारित्राय नमः

४७ कुडयान्तरितस्त्रीपुरुषक्रीडास्थानवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४८ पूर्वभुक्तस्त्रीसंगक्रीडाविलासस्मरणवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

४९ सरसाहारवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नमः

५० अतिमात्राहारवर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूपश्रीचारित्राय नम

५१ विभूपादिशरीरशोभावर्जनशुद्धब्रह्मगुप्तिस्वरूप श्रीचारित्राय नम

५२ श्रीसम्यग्ज्ञानस्वरूप " नम

५३ श्रीसम्यग्दर्शनस्व० " नम

५४ श्रीसम्यक्चारित्रस्व० " नम

५५ श्रीअनशनतप स्व० " नम

५६ औनोदर्यतप स्वरूप " नम

५७ वृत्तिसक्षेपतप स्व० " नम

५८ रसत्यागतप " " नम

५९ लोचादिकायक्लेशसहनतप स्वरूप श्रीचारित्राय नम

६० सलीनतातप स्वरूपश्रीचारित्राय नम

६१ प्रायश्चित्तग्रहणरूपाभ्यन्तरतप स्वरूपश्रीचारित्राय नम

६२ विनयकरणाभ्यन्तरतप स्वरूपश्रीचारित्राय नम.

६३ वैयावृत्यकरणरूपाभ्यन्तरतप स्वरूपश्रीचारित्राय नमः
६४ स्वाध्यायकरणरूपाभ्यन्तरतप स्व० „ नमः
६५ शुभध्यानकरणरूपाभ्यन्तरतप स्व० „ नमः
६६ उत्सर्गकरणाभ्यन्तरतप स्व० „ नम
६७ क्रोधनिग्रहस्वरूप , नम
६८ माननिग्रहस्वरूप „ नम
६९ मायानिग्रहस्वरूप „ नमः
७० लोभनिग्रहस्वरूप „ नम

॥चारित्रपदना ७० भेदोनी (गुणोनी) हृदयमां भावना रहेवा माटे नमस्कार पदोना अर्थ॥

१ सर्वथा प्राणातिपात (जीवहिंसा) विरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र
२ सर्वथा मृषावाद (जुठु बोलवाना) विरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र
३ सर्वथा अदत्तादान [ नही दीधेल वस्तुग्रहण ] विरमण (त्यागरूप) महाव्रतस्वरूप चारि

४ सर्वथा मैथुन (कामविकार) निरमण (त्याग) रूप महाव्रतस्वरूप चारित्र

५ सर्वथा परिग्रह [धन धान्यादि सवध तथा मूर्छा] विरमण [त्यागरूप] महाव्रतस्वरूप चारित्र,

६ सम्यकप्रकारे क्षमा ( क्रोध न करवारूप ) धर्मस्वरूप चारित्र,

७ सम्यकप्रकारे मृदुता [ कोमलता मानना अभावरूप ] धर्मस्वरूप चारित्र,

८ सम्यकप्रकारे ऋजुता (सरलता मायाना अभावरूप) धर्मस्वरूप चारित्र

९ सम्यकप्रकारे मुक्ति (लोभना अभावरूप) धर्मस्वरूप चारित्र,

१० सम्यकप्रकारे बाह्य अभ्यन्तर बार भेदे तप धर्मस्वरूप चारित्र,

११ सम्यकप्रकारे सत्तरप्रकारना सयम धर्मस्वरूप चारित्र

१२ सम्यकप्रकारे सत्य बोलवारूप धर्मस्वरूप चारित्र,

१३ सम्यक्प्रकारे शौच (सयमप्रत्ये निरतिचारपणे व-र्त्तवारूप) धर्मस्वरूप चारित्र

१४ सम्यक्प्रकारे आकिंचन्य [निर्ममत्वभाव]धर्मस्वरूप चारित्र,

१५ सम्यक्प्रकारे ब्रह्मचर्य धर्मस्वरूप चारित्र,

१६ सम्यक्प्रकारे पृथ्वीकायजीवोना रक्षणरूप सयम-स्वरूप चारित्र,

१७ सम्यिकप्रकारे अपुकायजीवोना रक्षणरूप सयम स्वरूप चारित्र

१८ सम्यक्प्रकारे तेउकायजीवोना रक्षणरूप सयम स्वरूप चारित्र

१९ सम्यक्प्रकारे वायुकायजीवोना रक्षणरूप सयम स्वरूप चारित्र

२० सम्यक्प्रकारे वनस्पतिकायजीवोना रक्षणरूप सयम स्वरूप चारित्र

२१ सम्यक्प्रकारे बेइन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूपचारित्र,

२२ सम्यक्प्रकारे तेइन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र

२३ सम्यक्प्रकारे चउरिन्द्रियजीवोना रक्षणरूप संयम स्वरूप चारित्र

२४ सम्यक्प्रकारे पचेन्द्रियजीवोना रक्षणरूप सयम स्वरूप चारित्र.

२५ सम्यक्प्रकारे अजीवपदार्थो [ पुस्तकादि ] यतना पूर्वक धारण करवारूप सयम स्वरूप चारित्र

२६ सम्यक्प्रकारे पडिलेहण करी सम्यग् बेसवा उठवा विगेरे क्रिया स्वरूप अथवा सयममा सीदता साधु-ओने सयममा जोडवारूप सयम स्वरूप चारित्र

२७ सम्यक्प्रकारे चक्षुए सम्यग् जोवारूप सयम स्वरूप चारित्र

२८ सम्यक्प्रकारे पापव्यापार करता गृहस्थादि प्रत्ये अथवा पासत्या विगेरे प्रत्ये उदासीनभावे सम्यग्वर्त्तवारूप सयमस्वरूप चारित्र

२९ सम्यक्प्रकारे जोया छता पण रजोहरणादिके

पुजवा विगेरे यतना क्रियामा वर्त्तवारूप सयम स्वरूप चारित्र,

३० सम्यक्प्रकारे परठववा विगेरेमां वर्त्तवारूप सयम स्वरूप चारित्र,

३१ सम्यक्प्रकारे अशुभ संकल्प वर्जवा, संयम स्वरूप चारित्र

३२ सम्यक्प्रकारे अशुभवचन वर्जवा शुभ वचन प्रवर्त्तांववा रुप वचनव्यापार संयम स्वरूपचारित्र

३३ ,, प्रकारे आचार्यवैयावच्चस्वरूप चारित्र

३४ ,, प्रकारे उपाध्यायवैयावच्च स्वरूप चारित्र

३५ ,, प्रकारे तपस्विवैयावच्चस्वरूप चारित्र

३६ ,, लघुशिष्य [ नवदीक्षित ] वैयावच्चस्वरूप चारित्र

३७ ,, ग्लानसाधुवेयावच्चस्वरूप चारित्र

३८ ,, प्रकारे स्थविरमुनि वैयावच्चस्वरूप चारित्र

३९ ,, प्रकारे उत्तम सामाचारीवाळा मुनिवैयावच्चस्वरूपचारित्र

४० ,, प्रकारे चतुर्विध सर्ववैयावच्च स्वरूप चारित्र
४१ सम्यक्प्रकारे चान्द्रादिकुल ( अनेकगच्छोनो समूह ते कूल ) वैयावच्चस्व० चारित्र
४२ ,, कौटिकादिगण ( अनेक कूलोनो समूह ते ,, गण ) वैयावच्चस्व०
४३ ,, स्त्रीपशु नपुसकरहित वसतिमां रहेवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति [वाड] स्व० चारित्र
४४ ,, स्त्रीओनी साथे रागवाली कथा [ आलाप सलाप] वर्जवाथी शुद्धब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र
४५ ,, स्त्रीओना आसन उपर नहि वेसवाथी [पुरुपना आसन उपर स्त्रीए, पुरूप उठी गयाँ पछी पण त्रण पहोर सुधी वेसवु नहि, अने स्त्रीना आसन उपर, स्त्री उठी गया पछी पण वे घडी सुधी वेसवु नही] शुद्धब्रह्मचर्यनीगुप्ति स्व० चारित्र,
४६ ,, रागसहित स्त्रीओना अगोपाग नहि जोवा-

थी शुद्धब्रह्मचर्यनी गुप्तिस्वरूप चारित्र

४७ ,, भींतने आतरे रहेला स्त्री पुरुषोनी क्रीडाना शब्दो साभळवा विगेरे त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र

४८ ,, पूर्वे भोगवेला स्त्रीसबध क्रीडा विगेरे नहि संभारवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व०चारित्र

४९ सम्यक्प्रकारे सरस मिष्टान्न आहारनो त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्वरूप चारित्र,

५० सम्यक्प्रकारे कठपूर घणा प्रमाणथी आहारादि नहि खावाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति स्व० चारित्र,

५१ सम्यक्प्रकारे शणगार सजवो विगेरे शरीर शोभा त्याग करवाथी शुद्ध ब्रह्मचर्यनी गुप्तिस्व० चारित्र.

५२ सम्यक्प्रकारे सम्यग् ज्ञानपरिणति स्व० चारित्र

५३ सम्यक्प्रकारे सम्यग्दर्शनपरिणति स्व० चारित्र

५४ सम्यक्प्रकारे सम्यक् चारित्र परिणति स्व० चारित्र

५५ सम्यक्प्रकारे अनशन (चारे आहारना त्याग रूप) बाह्यतप स्व० चारित्र,

५६ सम्यक्प्रकारे उणोदरी ( उणु रहेवारूप ) वाह्यतप
स्वरूप चारित्र

५७ ,, द्रव्यादिवृत्तिना सकोचरूप वाह्यतप
स्वरूप चारित्र

५८ ,, दूध दही घी विगेरे रसत्यागरूप वा
ह्यतपस्वरूप चारित्र

५९ ,, लोंच, आतापना विगेरे कायक्लेशरूप
वाह्यतपस्वरूप चारित्र

६० ,, इन्द्रिय कपाययोगने कावुमा राखवा
रूप वाह्यतपस्वरूप चारित्र

६१ सम्यक्प्रकारे प्रायश्चित्त लेवा (रूप) अभ्यन्तर तप
स्वरूप श्री चारित्र,

६२ ,, विनय करवा रूप अभ्यन्तरतपस्वरूप चारि

६३ ,, प्रकारे वेयावच्च करवा रूप अभ्यन्तरतप
स्वरूप चारित्र

६४ , सज्झाय करवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरू
चारित्र

६५ ,, प्रकारे शुभध्यान आदरवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरूप चारित्र
६६ ,, शरीर कषाय विगेरे त्यागकरवा रूप अभ्यन्तर तप स्वरूप चारित्र
६७ ,, क्रोधने कावुमा राखवा स्वरूप चारित्र
६८ ,, प्रकारे मानने कावुमा राखवा स्वरूप चारित्र
६९ ,, प्रकारे मायाने कावुमा राखवा स्वरूप चारित्र
७० ,, लोभने कावुमा राखवा स्वरूप चारित्र

आ सीत्तेर गुण करी विभूषित श्री चारित्रपदने मारो नमस्कार थाओ, श्री चारित्रपदाराधननो काउसग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र सत्तरीगुणविभूसियसिरिचारित्रपयाराहणत्थं काउस्सग्गं करेमि ( सप्ततिगुणविभूषितश्रीचारित्रपदाराधनार्थं ) आ प्रमाणे बोलवु, सीत्तेर लोगस्सनो काउसग्ग करवो, जाप पद "ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स" जपवुं आ दि-

इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगेरे ।
तप ते एहीज आतमा, वर्त्ते निजगुण भोगेरे॥वीर०॥

प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करवा पूर्वक खमा० दइ श्री तपपदना ५० भेदगर्भित नमस्कार पदो.

१ श्री यावत्कथिकानशनस्वरूपतपसे नम
२ ,, ईत्वरिकानशनस्वरूपतपसे नम
३ ,, वाह्योनौदर्यस्वरूपतपसे नम
४ ,, आभ्यतरौनौदर्यस्वरूपतपसे नम
५ ,, द्रव्यतो वृत्तिसक्षेपस्वरूपतपसे नम
६ ,, क्षेत्रतो वृत्तिसक्षेपस्वरूपतपसे नम
७ ,, कालतो वृत्तिसक्षेपस्वरूपतपसे नम
८ ,, भावतो वृत्तिसक्षेपस्वरूपतपसे नम
९ ,, लोचादि कायक्लेश(रसत्याग)स्वरूपतपसे नम.
१० ,, रसत्यागस्वरूपतपसे नम
११ ,, इंद्रियकपाययोगसलीनतास्वरूपतपसे नम.

१२ ,, स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितवसत्यवस्थानस्वरूपतपसे नम

| | |
|---|---|
| १३ आलोचनाप्रायश्चित्त | स्वरूपश्रीतपसे नम |
| १४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| १५ मिश्रप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| १६ विवेकप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| १७ उत्सर्गप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| १८ तप प्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| १९ छेदप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| २० मूलप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| २१ अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| २२ पाराचिकप्रायश्चित्त | ,, श्रीतपसे नम |
| २३ ज्ञानविनय | स्वरूपश्रीतपसे नम |
| २४ दर्शनविनय | ,, श्रीतपसे नम |
| २५ चारित्रविनय | ,, ,, तपसे नम |
| २६ शुभमन प्रवृत्तिविनय | ,, ,, तपसे नम |
| २७ शुभवचनप्रवृत्तिविनय | ,, ,, तपसे नम |

२८ शुभकायप्रवृत्तिविनय स्वरूपश्रीतपसे नम
२९ औपचारिकविनय ,, ,, तपसे नम.
३० आचार्यवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम
३१ उपाध्यायवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम
३२ स्थविरसाधुवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम·
३३ तपस्विसाधुवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम
३४ लघुशिष्यादिवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम·
३५ ग्लानसाधुवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम.
३६ समनोज्ञसामाचारीकारकवैयावृत्य ,, ,, तपसे नमः
३७ श्रमणसघवैयावृत्य स्वरूपश्रीतपसे नम·
३८ चान्द्रादिकुलवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम
३९ कौटिकादिगणवैयावृत्य ,, ,, तपसे नम
४० वाचनास्वाध्याय ,, ,, तपसे नमः
४१ पृच्छनास्वाध्याय ,, ,, तपसे नमः
४२ परावर्त्तनास्वाध्याय ,, ,, तपसे नम
४३ अनुप्रेक्षास्वाध्याय ,, ,, तपसे नम
४४ धर्मकथास्वाध्याय ,, ,, तपसे नम·

४५ आर्त्तध्याननिवृत्तिध्यानस्वरूपश्रीतपसे नम
४६ रौद्रध्याननिवृत्तिध्यान „ „ तपसे नम
४७ धर्मध्यानप्रवृत्तिध्यान „ „ तपसे नम
४८ शुक्लध्यानप्रवृत्तिध्यान „ „ तपसे नम.
४९ बाह्योत्सर्ग „ „ तपसे नम
५० आभ्यन्तरोत्सर्ग „ „ तपसे नम

---

## तपपदना पचास भेदोनी हृदयमा भावना राखवा नमस्कार पदोना अर्थ

---

१ जावज्जीवनु अनशन ( चार आहारना त्याग ) स्वरूप बाह्यतप

२ अमुक मुदतनुं ( नवकारशीथी माडी उत्कृष्ट ऋषभदेवप्रभुना कालमा वर्षप्रमाणनु, बावीश तीर्थकर प्रभुना कालमा आठमहिना सुधीनु, अने महावीर प्रभुना शासनमा उत्कृष्ट छ महिना सुधीनु अनशन ( चारे आहारना त्याग ) स्वरूप बाह्यतप.

३ बाह्य ऊनोदरी ( एक दाणाथी माडी बनी शके त्यासुधीनु ) बाह्यतप

४ आभ्यन्तर ऊनोदरी ( लोलुपता मटाडवा स्वरूप ऊणोदरी ) बाह्यतप

५ द्रव्यथी वृत्तिसक्षेप ( वस्त्र विगेरे निर्वाहना द्रव्योनो सकोच ) रूप बाह्यतप

६ क्षेत्रथी वृत्तिसक्षेप ( चेष्टा फरवा हरवाना क्षेत्रनो सकोच ) रूप बाह्यतप

७ कालथी वृत्तिसक्षेप ( अमुककालने माटेनो सकोच) रूप बाह्यतप

८ भावथी वृत्तिसक्षेप ( महावीर प्रभुना अभिग्रहनी जेम भावथी सकोच ) रूप बाह्यतप

९ लोच विगेरे कायकष्ट रूप बाह्यतप

१० रसत्याग ( दुध दहीं, घी, गोळ विगेरे विकृतिनो त्याग करवो ) रूप बाह्यतप

११ पाचइन्द्रिय, चारकषाय, त्रणयोगनी सलीनता (इद्रियकषाययोगनी अशुभप्रवृत्तिनो सकोच ) रूप बाह्यतप

१२ स्त्री पशु नपुंसकादिरहित वसतिमां रहेवा रूप संलीनता स्वरूप बाह्यतप

१३ आलोयणप्रायश्चित्त ( गुर्वादि समक्ष करेला पापनु आलोववु ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त ( ईर्यावहि पडिक्कमवी मिच्छामि दुक्कडं देवाथी पापनु प्रतिक्रमण ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१५ उभयप्रायश्चित्त ( आलोयण तथा प्रतिक्रमण बे करवा ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१६ विवेकप्रायश्चित (अकल्प्य अन्नपानादि परठववा ते) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१७ कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त ( काउस्सगमा रही अमुक लोगस्स विगेरे गणवा ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१८ तप करवारूप प्रायश्चित्त ( नीवी पुरिमढ आदि तप करवो ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

१९ छेद करवारूप प्रायश्चित्त (अमुक दीक्षापर्याय घटाडवो ) स्वरूप अभ्यन्तरतप,

२० मूलनामना प्रायिश्चित्त ( फरीथी व्रतारोपण करवा स्वरूप अभ्यन्तरतप,

२१ अनवस्थाप्यप्रायश्चित्त ( अमुक तप विगेरे दंड कराव्या शिवाय पुन व्रतारोपण) स्वरूपअभ्यन्तरतप,

२२ पाराचिक प्रायश्चित (महान् शासनप्रभावना कर्या शिवाय महाव्रत उच्चरावी गच्छमा लेवाय नहि) स्वरूप अभ्यन्तर तप

२३ ज्ञानविनय ( ज्ञाननु बहुमान भक्ति कालविनयादि आचार साचववो ) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

२४ दर्शनविनय ( सम्यक्त्वना लक्षणो तथा आचारो साचववा ) स्व० अभ्यन्तर तप,

२५ चारित्रविनय ( चारित्रनी श्रद्धा आराधना आचारो साचववा) स्व० अभ्यन्तर तप

२६ मनोविनय ( रत्नत्रयवान् जीवो उपर बहुमानादि शुभमन राखवुं, ) स्व० अभ्यन्तर तप,

२७ वचनविनय ( रत्नत्रयवान् जीवोनी वचनथी स्तुति आदि करवा ) स्व० अभ्यन्तर तप,

२८ कायविनय ( रत्नत्रयवान् जीवोनी प्रत्ये शुभकायिकभक्ति आदि करवा ) स्व० अभ्यन्तर तप,

२९ उपचारविनय ( रत्नत्रयवान् जीवोनी भक्ति बहुमानादि करवा ) स्व० अभ्यन्तर तप,

३० आचार्यवैयावच्च ( आचार्यभगवतनी भक्ति बहुमान, गुणस्तुति, आशातनापरिहार, अवर्णवाद्गोपनरूप अभ्यन्तर तथा वस्त्र, अन्न, पान, औषधादि बाह्यभक्ति आदि करवा,) स्वरूप अभ्यन्तर तप,

३१ उपाध्यायवैयावच्च ( उपाध्याय भगवंतनी भक्ति बहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप

३२ स्थविरसाधुवैयावच्च ( २० वर्षनी दीक्षापर्यायवाळा व्रतस्थविर १, समवायांगादि श्रुतना जाणकार श्रुतस्थविर २, ६० वा ७० वर्षनी उमरवाळा वयस्थविर, ३, ते सर्वनी भक्ति बहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप

३३ तपस्विवैयावच्च (उग्रतपस्यावाळा महापुरुषोनी

वाह्य भक्ति आदि करवा ) स्व० अभ्यन्तरतप

३४ लघुशिष्यादिवैयावच्च ( नवदीक्षित साधु आचार-मा स्थिर थाय ते माटे भक्ति वहुमान० स्व० अभ्यन्तर तप

३५ ग्लानमुनिवैयावच्च ( रोगादिथी शिथील शरीरवाळानी भक्ति वहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप

३६ समनोज्ञसामाचारीवाळानु वैयावच्च ( उत्तम सामाचारी पाळनार महापुरुषोनी भक्ति वहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप,

३७ श्रमणसघवैयावच्च ( साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विधसघनी भक्ति वहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप,

३८ चान्द्रादिकुलनी वैयावच्च (एकाचार्य समुदाय कुल कहेवाय, तेनी भक्ति वहुमान० ) स्व० अभ्यन्तर तप,

३९ कोटिकादिगणनी वैयावच्च (त्रण आचार्यना कुलनो समुदाय गण तेनी भक्ति वहुमान०) स्व० अभ्यन्तर तप,

४० वाचनास्वाध्याय ( योग्य जीवने सूत्र अर्थनो पाठ भणाववो तथा पोते भणवो) स्व० अभ्यन्तर तप,

४१ पृच्छनास्वाध्याय ( प्रश्नो पुछी सदेहादि टाळवा) स्व० अभ्यन्तर तप,

४२ परिवर्त्तनास्वाध्याय ( प्रथमनुं भणेलुं सभारवु ) स्व० अभ्यन्तर तप,

४३ अनुप्रेक्षास्वाध्याय ( भणेला सूत्रार्थनो विचार करवो ) स्व० अभ्यन्तर तप,

४४ धर्मकथास्वाध्याय ( धर्मदेशना उपदेशादि आपवा ) स्व० अभ्यन्तर तप,

४५ आर्त्तध्याननिवृत्ति, (इष्ट वस्तुना वियोगथी थती चिन्ता, शोक, विलाप विगेरे थाय ते इष्टवियोगार्त्तध्यान १, अनिष्ट सयोगथी थता चिन्ता विगेरे अनिष्टसयोगार्त्त २, रोगादि थवाथी थता चिन्ता विगेरे रोगचिन्तार्त्त ३, भविष्य सुखनी चिन्तादि अग्रशोच्यार्त्त ४ ए चारनो त्य [illegible]प अभ्यन्तर तप

४६ रौद्रध्याननिवृत्ति (द्वेषथी प्राणीने वाधवा मारवा विगेरे चिन्ता ते हिंसानुवंधिरौद्रध्यान १,छल प्रपच करवाना विचार असत्यने सत्य स्थापवानी चिन्ता ते मृषानुवन्धि २, क्रोधादि कषायथी परनुं द्रव्य हरवानी चिन्ता ते स्तेयानुवधि ३, विषय साधन धनादि रक्षण करवानी चिन्ता ते सरक्षणानुवंधि ४, ए चारे रौद्रध्याननो त्याग करवा स्व० अभ्यन्तर तप,

४७ धर्मध्यानप्रवृत्ति श्री ( जिनेश्वरवचन सत्य छे ते विचारवु ते आज्ञाविचय १, रागद्वेषादि दु खरूप विचारवुं ते अपायविचय २, सुखदु ख पूर्वकृत कर्म नु फल छे ते चिन्तववुं, ते विपाकविचय ३, लोकाकृति द्रव्यादिनु चिन्तववु ते सस्थानविचय४,आचारे धर्मध्यानमा प्रवृत्ति राखवी स्व० अभ्यन्तर तप

४८ शुक्लध्यानप्रवृत्ति (पृथक्त्ववितर्कसविचार १, एकत्ववितर्कअविचार २, सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति ३, व्युपरतक्रिया अनिवृत्ति ४, ए चारे केवलज्ञान तथा

मुक्तिना साधनध्याननमां प्रवृत्ति राखवा स्व०अभ्यन्तर तप,

४९ बाह्य उत्सर्ग ( द्रव्य शरीर वस्त्रादिना त्याग ) स्वरूप अभ्यन्तर तप

५० अभ्यन्तर उत्सर्ग (मिथ्यात्व, कषाय,विगेरे कर्मबन्ध हेतुओना त्याग ) स्वरूप अभ्यन्तर तप

आ प्रमाणे बाह्य तपना बार, तथा अभ्यन्तर तपना अडत्रीश कुल पचास भेदथी विभूषित तपपदने म्हारो नमस्कार थाओ

श्री तप पदाराधननो काउस्सग्ग पूर्वनी माफक जाणवो, मात्र पचासगुणविभूसियसिरितवपयाराहणत्थ काउस्सग्ग करेमि [ पञ्चाशद्गुणविभूषितश्रीतप पदाराधनार्थं ] आ प्रमाणे बोलवुं, पचास लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, जापपद " ॐ ह्रीँ नमो तवस्स जपवुं ' आ दिवसे श्री तपपदमा जेम विशेष लीनता थाय तेम तपपदना गुणोनु ध्यान स्मरण विशेष करवु शेष तमाम विधि पूर्वमाफक जाणवी, मात्र

तपपदनु ध्यान उज्वल वर्णे करवानु होवाथी चोखा-ना द्रव्यनु आयविल करवुं

आ अन्तिम [छेल्लो] दिवस होवाथी तमाम विधि अप्रमत्तपणे करवी, विशेष पूजा करवी, यथाशक्ति आयविलमा पण द्रव्यादि अभिग्रहो राखवा, आज विशेष महोत्सव सहित सत्तर भेदी पूजा भणाववी विशेष आंगी पूजा, रात्रिजागरण, भावना, प्रभावना विगेरे करवी

" छेल्ले आंबिल मोटो तप कीजे, सत्तरभेदी जिनपूजा रचीजे, मानवभव लाहो लीजे "

---

## पारणाना दिवसनो विधि

दरेक विधिओमां, विद्यासाधनामा पूर्वसेवा उत्तरसेवाओ होय छे, तेम आ दिवसे परपराथी श्री सिद्धचक्र महाराजनु समुदित आराधन कराय छे

पडिलेहण, देववंदन सुधीनो विधि सपूर्ण पूर्वनी माफक करी —

---

## श्री सिद्धचक्र माहात्म्यगर्भित तेनो नमस्कार तथा तन्मयतासूचक खमासमणना दूहाओ

दशमा पूर्वथी उद्धर्यो, सिद्धचक्र शुभयत्र ।
एहनी तुलनामा नहि, मत्र तत्र कोइ यत्र ॥ १ ॥
परमतत्त्व जिनधर्ममां, शासननुं सर्वस्व ।
मुक्तिपददायक भविक, नमो नमो चित्त एकत्व ॥२॥
योग असरय छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणोरे ।
एह तणे अवलवने, आत्मध्यान प्रमाणो ॥३॥ रे वीर०॥

आप्रमाणे दूहाओ बोली प्रदक्षिणा दइ स्वस्तिक करी द्रव्यफल नैवेद्यादि मूकी एक एक खमासमण देवु

॥ नमस्कार पद ॥

"श्रीविमलेश्वर चक्रेश्वरीपूजिताय जिनशासन–परमतत्त्वाय श्री सिद्धचक्राय नमो नम ." एज प्रमाणे नव खमासमण देवा, पद तेनु तेज बोलवुं

ईर्यावही करी काउसग्ग श्री विमलेश्वरचक्रेश्वरी पूजितश्रीसिद्धचक्राराधनार्थ काउसग्ग करेमि, इच्छं, श्री वि० करेमि काउ० अन्नत्थ० नवलोगस्स० प्रकट लोगस्स खमा० अविधि आशातना मिच्छामि दु०

दर्शि केवलिभगवतोए आ (ज्ञानादि ४) मार्ग (मोक्षनो रस्तो) प्ररूप्यो छे ॥ १ ॥

नाण च दसण चेव, चरित्त च तवो तहा ॥
एय मग्गमणुप्पत्ता, जीवा गच्छंति सुग्गइ ॥२॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार स्वरूप मुक्तिमार्गने अनुसरेला जीवो सद्‌गति (मोक्ष गति) ने पामे छे (आ चार हेतुथी मुक्तिमार्ग प्रत्ये थती अनुकूलता)

नाणेण जाणई भावे, दसणेण य सद्दहे ॥
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ १ ॥

ज्ञानथी पदार्थोने जाणे छे, दर्शने करी पदार्थोनी श्रद्धा करे छे चारित्रे करी आश्रवस्थानो [कर्मबन्धन-कारणो ] ने रुधे छे, तपे करी प्राचीन कर्ममलनी (निर्जरा थवाथी) सर्वथा शुद्ध थाय छे ॥ १ ॥

इत्यादि अनेक वचनोथी तथा युक्तिविचारोथी चारेमा मुक्तिसाधनता सिद्ध थाय छे. तेमा सम्यग्-दर्शन विना च्हाय तेटलुं (नवपूर्व सुधीनु) ज्ञान पण अज्ञान रूप छे अखडधाराये पळातु चारित्र पण अ-

भव्यादिनी जेम मुक्तिनु कारण नथी तेम तप पण अज्ञान कष्टस्वरूप होवाथी सम्यग्दर्शन पद चारे पदोमां पहेलुं ग्रहण कर्युं छे सम्यग्दर्शनथी शुद्ध थयेला ज्ञानथी हेयोपादेय पदार्थो जाण्या शिवाय वैराग्यपरिणति थती नथी, अने ते विनानु चारित्र 'मार्जारविरतिकल्प' छे तप पण शुद्ध थतु नथी तेथी ज्ञानपद बीजु कह्युं छे गढनाळाथी आवतो कचरो रोकाया शिवाय तळावनी अदरनो कचरो साफ करी शकातो नथी तेम आश्रवस्थानो रूप कर्म आववाना साधनोथी आवतो कर्म कचरो रोकाया शिवाय आत्मशुद्धि (कर्मरहितपणु) थइ शकती नथी,जेथी आवता कर्म कचराने रूधवा समान चारित्र पद त्रीजु ग्रहण कर्युं, त्यार बाद वधायेला कर्मो यावत् निकाचित अवस्था सुधीना होय तेने पण क्षय करवालुं परम साधन, सर्व मगलभेदोमां प्रथम मगल स्वरूप अवधिज्ञानथी तेज भवमा मुक्ति पामवानु जाणता पण श्रीमत्तीर्थंकरदेवोए आचरेलुं तपपद मुक्तिनुं महत् साधन होवाथी तप पद चोथु ग्रहण कर्युं छे

## ॥ सख्याविशिष्टता—महिमा ॥

पाच धर्मि (गुणि) पदो अने चार धर्म (गुण) पदो मळी नवना आकमा ए विशिष्टता छे के-बधी आक संख्याने गुणाकार करता ते आकनो भग थाय छे पण नवना आकने च्हाय तेटला गुणा करो तो पण नवनो अक अभगज रहे छे, नवने बमणा करवाथी १८ थाय, तेमा एक अने आठ बेउ मळी ९ थाय छे. त्रमणा करवाथी २७ थाय, तेमा पण बे अने सात ९. एज प्रमाणे आगळ आगळ जेटली सख्या गुणा करो तेमा नवनो आक आवी उभोज रहे छे श्री जिनेश्वर देवप्रतिपादित अबाधिततत्त्वो पण नव छे, शाश्वत निधिओ पण नव छे इत्यादि अनेक विचारोथी नवपदमय श्रीसिद्धभगवतनी विशिष्टता समजवा लायकछे.





## ॥ श्री सिद्धचक्रगुणोनु स्तोत्र ॥

१२ अर्हद्गुणा —

अशोकाख्य वृक्ष सुरविरचित पुष्पनिकरं,
ध्वनिं दिव्य श्रव्य रुचिरचमरावासनवरम्।
वपुर्भासभारं मधुररवं दुन्दुभिमथ,
प्रभो प्रेक्ष्यच्छत्रत्रयमधिमन कस्य न मुद्॥१॥

अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि-
र्दिव्यध्वनिश्चामरमासन च।
भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्र,
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ २ ॥

अपायापगमो ज्ञान, पूजा वचनमेव च।
श्रीमत्तीर्थकृता नित्य, सर्वेभ्योऽप्यतिशेरते ॥३॥

८ सिद्धगुणा —

अनन्त केवलज्ञान, ज्ञानावरणसंक्षयात्।

अनन्तं दर्शन चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥४॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व–चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात् क्रमात् ॥५॥
आयुष क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थिति ।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ–मूर्त्तानन्तावगाहना ॥६॥

३६ आचार्यगुणा —

प्रतिरूपाद्याश्चतुर्दश, क्षान्त्यादिर्दशविध श्रमणधर्म. ।
द्वादश भावना इति, सूरिगुणा भवन्ति षट्त्रिंशत्॥७

२५ उपाध्यायगुणा —

अङ्गान्येकादश वै, पूर्वाणि चतुर्दशापि योऽधीते ।
अध्यापयति परेभ्य , पञ्चविंशतिगुण उपाध्याय ॥ ८॥

२७ साधुगुणा —

व्रतषट्क कायरक्षा , पञ्चेन्द्रियलोभनिग्रह क्षान्ति. ।
भावविशुद्धि प्रतिले–खनादिकरणे विशुद्धिश्च ॥९॥
सयमयोगसुयोगोऽ, कुशलमनोवच कायसरोधा ।
शीताद्याभिविषहनं, मरणाद्युपसर्गसहनं च ॥१०॥
सप्ताविंशतिसुगुणे–रेभिरन्यैश्च यो विभूषित साधु ।

जिनशासनप्रवेशे, द्वारसमो रम्यगुणनिवह ॥११॥

६७ सम्यग्दर्शनभेदा —

श्रद्धा ४ लिङ्ग ३ विनया १०,
शुद्धि ३ दोषा ५ प्रभावना ८ भणिता.।
भूषण ५ लक्षण ५ यतना ६,
आकारा ६ भावना ६ ध्येया ॥ १२ ॥
स्थाना ६न्येतैर्भेदै-रलङ्कृत दर्शनमतिविशुद्धम् ।
ज्ञानक्रिययोर्मूल, शिवसाधनमात्मसौख्यमिदम् ॥१३॥

५१ ज्ञानभेदा —

अष्टाविंशतिभेदाढ्या, मति पूर्वमित श्रुतम्।
षोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मन पर्यवमीरितम् ॥ १४ ॥
एक केवलमाख्यात-मेकपञ्चाशदित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता, भव्याम्भोजविकासका ॥१५॥

७० चारित्रभेदा —

व्रत ५ धर्म १० सयमा १७ स्त्विह,
वैयावृत्यानि १० गुप्तयो नव ९ वै ।
ज्ञानादित्रिक ३ मिह तप १२,
क्रोधादिनिरोधन ४ च चारित्रम् ॥१६॥

अनन्त दर्शन चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥४॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व–चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात् क्रमात् ॥५॥
आयुष क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थिति ।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ–मूर्तानन्तावगाहना ॥६॥

३६ आचार्यगुणा —

प्रतिरूपाद्याश्चतुर्दश, क्षान्त्यादिर्दशविध श्रमणधर्म ।
द्वादश भावना इति, सूरिगुणा भवन्ति षट्त्रिंशत्॥७

२५ उपाध्यायगुणा —

अङ्गान्येकादश वै, पूर्वाणि चतुर्दशापि योऽधीते ।
अध्यापयति परेभ्य , पञ्चविंशतिगुण उपाध्याय ॥ ८॥

२७ साधुगुणा —

व्रतषट्क कायरक्षा , पञ्चेन्द्रियलोभनिग्रह क्षान्ति ।
भावविशुद्धि प्रतिले–खनादिकरणे विशुद्धिश्च ॥९॥
संयमयोगसुयोगोऽ, कुशलमनोवच कायसरोधा ।
शीताद्यापित्तिसहन, मरणाद्युपसर्गसहन च ॥१०॥
सप्तविंशतिसुगुणै–रेभिरन्यैश्च यो विभूषित' साधु ।

जिनशासनप्रवेशे, द्वारसमो रम्यगुणनिवह ॥११॥

६७ सम्यग्दर्शनभेदा —

श्रद्धा ४ लिङ्ग ३ विनया १०,
  शुद्धि ३ दोषा ५ प्रभावना ८ भणिता'।
भूषण ५ लक्षण ५ यतना ६,
  आकारा ६ भावना ६ ध्येया ॥ १२ ॥
स्थाना ६न्येतैर्भेदै-रलङ्कृत दर्शनमतिविशुद्धम् ।
ज्ञानक्रिययोर्मूल, शिवसाधनमात्मसौख्यमिदम् ॥१३॥

५१ ज्ञानभेदा.—

अष्टाविंशतिभेदाढ्या, मति पूर्नेमित श्रुतम् ।
षोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मन पर्यवमीरितम् ॥ १४ ॥
एक केवलमाख्यात-मेकपञ्चाशादित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता, भव्याम्भोजविकासका. ॥१५॥

७० चारित्रभेदा —

व्रत ५ धर्म १० सयमा १७ स्त्विह,
  वैयावृत्यानि १० गुप्तयो नव ९ वै ।
ज्ञानादित्रिक ३ मिह ताप १२,
  क्रोधादिनिरोधन ४ च चारित्रम् ॥१६॥

अनन्तं दर्शन चापि, दर्शनावरणक्षयात् ॥४॥
क्षायिके शुद्धसम्यक्त्व—चारित्रे मोहनिग्रहात् ।
अनन्ते सुखवीर्ये च, वेद्यविघ्नक्षयात् क्रमात् ॥५॥
आयुष क्षीणभावत्वात्, सिद्धानामक्षया स्थिति ।
नामगोत्रक्षयादेवाऽ—मूर्त्तानन्तावगाहना ॥६॥

३६ आचार्यगुणा —

प्रतिरूपाद्याश्चतुर्दश, क्षान्त्यादिर्दशविध श्रमणधर्म· ।
द्वादश भावना इति, सूरिगुणा भवन्ति षट्त्रिंशत्॥७

२५ उपाध्यायगुणा —

अङ्गान्येकादश वै, पूर्वाणि चतुर्दशापि योऽधीते ।
अध्यापयति परेभ्य , पञ्चविंशतिगुण उपाध्याय ॥ ८॥

२७ साधुगुणा —

व्रतषट्क कायरक्षा , पञ्चेन्द्रियलोभनिग्रह क्षान्ति ।
भावविशुद्धि प्रतिले—खनादिकरणे विशुद्धिश्च ॥९॥
सयमयोगसुयोगोऽ, कुशलमनोवच कायसरोधा ।
शीताद्याभिविषहन, मरणाद्युपसर्गसहनं च ॥१०॥
सप्तविंशतिसुगुणै—रेभिरन्यैश्च यो विभूषित साधु ।

जिनशासनप्रवेशो, द्वारसमो रम्यगुणनिवह. ॥११॥

६७ सम्यग्दर्शनभेदा —

श्रद्धा ४ लिङ्ग ३ विनया १०,
शुद्धि ३ दोषा ५ प्रभावना ८ भणिता ।
भूषण ५ लक्षण ५ यतना ६,
आकारा ६ भावना ६ ध्येया ॥ १२ ॥
स्थाना ६ न्येतैर्भेदै-रलङ्कृत दर्शनमतिविशुद्धम् ।
ज्ञानक्रिययोर्मूल, शिवसाधनमात्मसौख्यमिदम् ॥१३॥

५१ ज्ञानभेदा.—

अष्टाविंशतिभेदाढ्या, मति पूर्वमित श्रुतम् ।
पोढा चाप्यवधिर्द्वेधा, मन पर्यवमीरितम् ॥ १४ ॥
एक केवलमाख्यात—मेकपञ्चाशदित्यमी ।
ज्ञानभेदा जिनैरुक्ता, भव्याम्भोजविकासकाः ॥१५॥

७० चारित्रभेदा.—

व्रत ५ धर्म १० सयमा १७ स्त्विह,
वैयावृत्यानि १० गुप्तयो नव ९ वै ।
ज्ञानादित्रिक ३ मिह तप १२,
क्रोधादिनिरोधन ४ च चारित्रम् ॥१६॥

५० तपोभेदा —

द्विविधं स्यादनशन मौनोदर्यं तथा द्विधा ।
चतुर्धा वृत्तिसक्षेप ,कायक्लेश (रसत्याग) स्तथैकधा॥१७
एकधा रससत्याग (कायसक्लेश ),सलीनत्व तथा द्विधा ।
एवं वाह्यतपोभेदा , द्वादश श्रीजिनोदिता ॥१८॥
दशधा प्रायश्चित्त स्यात् , सप्तधा विनयस्तथा ।
वैयावृत्त्य दशविध, स्वाध्याय पञ्चधा मत ॥ १९ ॥
चतुर्विध तथा ध्यान-मुत्सर्गो द्विविधस्तथा ।
अष्टात्रिंशदिमे भेदा स्तपसोऽभ्यन्तरस्य वै ॥ २० ॥
पञ्चाशत्सख्यया ध्येया , निर्जरार्थिमनीषिभि ।
अन्यथाऽप्यथवा भेदा , पदाना परिकीर्त्तिता ॥२१॥
॥ इति श्रीसिद्धचक्रगुणा ॥

---

॥ श्रीसिद्धचक्र गुणविचार ॥

( १२ अरिहत गुण )

प्रातिहारज आठ छे, मूल अतिशय चार ।
बार गुण अरिहतदेव, नमो नमो बहुवार ॥ १ ॥

(८ सिद्धगुण)
एक एक कर्मना क्षय थकी, नीपन्यो गुण एँक एक।
आठ गुणे इम ध्याइए, सिद्धप्रभु सुविवेक ॥ २ ॥
(३६ आचार्यगुण)
पडिरूवादिक चौद गुण, क्षान्त्यादिक दशधर्म।
भावना बार छत्रीश ए, सूरिगुणनु मर्म ॥ ३ ॥
(२५ उपाध्यायगुण)
अंग अग्यार भणे तथा, चउद पूर्व वली जेह।
परने भणावे नेहथी, उपाध्यायगुण एह ॥ ४ ॥
(२७ साधुगुण)
व्रत छकायरक्षण तथा, इन्द्रिय लोभनिरोध।
क्षमा भावशुद्धि वळी, पडिलेहणादि विशोध ॥ ५ ॥
सयमयोगे युक्तता, मनवचकाया शान्त।
शीतादि परिषह तथा, मरणोपसर्ग सहंत ॥ ६ ॥
इम सगवीस गुणावलि, मौक्तिकमाल धरंत।
मुक्तिमार्ग साधक मुनि, रमणीय गुण सोहंत ॥ ७ ॥
(६७ दर्शनभेद)
चउसद्दहण तिलिंग छे, दशविध विनय विचारोरे।

त्रणशुद्धि पण दूपण, आठप्रभावक धारोरे ॥ ८ ॥
प्रभावक अड पंचभूपण, पंच लक्षण जाणीए,
पट् जयणा पट् आगार भावना, छव्विहा मन आणीये ।
पट्ठाण समकिततणा, सडसठ भेद एह उदार ए,
एहनो तत्व विचार करता, लहीजे भवपार ए ॥९॥

( ५१ ज्ञानभेद )

मति अट्ठावीश भेद छे, श्रुतना चौद प्रकार ।
पड्विध ओही वर्णव्यो, मन पर्यव दुगधार ॥ १० ॥
केवल एक वखाणीये, इम एकावन मान ।
ज्ञानभेद जिनवर कह्या, वदु धरी बहुमान ॥ ११ ॥

[ ७० चारित्रभेद ]

व्रत पाचने दश श्रमणधर्म ज, संयम सत्तर जाणीये_
दशभेद वेयावच्च नवविध, ब्रह्मगुप्ति वखाणीये ।
ज्ञानादित्रण तप वार भेदे, कपाय चार निरोधीये,
आराधीने इम चरणसित्तरी, निजचरणने सशोधीये १२

[ ५० तपोभेद ]

अनशनना वे भेद छे, ऊणोदरी वे भेद,

वृत्तिसक्षेपना चार भेद, कायक्लेश (रसत्याग) छे एक १३
रसत्याग (कायक्लेश) छे एकविध, सलीनता दुगविध ।
बाह्यतपना ए कह्या, बारभेद प्रसिद्ध ॥ १४ ॥
प्रायश्चित्त दश जाणीये, सगविह विनय उदार ।
दशविध वैयावच्च छे, सज्झाय पचप्रकार ॥ १५ ॥
ध्यान चतुर्विध जाणीये, उत्सर्गना दोय भेद ।
अडत्रीश अभ्यन्तर मळी, तप पचाश सुभेद ॥ १६ ॥

॥ कोइक स्थळे १३०००जाप बतावे छे तेनो विचार ॥

१०८ पचपरमेष्टिना गुणो
१२ श्री अरिहतप्रभुना,
८ श्री सिद्धप्रभुना,
३६ श्री आचार्य भगवतना,
२५ श्री उपाध्याय भगवतना,
२७ श्री साधुभगवतना,
५ दर्शनना भेदो
५ ज्ञानना भेदो

१० श्रमणधर्मचारित्रना भेदो,
२ तपना भेदो

कुल १३० भेद थया, ते प्रत्येकना सो सो जाप एटले (एक एक नवकारवाली) गणवाथी १३० ने सोए गुणता १३००० सख्या थाय छे
अर्थात्—

१२०० श्री अरिहतपदनो जाप,
८०० श्री सिद्धपदनो जाप,
३६०० श्री आचार्यपदनो जाप,
२५०० श्री उपाध्यायपदनो जाप,
२७०० श्री साधुपदनो जाप,
५०० श्री दर्शनपदनो जाप,
५०० श्री ज्ञानपदनो जाप,
१००० श्री चारित्रपदनो जाप,

---

१ बीजे स्थळे चारित्रना तथा तपना ६ –६-भेद बताव्या छे

२ चारित्रना ६ भेदनी अपेक्षाये जाप सख्या ६०० तेज प्रमाणे तपना पण ६ भेदनी अपेक्षाये जाप सख्या ६०० जाणवी. बेउ मली १२०० जाप थाय

२०० श्री तप पदनो जाप,

---

१३००० कुल जाप

॥ श्री सिद्धचक्र महाराजना *३४६ गुण भेदविचार ॥
१०८ गुणि वा धर्मि आश्रयी गुणो २३८ गुण
वा (धर्म) आश्रयो भेदो

---

॥ अरिहन्तना १२ गुण ॥

(८) प्रातिहार्य–

१ अशोकवृक्ष, २ देवकुसुमवृष्टि, ३ दिव्यध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामडल, ७ देवदुन्दुभि, ८ छत्रत्रय.

(४ मूलातिशय)

१ अपायापगम, २ ज्ञान, ३ पूजा, ४वचनातिशय.

---

*कोइक स्थळे पचपरमेष्ठिना १०८, दर्शन पदना ६७, ज्ञानपदना ५१, चारित्रपदना ५, तपपदना १२, सर्व मळी २४३ गुणभेदो पण देखाडया छे तेमा चारित्रपदना सामायिक १, छेदोपस्थापनीय २, परिहारविशुद्धि ३, सूक्ष्मसपराय ४, यथाख्यात ५, ए पाच भेद तथा तपपदना ६ बाह्य अने ६ अभ्यन्तर मळी १२ भेद

२४ तीर्थंकरभेदे २४ खमा० काउ० विगेरे पण अन्यत्र आराधनामा आवे छे,

---

## ॥ सिद्धना ८ गुण, ॥

१ अनन्तज्ञान, २ अनन्तदर्शन, ३ अव्याबाध-सुख, ४ अनन्तसम्यक्त्वचारित्र, ५ अक्षयस्थिति, ६ अमूर्तअनन्तावगाहना, ७ अगुरुलघु, ८ अनन्तवीर्य

सिद्धभगवतना१५ भेद होवाथी १५खमा० काउ० विगेरे पण अन्यत्र आराधवामा आवे छे,

१ जिनसिद्ध, २ अजिनसिद्ध, ३ तर्थिसि०, ४ अतीर्थसि०, ५ गृहिलिंग सि०, ६ अन्यलिं०, ७ स्वलिं०, ८ स्त्रीसिद्ध, ९ पुरुषसिद्ध, १० नपुंसकसि०, ११ प्रत्येक-बुद्धसिद्ध,१२ स्वयबुद्ध०, १३ बुद्धबोधित०,१४ एकसिद्ध, १५ अनेक सिद्ध

प्रकारान्तरे ३१ गुणोनी अपेक्षाए लीधा छे ५ ज्ञानावरणीयाभाव, ९ दर्शनावरणीयाभाव, २ वेद-नीयाभाव, २ मोहनीयाभाव, ४ आयुष्कमाभाव,

२नामकर्माभाव,२ गोत्रकर्माभाव,५ अन्तरायकर्माभाव, तेमज वर्णाभावादिनी अपेक्षाये पण ३१ भेदो थाय छे.

## ॥ आचार्यना ३६ गुण ॥

१४ प्रतिरूपादि–

१ प्रतिरूप, २ तेजस्विता, ३ युगप्रधानागम ४ मधुरवाक्य, ५ गांभीर्य, ६ धैर्य, ७ उपदेशतत्परता, ८ अपरिश्रावि, ९ सौम्यप्रकृति, १० संग्रहशीलता, ११ अभिग्रह, १२ अविकत्थकता, (अनात्मशंसिता), १३ अचपलता, १४ प्रशान्तहृदय

१० क्षमादिधर्म–

१ क्षमा, २ मृदुता, ३ आर्जव, ४ मुक्ति, ५ तप, ६ संयम, ७ सत्य, ८ शौच ९ आकिंचन्य,१० ब्रह्मचर्य.

१२ भावना–

१ अनित्यत्व, २ अशरण, ३ संसार, ४ एकत्व, ५ अन्यत्व, ६ अशुचित्व, ७ आश्रव, ८ संवर, ९ निर्जरा,१० लोकस्वभाव, ११ बोधिदुर्लभता,१२ धर्म-दुर्लभ

बीजी पण अनेक रीतोथी छत्रीशीओ थायछे जे आगळ देखाडवामां आवशे

॥ उपाध्यायना २५ गुण ॥

११ अगपठनपाठनतत्परता,—

१ आचाराग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायाग, ५ भगवत्यग, ७ ज्ञाताधर्मकथांग, ७ उपासक दशाग, ८ अतकृद्दशाग, ९ अनुत्तरोपपातिकदशाग, १० प्रश्नव्याकरणाग, ११ विपाकांग

२४ पूर्वपठनपाठनतत्परता—

१ उत्पाद, २ अग्रायणीय, ३ वीर्यप्रवाद, ४ अस्तिनास्ति प्र०, ५ ज्ञानप्र०, ६ सत्यप्र०, ७ आत्मप्र०, ८कर्मप्रवाद,९प्रत्याख्यानप्र०,१०विद्याप्र०,११कल्याणप्रवाद, १२ प्राणावाय,१३ क्रियाविशाल,१४ लोकविन्दुसार,

बीजी पण अनेक रीतियोए पचीशीओ थाय छे जे आगळ वतावंवामा आवशे,वळी मुख्यताए अन्यत्र

११ अंग १२ उपाग पठनपाठन तत्परता, १ चरणसित्तरी, १ करणसित्तरी ए प्रमाणे २५ गुणो पण लीधा छे,

## ॥ साधुना २७ गुण ॥

छ व्रतो—

१ प्राणातिपातविरमण २ मृषावादविर० ३ अदत्तादानविर० ४ मैथुनविरम० ५ परिग्रहविरम० ६ रात्रिभोजनविर०

६ कायरक्षा—

१ पृथ्वीकायरक्षण, २ अपुकायरक्षण ३ तैजसकायरक्षण, ४ वायुकायरक्षण, ५ वनस्पतिकायरक्षण, ६ त्रसकायरक्षा

५ इन्द्रियनिग्रह—

१ स्पर्शेन्द्रियनिग्रह, २ रसनेन्द्रियनिग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय निग्रह, ४ चक्षुरिन्द्रियनिग्रह, ५ श्रोत्रेन्द्रियनि०

१ लोभ निग्रह, १ क्षान्ति, १ भावविशुद्धि, १ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धि, १ सयमयोगयुक्तता, ३ अकुशलयोगनिरोध, [१ अकुशलमनोयोग, २ अकु-

शल वचन योग, ३ अकुशल काययोग ] १ शीतादि परिसह सहनता, १ मारणान्तिकोपसर्गसहनता

बीजी पण अनेक रीतिए २७ गुणोनी सत्तावीशीओ थाय छे, जे आगळ बतावाशे

## ॥ सम्यग्दर्शनना ६७ भेदो ॥

४ सद्दहणा—

१ परमार्थसंस्तव, २ परमार्थज्ञातृसेवना, ३ व्यापन्नदर्शनवर्जन, ४ कुदर्शनवर्जन

३ लिङ्ग—

१ शुश्रुषा, २ धर्मराग, ३ वैयावृत्त्य

१० विनय—

१ अर्हद्विनय, २ सिद्धवि०, ३ चैत्यवि०, ४ श्रुतविनय, ५ धर्मवि०, ६ साधुवि०, ७ आचार्यवि०, ८ उपाध्यायविनय, ९ प्रवचनसंघवि० १०, दर्शनविनय.

३ शुद्धि—

१ मन शुद्धि, २ वचन शुद्धि, ३ कायशुद्धि.

५ दूषणत्याग—

१ शंका, २ आकांक्षा, ३ विचिकित्सा, ४ मिथ्यादृष्टिप्रशंसा, ५ मिथ्यादृष्टिसंसर्ग

८ प्रभावक—

१ प्रावचनी, २ धर्मकथि, ३ वादि, ४ नैमित्तिक, ५ तपस्वी, ६ विद्याभृत्, ७ सिद्ध, ८ कवि,

५ भूषण—

१ जिनशासनक्रियाकुशलता, २ प्रभावना, ३ तीर्थसेवा, ४ स्थैर्य, ५ जिनशासनभक्ति

५ लक्षण—

१ उपशम, २ संवेग, ३ निर्वेद, ४ अनुकंपा, ५ आस्तिक्य.

६ यतना (त्याग)—

१ परतीर्थिवंदन, २ परतीर्थिनमन, ३ परतीर्थिसहालाप, ४ परतीर्थिसहसंलाप, ५ परतीर्थिअन्नपानदान, ६ परतीर्थिवारंवारदान

६ आगार—

१ राजाभियोग, २ गणाभियोग, ३ बलाभियोग,

४ देवाभियोग, ५ गुरुनिग्रह, ७ वृत्तिकान्तार,

६ भावना—

१ धर्मवृक्षमूल,२ धर्मपुरद्वार, ३ धर्मप्रासादपीठ, ४ धर्माधार, ५ धर्मभाजन, ६ धर्मनिधान

६ स्थान—

१ अस्ति जीव , २ नित्यानित्यो जीव , ३ कर्मण कता,४ कर्मणोभोक्ता,५ जीवस्य मोक्षोऽस्ति, ७ मोक्षो पायोऽस्ति

—०—

॥ज्ञानना ५१ भेद,॥

—०—

२८ मतिज्ञान,—

४ व्यजनावग्रह—

१ स्पर्शन, २ रसन, ३ घ्राण, ४ श्रोत्र,

१४ श्रुतज्ञान—

१ अक्षरश्रुत, २ अनक्षरश्रु०, ३ सज्ञिश्रु०, ४ असज्ञिश्रु०,५ सम्यक्श्रु०, ६ मिथ्याश्रु०, ७ सादिश्रु०, ८ अनादिश्रु०,९ सान्तश्रु, १० अनन्तश्रु०, ११ गमिक श्रुत,१२ अगमिकश्रुत, १३ अगप्रविष्ट, १४ अनगप्रविष्ट

६ अवधिज्ञान

१ आनुगामिक, २ अनानुगामिक, ३ वर्धमान, ४ हीयमान, ५ प्रतिपाति, ६ अप्रतिपाति

२ मन पर्यवज्ञान

१ ऋजुमति, २ विपुलमति

१ लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान

॥ चारित्रना ७० भेदो ॥

५ व्रतो.—

१ प्राणातिपातविरमण, २ मृषावादविर०, ३ अदत्ता० वि०, ४ मैथुन वि०, ५ परिग्रहविरमण,

१० श्रमणधर्म,

१ क्षमा, २ मार्दव, ३ आर्जव, ४ मुक्ति, ५ तप ६ सयम, ७ सत्य, ८ शौच, ९ आकिंचन्य, १० ब्रह्मचर्य.

१७ सयम,—

१ पृथ्वीकायरक्षा, २ अप० र०, ३ तेज० रक्षा, ४ वायु० रक्षा, ५ वन०रक्षा, ६ द्वीन्द्रियर०, ७ त्रीन्द्रियरक्षा, ८ चतुरि० रक्षा, ९ पचे० रक्षा, १० अजीवसंयम ११ प्रेक्षासंयम, १२ उपेक्षास०, १३ प्रमार्जनास०, १४ परिष्ठापनसं०, १५ मन स०, १६ वच स०, १७ कायसयम.

१० वैयावृत्य,—

१ आचार्यवैयावृत्य, २ उपाध्याय वै०, ४ तपस्वि वै० ४ लघुशिष्य वै०, ५ ग्लानसाधु वै०, ६ स्थविर वै०, ७ समनोज्ञसमाचारीकारक वै०, ८ श्रमणसघ वै०, ९ चान्द्रादिकुलवै०, १० कोटिकादिगुण वैयावृत्य,

९ ब्रह्मगुप्ति,—

१ वसति, २ कथा, ३ निषद्या, (स्त्रीआसन),

३ ज्ञानादि,—

१ ज्ञान, दर्शन, ३ चारित्र,

१२ तपोभेद,—

६ बाह्यतप,—

१ अनशन, २ ऊणोदरी, ३ वृत्तिसक्षेप, ४ रसत्याग, ५ कायक्लेश, ६ सलीनता,

६ अभ्यन्तर तप,—

१ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावृत्य ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान, ६ उत्सर्ग,

४ कषायनिग्रह,

१ क्रोधनिग्रह,२माननिग्रह,३मायानिग्रह,४लोभनिग्रह,

आ चरणसित्तरी कहेवाय छे तेवीज करणसित्तरी पण क्रिया अनुष्ठान संबधी छे,

॥ तपना ५० भेद, ॥

१२ बाह्यतप,

२ अनशन (१ यावत्कथिक, २ ईत्वरिक) २ ऊनोदर

(१ बाह्य, २ अभ्यन्तर) ४ वृत्तिसंक्षेप [१ द्रव्यथी २ क्षेत्रथी, ३ कालथी ४ भावथी, ]

१ कायक्लेश, १ रसत्याग,

२ संलीनता १ (इन्द्रिय कषायादि स०,२वसतिस०)

३८ अभ्यन्तर तप—

१० प्रायश्चित्त ( १ आलोचना, २ प्रतिक्रमण- ३ मिश्र, ४ विवेक, ५ उत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद, ८ मूल. ९ अनवस्थाप्य, १० पाराचिक )

७ विनय (१ ज्ञानविनय, २ दर्शन वि०, ३ चारित्रवि०, ४ शुभमनोवि०, ५ शुभवचनवि०, ६ शुभकायविनय, ७ औपचारिकवि० )

१० वैयावृत्य [१ आचार्यवै०, २ उपाध्याय०, ३ स्थविर०, ४ तपस्वि०, ५ लघुशिष्यादि०, ६ ग्लानसाधु०, ७ समनोज्ञसामाचारीकारक०, ८ संघ०, ९ कुल०, १० गणवै० ]

५ स्वाध्याय ( १ वाचना, २ पृच्छना, ३ परिवर्तन,

४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा )

४ ध्यान ( १ आर्त्त, २ रौद्र, ३ धर्म्य, ४ शुक्लध्यान)

२ उत्सर्ग ( १ वाह्य अभ्यन्तर)

अन्यत्र तपथी प्रकट यती लब्धिभेदोए पण तपना ५० भेद वर्णव्या छे,

बीजी रीते पण तपना ५० भेद थाय छे

९ वाह्यतप —

(४) अनशन—

१ इत्वरिकानशन २ इगितमरणयावत्कथिकानशन ३ पादपोपगमनयावत्कथिकानशन

४ भक्तपरिज्ञायावत्कथिकानशन

(१) ऊनोदरिका (१) वृत्तिसक्षेप (१) रसत्याग

(१) कायक्लेश (१) सलीनता

४१ अभ्यन्तरतप —

(१०) प्रायश्चित

१ आलोचना, २ प्रतिक्रमण, ३ आलोचनाप्रतिक्रमणोभय, ४ विवेक, ५ व्युत्सर्ग, ६ तप, ७ छेद

८ मूळ, ९ अनवस्थाप्य, १० पाराचित.

[७] विनय

१ ज्ञानविनय, २ दर्शनवि०, ३ चारित्रवि०, ४ मनोवि०, ५ वचनवि०, ६ कायवि०, ७ औपचारिकवि०,

(१) वैयावृत्त्य

(५) स्वाध्याय

१ वाचना, २ पृच्छना, ३ परावर्तना, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा

(१६) ध्यान—

४ आर्तध्यान

१ इष्टवियोगार्त०, २ अनिष्टसयोगार्त०. ३ रोगचिन्तार्त०, ४ अग्रशोचार्त्त०

४ रौद्रध्यान

१ हिसानुबधिरौद्र, २मृषानुवधि ३चौर्यानुवधि. ४ परिग्रहानुबन्धिरौद्र

४ धर्म्यध्यान

१ आज्ञाविचयधर्म०, २ अपायवि०, ३ विपाकवि०, ४ सस्थानवि०,

४ शुक्लध्यान,

१ पृथक् वितर्कसविचार, २ एकत्ववितर्कअ-विचार, ३ सूक्ष्मक्रियाऽप्रतिपाति, ४ समुच्छि-न्नक्रियाऽनिवर्ति

(२) उत्सर्ग

१ बाह्य–उत्सर्ग २ अभ्यन्तर–उत्सर्ग



## ॥ श्री सिद्धचक्राराधनमाहात्म्य ॥

श्री सिद्धचक्र महाराजना नवपदोनी समुदित आराधना करनार महाराज श्री श्रीपालकुमार आ भवमा अनेकभोग ऋद्धि वैभव पामी शासनप्रभावना करी माता तथा नव राणीओ सहित नवमे देवलोके उत्पन्न थया, यावत् नवमे भवे मुक्तिपद पामशे,

## ॥ नवपदोनु पृथक् माहात्म्य ॥

गणधरभगवत श्री गौतमस्वामिजी महाराज श्रेणिक महाराजाए पूछेला प्रश्नना जवाबमा नीचे प्रमाणे फरमावे छे

## ॥ श्री अरिहंतपद माहात्म्य ॥

तो भणइ गणी नरवर पत्तं अरिहतपयप्पसाएणं ।
देवपालेण रज्ज, सक्कत्त कत्तिएणावि ॥१॥

त्यारपछी गणधरभगवान् श्री गौतमस्वामीजी

कहे छे हे राजन् ? (श्रेणिक) श्री अरिहंत पदना आराधनना प्रसादथी देवपाल नामना शेठना नोकरे राज्य मेळव्युं, अने कार्तिकशेठे शक्रइन्द्रपणु प्राप्त कर्युं

॥ श्री सिद्धपद माहात्म्य. ॥

सिद्धपय झायता, के के सिवसपय न सपत्ता ।
सिरिपुंडरीयपडव–पउमसुणिंदाइणो लोए ॥२॥

श्री सिद्धभगवतनु ध्यान करता मुनिओमा अग्रेसर श्री पुडरीक गणधर भगवान् पाचे पाडवो तथा पद्म मुनि विगेरे कोण कोण मुक्तिसपत्ति पाम्या नथी? अर्थात् अनेक जीवो सिद्धिपद पाम्या छे २

॥ श्री आचार्यपद माहात्म्य ॥

नाहियवायसमज्जिय--पावभरो वि हु पएसिनरनाहो।
ज पावइ सुररिद्धिं, आयरियप्पयप्पसाओ सो ॥३॥

(प्रथम) नास्तिक मतथी घणोज एकठो कर्यो

छे पाप समूह जेणे एवो छतां पण प्रदेशिराजा जे देव ऋद्धिने पामे छे ते केवल आचार्य भगवंतना चरणनोज प्रसाद जाणवो ३

॥ श्री उपाध्यायपद माहात्म्य ॥



लहुय पि गुरूवइट्ठ, आराहतेहिं वयरमज्झायं ।
पत्तो सुसाहुवाओ, सीसेहि सीहगिरीगुरुणो ॥४॥

गुरु महाराजाए फरमावेल 'वयथी' न्हाना पण वज्रस्वामिजी उपाध्याय ' वाचनाचार्य ' ने आराधन करनार आचार्य श्री सिहगिरिजी महाराजना शिष्योए उत्तम साधुवाद ( आ उत्तम विनीत शिष्यो छे तेवी 'स्तुति') प्राप्त कर्यो ४

॥ श्री साधुपद माहात्म्य ॥

साहुपयविराहणया, आराहणया य दुक्खसुक्खाइ ।
रुप्पिणी रोहिणीजीवेहि, किं नहु पत्ताइ गुरूयाइ ॥५॥

श्री साधुपदनी विराधना तथा आराधनाथी

अनुक्रमे रूपिणी तथा रोहिणीना जीवोए भारे दु ख अने सुखो शु प्राप्त कर्या नथी ? अर्थात् रूपिणीना जीवे साधु पदनी विराधनाथी भारे दु ख मेळव्यु, अने रोहिणीना जीवे साधुपदनी आराधनाथी अतिशय सुख मेळव्युं छे ५

॥ श्री दर्शनपद माहात्म्य ॥

दसणपय विसुद्ध, परिपालतीइ निच्चलमणाए ।
नारीइ वि सुलसाए, जिणराओ कुणइ सुपसस ॥६॥

विशुद्ध श्रीसम्यग्दर्शन पदनी सर्व रीते आराधना करनार निश्चळ मनवाळी नागसारथीनी स्त्री सुलसा श्राविका अवळा जातिनी पण तीर्थंकर देव भगवान् श्रीमहावीर स्वामी सारी रीते प्रशसा करे छे, (श्रावक अंवडपरिव्राजकद्वारा कुशल समाचार तथा धर्मलाभ कहेवराव्यो ) ६

॥ श्री ज्ञानपद माहात्म्य ॥

नाणपयस्स विराहण-फलमि नाओ हवेइ मासतुसो ।
आराहणाफलमी, आहरण होइ सीलमई ॥७॥

श्री ज्ञानपदनी विराधनाना फल सवधमा दृष्टान्त तरीके श्रीमापतुप मुनि छे अने आराधनाना फल सवधमा उदाहरण तरीके श्री शीलमती छे, ७

॥ श्री चारित्रपद माहात्म्य ॥

चारित्तपय तहभा वओ वि आराहिय सिवभवंमि ।
जेण जबुकुमारो, जाओ कयजणचमुक्कारो ॥८॥

श्री शिवकुमारना भवमा तेवा प्रकारे भावथी श्री चारित्रपदनी आराधना करी के जेना प्रतापे कर्यो छे लोकोमा चमत्कार जेमणे एवा श्रीजबूस्वामी चरमकेवलि उत्पन्न थया ८

॥ श्री तप पद माहात्म्य ॥

वीरमईए तह कहवि, तवपयमाराहिय सुरतरुव्व ।
जह दमयंतीइ भवे, फलिय त तारिसफलेहिं ॥९॥

कल्पवृक्ष समान श्रीतप पदनी राजपत्नी वीरमतीए तेवा कोइ पण 'उत्तम' स्वरूपे आराधना करीके जेम

नलराजानी पटराणी श्री दमयंतीना भवमां तेवा 'उत्कृष्ट' फलोए ते तप फलीभूत थयु ॥

॥ छेवटे श्री गौतमस्वामी भगवान् साक्षात् दृष्टान्त देखाडे छे ॥

कि वहुणा मगहेसर ? एयाण पयाण भत्तिभावेण ।
त आगमेसि होहिसि तित्थयरो नत्थि सदेहो ॥१०॥

हेमगधदेशनायक श्रेणिक ? घणु शु कहीये, आ पदो प्रत्येना भक्ति परिणामे करी भविष्यकालमां तु तीर्थकर [पद्मनाभ नामे आवती चोवीशीमा प्हेला] थइश, आ बाबतमा सदेह नथी १०

उपदेशसार

तम्हा एयाइ पयाइ, चेव, जिणसासणस्स सवस्सं।
नाऊण भो भविया ! आराहह सुद्धभावेण ॥ ११ ॥

हे [illegible] माटे आ [नव] पदोज श्री जि-

नशासननुं सर्वस्व छे ( आखुं जिनशासन आ नवपदोमा समायेलू छे ) तेम जाणीने हे भव्यप्राणीओ ? शुद्धभावथी श्री सिद्धचक्र भगवान्नी आराधना करो ?? ११,

---

माहात्म्य ( फल ) निस्यन्द,

---

एयाइ च पयाइं, आराहताण भवसत्ताणं।
हुतु सया वि हु मगल-कल्लाणसमिद्धिविद्धीओ ॥१२॥

निश्चयथी आ पदोनी आराधना करनार भव्य प्राणीओने मगल [ विपत्ति विघ्नोनी शान्ति], कल्याण ( सपत्तिनी उत्कृष्टता ) समृद्धि (सर्व प्रकारे वैभवनी पूर्णता ) अने वृद्धि (चढती अभ्युदय आवादी) पण सदाने माटे थाओ १२



## ॥ श्री सिद्धचक्र तप उद्यापन विधि ॥

भक्तिमान् भव्य श्रावके पोतानी शक्तिवैभवने अनुसारे उजमणुं करवाथी तपनी सफलता, लक्ष्मीनो सद्व्यय, शुभ ध्याननी वृद्धि, सुलभबोधि भव्यजीवोने सम्यक्त्वनी प्राप्ति, श्री तीर्थंकरदेवनी अपूर्व भक्ति, श्री जिनशासननी प्रभावना–शोभा–उन्नति अने तेनाथी सम्यक्त्वनी उत्तरोत्तर वृद्धि –दृढता, क्षायिक सम्यक्त्व, तीर्थंकर नाम कर्मबन्ध विगेरे अनेक महान् लाभो थाय छे, तप पूर्ण थये उजमणु करवु ते जिनेश्वर चैत्यनी उपर कलश च्हडाववा तुल्य छे.

## ॥ उजमणुं करतां राखवी जोइती सावधानता ॥

तपनुं उजमणु करता अपूर्व आत्मवीर्यनो उल्लास राखवो, वीर्यउल्लास विनानी दरेक क्रियाओ यथार्थ फलदायक थती नथी, वीर्यउल्लास साथे

करातो शुभ क्रियाओज मुनितनु कारण थाय छे, जेम औपधि अनुपान साथे तथा पथ्यसेवनथी विशेप लाभ आपे छे तेम उजमणुं करवाथी तप पण विशेप फलदायक थाय छे,

असार अने चपल लक्ष्मी अनेक भवमां अरे एक भवमा पण अनेक वखत आवी अने गइ, मोहित प्राणिओने दुर्गतिओमा खेची गइ अने खेची जशे, आ लक्ष्मीनो ल्हानो लेवानो तेनाथी सद्गति उपार्जवानो अपूर्व अवसर आव्यो मळ्यो जाणी पूर्ण उदारभावथी यथार्थ विधिसहित उजमणु करवु,

श्रीमद् उपाध्यायजी वर्णवे छे के–

"धन म्होटे छोटु करे,धर्म उजमणुं तेह, मेरे लाल ॥
फल पूरु पामे नहि,मम करजो तिहा सदेह, मेरेलाल ॥
मननो मोटो मोजमा ॥ १ ॥'

उजमणु करता विस्तीर्ण मडपमा श्री सिद्धचक्रमंडल (यत्रनी) त्रण पीठिका विगेरे करवा पूर्वक स्थापना करी महोत्सव करवो, श्रीसिद्धचक्र यत्रनी गोठवण

वलयादिनी रचना विगेरे स्वरूप गीतार्थ गुरु महाराज पासे समजवु,

## ॥ तपनां उद्यापन अंगे करवाना कर्तव्य ॥

जेटला तप दिवसो होंय तेटली सरया दरेकनी उत्कृष्टताथी लेवी, न वनी शके तो वर्तमान आचरणाए ओळीनी अगर पदोनी सरया लेवाय छे,

नवीन चैत्यो वधाववा, जीर्णोद्धार करावना, जिन विम्वो भराववा ( परिकर समेत तथा परिकरविनाना श्री सिद्धचक्र भरावया, श्री सिद्धचक्र यत्रो करावचा, श्री सिद्धचक्र यत्रो चीतराववा, गणधर भगवत आदिनी गुरु मूर्त्तिओ, पौषधालय, धर्मशाला, उपाश्रय वंधाववा.

प्रभुजीना तमाम आभूषणो -मुकुट, कुंडल, तिलक, हस, वाजु, कन्ठी, कडा आगी, भामंडल, पाखरो, श्रीवत्स, वींवीओ, चाल्ला विगेरे,त्रिगडा वाजोठो, सिंहासन, चद्रुवा, पुठीया, रुमाल, पाठा, तोरण, स्थापना-

चार्य, नवकारवाळीओ, अष्टमांगलिक, कटोरी, सोना रूपाना वरख अगरवत्ती, दशागधूप, अगर, केशरना पडीका, वरासना पडीका, चदनना पुठीया, ओरशीया, धूपधाणा, कळश, थाळ, ठावडीओ, चगेरीओ, रकाबी, वाटकीओ, आचमनी, वाटका, मोरपींछीओ, वाळाकुचीओ, देगडा, टब्रुडीओ, प्याला, दडासण, पुजर्णा, सुपडी, फाणस, कोडीया, दीवीओ, हाडी, झम्मर, सरपोस, आरती, मगळदीवा, घट, घटडीओ, त्रावाकुडी, हाडा, तांवडी, वाजोठ, पाटला, वाजोठीओ, नवग्रह- दिकपाल--अष्टमगलना पाटला, चामर छत्रत्रय, अगलुहणा, पाटलुहणा, कामळीओ, धोतीया, उत्तरासग, ध्वजा, वाटवा, झोळीओ, दावडीओ विगेरे, ठवणीओ, सापडा, दावडा, चावसी, कवली, खडीया, कलम, पेनसीलो, चाकु, कातर, आनुपूर्वीनी चोपडीओ, मोरपींछीओ, कांबी, रुमाल, पाटी, पाठा दरेक आगमनी तथा ग्रन्थोनी नवनव प्रतो लखाववी जेटलु मली शके तेटलु पुस्तक संग्रहवु, ओघाना पाटा दशीओ, ओघारीया, नीशीथीआ, मुहपत्तीओ, ख-

भानी कामळो, कामलीओ, चोलपट्टा कपडाना ताका, सथारीया, दाडा ओघानी दांडीओ, पातरा, तरपणी, पाणी लाववाना लोट, झोळी, पल्ला, पुंजणीओ, दरुासण ऊननां तथा पींछाना, सुपडी, पुजणी, कंदोरा ओघाना दोरानी दोरीओ, तरपणीना दोरा, चरवळा, कटासणा, मुहपत्तीओ, संथारीया, दडासण, कावलीओ, घडीओ विगेरे ज्ञानदर्शन चारित्रना उपकरणो एक्याशी एक्याशी अथवा नवनव सख्याए मूकवा,

| | | |
|---|---|---|
| (अरिहतपद) | ८ कर्केतनरत्न | ३४ हीरा |
| सिद्ध ,, | ८ माणेक | ३१ परवाला |
| आचार्य ,, | ५ पीलामणि | ३६ गोमेदक |
| उपाध्याय,, | २५ नीलमणि | |
| साधु ,, | २७ श्याममणि | ५ राज्यपटमणि |
| दर्शनादिचार | २३८ मोटा उत्तम मोती | |

आ उपरात श्री सिद्ध चक्रयंत्र पूजनमा जोइता तमाम साधन विगेरे श्री गीतार्थ गुरुमहाराज पासेथी समजवा.

॥ श्री सिद्धचक्राराधक भव्यजीवनां कर्तव्यो ! ! ॥

१ श्री अरिहंतपदाराधन-प्रतिमाजी भराववा, जीर्णोद्धा
करावत्रा, अजनशलाका, प्रतिष्ठाओ करावबी, आग
पूजा, महोत्सव करवा विगेरे श्री अरिहंत भक्ति

२ श्री सिद्धपदाराधन -सिद्ध प्रतिमाओ भरावबी, तेम
अजनशलाका, प्रतिष्ठा, आगी, पूजा, महोत्सव क
रवा विगेरे श्री सिद्धभक्ति

३ श्री आचार्यपदाराधन-श्री आचार्य भगवंतनी भक्ति
विनय, वेयावच्च करवु, द्वादशावर्त्त वन्दन कर
अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र वसति
आदि पडिलाभवा, आचार्यपदप्रतिष्ठा करावव
आचार्यना सामैया विगेरे सन्मान करवो विगेरे

४ श्री उपाध्यायपदाराधन–श्री उपाध्यायजी भगवंत
भक्ति विनय वेयावच्च करवा भणवा भणाववाने
माम अनुकूलता करी आपवी, उपाध्यायपद प्रतिष्
सामैयु आदि सन्मान करवु विगेरे ·

५ श्रीसाधुपदाराधन–श्रीपंचमहाव्रतधारी मोक्षमार्ग स

थक साधु भगवंतोने वन्दन, नमन, आदर सन्मानादि करवा वसति, अन्न, पान, ओषध, भैषज्यादि आपवा दीक्षा महोत्सवादि करवा, साधुनु सामैयुं विगेरे करवा

६ श्री दर्शनपदाराधन--श्री तीर्थ भक्ति करवी, श्री तीर्थ-रक्षण कार्यमा उत्साहपूर्वक बनती साहाय्य करवी, यात्रा संघो काढवा, साधर्मिक वात्सल्यो करवा, रथयात्रादि महोत्सवो करवा,शासनोन्नतिना कार्यना प्रयत्न करवो विगेरे

७ श्री ज्ञानपदाराधन--सिद्धान्तो लखाववा, भण्डारने सहाय आपवी, पुस्तक संरक्षणना साधनो योजवा, पुस्तक विगेरे ज्ञानसाधनोनी प्रभावना करवी, ज्ञान-दान करवु विगेरे

८ श्री चारित्रपदाराधन- व्रत नियमादि पाळता विरति वंत जीवोनी भक्ति करवी, चारित्रना उपकरणो विगेरे साधनोथी साहाय्य करवी विगेरे

९ श्री तप पदाराधन-तपस्विओनी भक्ति वैयावच्चादि करवा तपस्विओने प्रभावनाओ करवी तप करतां उत्साह वधे तेवी अनुकूलता जोडी आपवी विगेरे

## ॥ ओळीमां उपयोगी पच्चक्खाणो ॥

### आयंबिलनु पच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिय पोरिसी साढपोरिसी सूरे उग्गए पुरिमड्ढ अवड्ढमुट्ठिसहिय पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ [1]तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया

१ ठाम चौविहार करवो होय तो " एकलठाण पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं " ए प्रमाणे बोलवु.

गारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

## आयविल करी मुखशुद्धि कर्या पछी उठता तिविहारनु पच्चक्खाण

दिवसचरिम पच्चक्खाइ तिविहपि आहारं असण खाइमं साइम अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

## मुट्ठिसहियनु पच्चक्खाण

[2]मुट्ठिसहिय पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ ॥

१ साथे देसावगासिय पच्चक्खाण लेवु होय तो " देसावगासिय उवभोगपरिभोग पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरइ " ए पच्चक्खाण पण साथे बोलवु

२ गठसी, वेढसी आदि पच्चक्खाण करवु होय तो ते पाठ बोलवो.

## पाणहारनु पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिम पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

## पारणाना दिवसनु एकासणा बेसणानु पच्चक्खाण.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिय पोरिसि साढपोरिसी मुट्ठिसहिय पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहार असण पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेणं लेवालेवेण गिहत्थसंसट्ठेण उक्खित्तविवेगेण पडुच्चमक्खियेण पारिट्ठावणियागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणं [1]एगासणं बियासणं पच्चक्खाइ

१ जो बेसणुन करवु होय तो 'एगासण' बोलवुं नहि अने एकासणु करवु होय तो 'बियासण' बोलवुं नहि

अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेण पारिट्ठावणिया-गारेण महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण पाण-स्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेवेण वा ससित्थेणवा असित्थेण वा वोसिरइ,



## ॥ अथ श्री स्नात्र पूजानो विधि ॥

प्रथम त्रण गढने बदले त्रण बाजोठ मूकीने उपला बाजोठने मध्यभागे केशर (कुकुम)नो साथीओ करवो, अने तेना आगळ केशर (कुकुम)ना साथीआ चार करीने उपर अक्षत नाखवा तथा फळ मूकवा, वचला साथीआ उपर रुपानाणु मूकवु, अने चारे साथीआ उपर कलश स्थापवा. तेमा पचामृत करी जल भरवु तथा वचला साथीआ उपर थाळ मूकी केशरनो साथीओ करी अक्षत नाखी फळ मूकी नवकार त्रण गणी प्रभुने पधरावबा पछी बे सनाथीआओने ऊभा राखीने त्रण नवकार गणावना पछी प्रभुना जमणा पगना अगुठे कळशमाथी जल रेडवु, अने अगलूहणा त्रण करवा पछी केशरथी पूजा करी हाथ धूपीने सनाथीआना जमणा हाथमा केशरनो चाह्लो करवो पछी कुसुमाजलि (फुल) होय ते हाथमा आपवी, पछी नीचे प्रमाणे कहेवु, दीपक एक प्रभुनी जमणी बाजुए करवो

॥ पंडितश्रीविरविजयजी कृत स्नात्रपूजा ॥

॥ काव्य ॥

॥ द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

सरसशान्तिसुधारससागरं,
शुचितरं गुणरत्नमहाकरम् ॥
भविकपंकजबोधदिवाकरं
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

कुसुमाभरण उतारीने, पडिमा धरिय विवेक ॥
मज्जन पीठे थापीने, करीये जल अभिषेक ॥२॥

॥ गाथा ॥ आर्या गीति ॥

जिणजम्मसमय मेरु- सिहरंमि रयणकणयकलसेहिं ॥
देवासुरेहिं न्हविओ, ते धन्ना जेहिं दिट्ठोसि ॥ ३ ॥

॥ कुसुमांजलि ॥ ढाल ॥

निर्मलजल कलशे न्हवरावे, वस्त्र अमूलख अंग धरावे ॥ कुसुमांजलि मेहेलो आदि जिणंदा ॥ जिणंद-स्वरूपी अंग पखाली, आतम निर्मल हुइ सुकुमाली ॥ कु० ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥ आर्यागीति ॥

मचकुंदचपमालइ—कमलाइं पुप्फपंचवण्णाइ ॥
जगनाहन्हवणसमये, देवा कुसुमाजली दिति ॥५॥
॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ कुसुमाजलि ॥ ढाल ॥

रयण सिहासन जिन थापीजे, कुसुमाजलि प्रभु चरणे दीजे ॥ कुसुमाजलि मेलो शान्ति जिणदा॥६॥

॥ दोहा ॥

जिण तिहु कालय सिद्धनी, पडिमा गुण भडार ॥
तसु चरणे कुसुमाजलि, भविक दुरित हरनार ॥७॥
॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ कुसुमाजलि ॥ ढाल ॥

कृष्णागरु वर धूप धरीजे, सुगध कर कुसुमांजलि दीजे ॥ कुसुमाजलि म्हेलो नेमि जिणदा ॥ ८ ॥

॥ गाथा ॥ आर्या गीति ॥

जसु परिमलबल दहदिसि, महुकरझंकारसद्दसगीया ॥
जिणचलणोवरि मुक्का, सुरनरकुसुमाजलि सिद्धा ॥९॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ कुसुमाजलि ॥ ढाळ ॥

पास जिणेसर जग जयकारी, जल थल फुल उदक करधारी कुसुमाजलि म्हेलो पार्श्वजिणदा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मूके कुसुमाजलि सुरा, वीरचरण सुकुमाल ॥
ते कुसुमाजलि भविकना, पाप हरे त्रण काळ ॥ ११ ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ कुसुमाजलि ॥ ढाळ ॥

विविध कुसुम वर जाति गहेवी, जिनचरणे पण-मत ठवेवी ॥ कुसुमाजलि म्हेलो वीर जिणदा ॥१२॥

॥ वस्तु छद ॥

न्हवणकाले न्हवणकाले, देवदाणवसुमुच्चिय ॥ कुसुमांजलि तहिं सठविय, पसरत दिसि परिमल सुगंधिय ॥ जिणपयकमले निवडेइ, विग्घहर जस नाम मंतो ॥ अनत चउवीस जिन, वासव मलिय असेस॥ सा कुसुमाजलि सुहकरो, चउविह सघ विसेस ॥ कुसुमाजलि मेलो चउवीस जिणदा ॥१३॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥ कुसुमाजलि ॥ ढाळ ॥

अनत चउवीसी जिनजी जुहारुं, वर्त्तमानचउवीसी सभारु ॥ कुसुमाजलि मेलो चोवीशजिणदा ॥ १४॥

॥ दोहा ॥

महाविदेहे सप्रति, विहरमान जिन वीश ॥
भक्तिभरे ते पूजिया, करो सघ सुजगीश ॥ १५ ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

॥कुसुमाजलि ॥ढाळ॥

अपछरमडलि गीत उच्चारा, श्री शुभवीरविजय जयकारा ॥ कुसुमांजलि मेलो सर्व जिणंदा ॥१६॥

॥ इति श्री कुसुमाजलय' ॥

पछी स्नात्रीया त्रण समासमण देइ जगचिंतामणि चैत्यवदन करी "नमुथ्थुण" कही जयवीयराय पर्यंत कहे पछी हाथकलश धूपी मुखकोश बांधी कलश लेइ उभो रहीने कलश कहे ते ढाळ ॥

अथ कलश ॥ दोहा ॥

सयल जिणेसर पाय नमि, कल्याणकविधि तास ॥

वर्णवतां सुणता थका, सघनी पूगे आश ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ एक दिन अचिरा हुलरावती —ए देशी ॥

समकितगुणठाणे परिणम्या, वळी व्रतधर सयमसुख रम्या ॥ वीशस्थानकविधिये तप करी, इसी भावदया दिलमा धरी ॥१॥ जो होवे मुज शक्ति इसी, सवि जीव करु शासन रसी ॥ शुचिरस ढलते [त) तिहां चाधता, तीर्थंकर नाम निकाचता ॥ २ ॥ सरागथी संयम आचरी, वचमा एक देवनो भव करी ॥ च्यवी पन्नरक्षेत्रे अवतरे,मध्यखडे पण राजवी कुले ॥३॥ पटराणी कूखे गुणनीलो, जेम मानसरोवर हसलो ॥ सुखशय्याये रजनी शेषे, उतरता चउद सुपन देखे ॥४॥

॥ ढाळ स्वप्ननी ॥

पहेले गजवर १ दीठो, बीजे वृषभ २ पइट्ठो ॥ त्रीजे केशरी सिंह ३, चोथे लक्ष्मी ४ अबीह ॥१॥ पाचमे फूलनी माळा, ५ छट्ठे चद्र ६ विशाळा ॥ रवि रातो ७ ध्वज मोहोटो ८, पूरण कळश ९ नहीं छोटो ॥२॥ दशमे पद्म सरोवर १०, अगियारमें

रत्नाकर ११ ॥ भवन विमान १२ रत्नगजी, १३ अग्नि-शिखा धूमवर्जी १४ ॥३॥ स्वप्न लही जइ रायने भाषे, राजा अर्थ प्रकाशे ॥ पुत्र तीर्थंकर त्रिभुवन नमशे, सकल मनोरथ फळशे ॥४॥

॥ वस्तु छद ॥

अवधि नाणे अवधि नाणे, उपना जिनराज ॥ जगत जस परमाणुआ, विस्तर्या विश्वजतु सुखकार ॥ मिथ्यात्व तारा निर्बला,धर्मउदय परभात सुदर ॥ माता पण आणदिया, जागती धर्म विधान ॥ जाणती जगतिलक समो, होशे पुत्र प्रधान ॥१॥

॥ दोहा ॥

शुभलग्ने जिन जनमिया, नारकीमा सुख ज्योत ॥
सुख पाम्या त्रिभुवन जना, हुओ जगत उद्योत ॥१॥

॥ढाळ॥ कडखानी देशी ॥

सांभळो कळश जन्म, महोत्सवनो इहा ॥छप्पन कुमरी दिशि, विदिशि आवे तिहा ॥ माय सुत नमिय आणद अधिको धरे ॥ अष्ट सवर्त्त, वायुथी कचरो हरे ॥१॥ वृष्टि गधोदके, अष्ट कुमरी करे ॥ अष्ट कलश

भरे, अष्ट दर्पण धरे ॥ अष्ट चामर धरे, अष्ट पंखा लही ॥ चार रक्षा करी, चार दीपक ग्रही ॥२॥ घर करी केळना, माय सुत लावती ॥ करण शुचिकर्म, जळ, कलशे न्हवरावती ॥ कुसुम पूजी अलकार पहेरावती ॥ राखडी बाधी जइ, शयन पधरावती ॥३॥ नमिय कहे माय तुज, बाल लीलावती ॥ मेरु रवि चद्र लगे, जीवजो जगपति ॥ स्वामिगुण गावती, निज घर जावती ॥ तिण समे इंद्र, सि-हासन कपती ॥४॥

॥ ढाळ ॥ एकवीशानी देशी ॥

जिन जन्म्याजी जिण वेला जननी घरे ॥ तिण वेलाजी इद्रसिहासन थरहरे ॥ दाहिणोत्तरजी, जेता जिन जनमे यदा ॥ दिशिनायकजी, सोहम ईशान बेहु तदा ॥१॥

॥ त्रूटक ॥

तदा चिंते इद्र मनमा, कोण अवसर ए बन्यो ॥ जिनजन्म अवधिनाणे जाणी, हर्ष आनद ऊपन्यो ॥१॥ सुघोष आदे घटनादे, घोषणा सुरमें करे ॥ सवि देवि देवा जन्ममहोत्सवे, आवजो सुरगिरिवरे ॥२॥

॥ढाल॥ पूर्वली ॥

एम साभलीजी, सुरवर कोडि आवी मले ॥ जन्ममहोत्सवजी, करवा मेरु उपर चले ॥ सोहमप तिजी, बहुपरिवारे आवीया ॥ माय जिननेजी, वांदी प्रभुने वधावीया ॥३॥

॥ त्रुटक ॥

वधावी बोले हे रत्नकुक्षि धारिणि ? तुज सुततणो ॥ हु शक्र सोहम नाम करशु, जन्म उत्सव अति घणो ॥ एम कही जिन प्रतिबिंब थापी, पंच रूपे प्रभु ग्रही ॥ देव देवी नाचे हर्ष साथे, सुरगिरि आव्या वही ॥४॥

॥ढाळ॥ पूर्वली ॥

मेरु ऊपरजी, पांडुकवनमें चिहु दिशे ॥ शिला उपरजी सिंहासन मन उल्लसे॥ तिहा बेसीजी, शक्रे जिन खोळे धर्या ॥ हार त्रेशठजी, बीजा तिहां आवी मळ्या ॥५॥

॥ त्रुटक ॥

मळ्या चोसठ सुरपति तिहा, करे कलश अड जातिना॥ मागधादि जल तीर्थऔषधि, धूप वली बहु भातिना॥ अच्युतपतिए हुकम कीनो, साभलो देवा सवे॥ क्षीरजलधि गगानीर लावो, झटिति जनममहोत्सवे॥ ६॥

॥ढाळ ॥ विवाहलानी ॥

सुर सांभलीने सञ्चरीया, मागध वरदामे चलीया ॥ पद्मद्रह गगा आवे, निर्मल जल कलश भरावे ॥ १ ॥ तीरथ फल ओपधि लेता, वली खीरसमुद्रे जाता ॥ जल कलशा बहुल भरावे फूल चगेरी थाल लावे ॥२॥ सिंहासन चामर धारी,धूपधाणा रकेबी सारी ॥ सिद्धात भाख्या जेह,उपकरण मिलावे तेह ॥३॥ ते देवा सुरगिरि आवे,प्रभु देखी आनद पावे ॥ कलशादिक सहु तिहां ठावे, भक्ते प्रभुना गुण गावे ॥४॥

॥ ढाळ ॥ राग धन्याश्री ॥

आतम भक्ति मळ्या केइ देवा, केता मित्तनुजाइ ॥ नारी प्रेर्या वळी निज कुलवट, धर्मी धर्म सखाइ ॥ जोइस व्यतर भुवनपतिना, वैमानिक सुर आवे ॥ अच्युतपति हुकमे धरी कळशा, अरिहाने न्हवरावे ॥ आ० ॥१॥ अडजाति कळशा प्रत्येके, आठ आठ सहस प्रमाणो ॥ चउसट्ठ सहस हुआ अभिपेके, अढीसें गुणा करी जाणो ॥ साठ लाख उप्पर एक कोडि, कळशानो अधिकार ॥ बासठ इद्रतणा तिहा बासठ,

लोकपालना चार ॥ आ० ॥ २ ॥ चद्रनी पक्ति छासठ छासठ, रवि श्रेणि नरलोको ॥ गुरुस्थानक सुर केरो एकज, सामानिकनो एको ॥ सोहमपति ईशान पतिनी इंद्राणीना सोल ॥ असुरनी दश इंद्राणी नागनी, वार करे कल्लोल ॥ आ० ॥ ३ ॥ ज्योतिष व्यतर इद्रनी चउ चउ, पर्षदा त्रणनो एको ॥ कटकपति अगरक्षक केरो, एक एक सुविवेको ॥ परचूरण सुरनो एक छेल्लो, ए अढीसें अभिषेको ॥ ईशानइद्र कहे मुझ आपो, प्रभुने क्षण अतिरेको ॥ आ० ॥ ४ ॥ तव तस खोळे ठवी अरिहाने, सोहमपति मनरगे ॥ वृषभरूप करी शृग जळे भरी, न्हवण करे प्रभु अगे ॥ पुष्पादिक पूजीने छाटे, करी केसर रंगरोले ॥ मगळदीवो आरति करता, सुरवर जय जय बोले ॥ आ० ॥ ५ ॥ भेरी भूगळ ताल वजावत, वळिया जिन कर धारी ॥ जननीघर माताने सोंपी, एणिपरे वचन उच्चारी ॥ पुत्र तुमारो स्वामि हमारो, अम सेवक आधार ॥ पच धाव्य रंभादिक थापी, प्रभु खेलावण

हार ॥ आ० ॥ ६ ॥ बत्रीश कोडि कनक मणि माणिक, वस्त्रनी वृष्टि करावे ॥ पूरण हर्ष करेवा कारण, द्वीप नदीसर जावे ॥ करीय अट्ठाइ उत्सव देवा, निज निज कल्प सधावे ॥ दीक्षा केवलने अभिलाषे, नित नित जिन गुण गावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ तपगछ ईसर सिंह सूरीसर, केरा शिष्य वडेरा ॥ सत्यविजय पन्यासतणे पद, कपूरविजय गंभीरा ॥ खिमाविजय तस सुजसविजयना, श्री शुभविजय सवाया ॥ पंडित वीरविजय शिष्ये जिन, जन्म महोत्सव गाया ॥ आ० ॥ ८ ॥ उत्कृष्टा एकशोने सित्तेर, संप्रति विचरे वीश ॥ अतीत अनागत काळे अनंता, तीर्थंकर जगदीश ॥ साधारण ए कळश जे गावे, श्री शुभवीर सवाइ ॥ मंगळलीला सुखभर पावे, घर घर हर्ष वधाइ ॥ आतम० ॥ ९ ॥

॥ इति पंडितश्रीवीरविजयजी कृत स्नात्र पूजा समाप्त ॥

अहीं कळशाभिषेक करीये. पछी दुध, दहि, घृत जळ अने शर्करा ए पंचामृतनो पखाल करीने पछी पूजा करीने फूल चढा वीये पछी लुण उतारी आरती उतारवी पछी मंगळदीवो करवो पडदो राखी स्नात्रीआओए पोताना नव अंग [illegible] करवा. पछी [illegible] नारवी मगळदीवो [illegible]

॥ अथ लूण उतारण ॥

लूण उतारो जिनवर अगे, निर्मळ जळधारा मन गे ॥ लूण० ॥ १ ॥ जिम जिम तडतड लूणज फूटे, तेम तिम अशुभ कर्मबध त्रूटे ॥ लूण० ॥ २ ॥ नयण सलूणां श्री जिनजीनां, अनुपम रूप दयारस भीना ॥ लूण० ॥३॥ रूप सलूणु जिनजीनु दीसे, लाज्यु लूण ते जळमा पेसे ॥ लूण० ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ जलधारा, जलण खेपवीये लूण उदार ॥ लूण० ॥५॥ जे जिन उपर दुमणो प्राणी, ते एम थाजो लूण ज्युं पाणी ॥ लूण० ॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुदरु सुगधे, धूप करीजे विविध प्रबधे ॥ लूण० ॥ ७ ॥ इति ॥

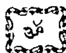
॥ अथ आरति ॥

विविध रत्नमणि जडित रचावो, थाल विशाल अनोपम लावो ॥ आरति ऊतारो प्रभुजीनी आगे, भावना भावी शिवसुख मांगे ॥ आ० ॥ १ ॥ साल चौद ने एकवीश भेवा, त्रण त्रणवार प्रदक्षिणा देवा आ० ॥ २ ॥ जिमजिम जलधारा देइ जपे, तिम तिम

दोहग थरहर कपे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बहु भव सचित्त पाप पणासे, द्रव्यपूजाथी भाव उल्लासे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चौद भुवनमा जिनजीने तोले, कोइ नहीं आरति इम बोले ॥ आरति० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मगळदीवो ॥

दीवो रे दीवो मंगळिक दीवो, भुवन प्रकाशक जिन चिरजीवो ॥ दी० ॥ १ ॥ चद्र सूरज प्रभु तुम मुख केरा, लूंछण करता दे नित्य फेरा ॥ दी० ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी, मगलदीप करी दिये भमरी ॥ दी० ॥ ३ ॥ जिम जिम धूपघटी प्रगटावे, तिम तिम भवना दुरित दझावे ॥ दी० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमांजलि चदन, धूप दीप फल नैवेद्य वंदन ॥ दी० ॥ ५ ॥ एणीपरे अष्टप्रकारी कीजे, पूजा स्नात्र महोत्सव पभाणीजे ॥ दीवो रे० ॥ ६ ॥



# ॥ अथ श्री नवपद पूजा विधि ॥

आ पूजामा जे जे चीजो अवश्य जोइये, तेमानी केटलीएक चीजोना नाम लखीए छीए —

दुध, दधि, घृत, शर्करा, शुद्धजळ, ए पचामृत तथा केशर, सुगधी, चदन, कपूर, कस्तुरी, अमर, रोली, मौली, छुटा फुल, फूलोनी माळा, फुलोना चद्रुवा, धूप, तदुल प्रमुख नव जातिना धान्य, नव प्रकारना नैवेद्य, नव प्रकारना फळ, नव प्रकारनी पक्व वस्तु, मिश्री, पतासा, ओला प्रमुख, तथा अगलूहणाने वास्ते सफेद वस्त्र, अने पहेराववाने वास्त उत्तम रेशमी वस्त्र, वासक्षेप, गुलाबजळ, अत्तर, इत्यादिक चीजा पण नव नव नालीना कळश, नव रकेबी, परात (त्रास), तसला, आरती, मगलदीपक, भगवाननी आगी, समवसरण, इत्यादिक सर्व वस्तु प्रथमथी ठीक करीने राखवी ए थकी पूजामा विघ्न न होय ए सक्षेप विधि कह्यो. विशेष विधि गुरुथकी जाणवो

## ॥ कलश विधि ॥

चैत्र तथा आश्विन मासमा ए पूजाओ भणावे, तेवारे नव स्नात्रिया करिये, महोटा कळश प्रमुखमा पचामृत भरिये, स्थापनामा श्रीफळ तथा रोकड नाणु धरिये, केशरथी तिलक करे,

करुणदोरो हाथे बाधे, डाबा हाथमा स्वस्तिक करीने विधिसयुक्त स्नात्र भणावे

प्रथम श्री अरिहंतपद श्वेतवर्णे छे माटे तादुल, ( चोखा ), धूप, दीप, नैवेद्य प्रमुख अष्ट द्रव्य, वासक्षेप, नागरवेल प्रमुखना पान, रकेबीमा धरीने ते रकेबी हाथमा राखे नव कळशने मौलीसूत्र बांधी, कुंकुमना स्वस्तिक करी, पचामृतथी भरीने ते कळशो हाथमा लेइ, प्रथम श्री अरिहतपदनी पूजा भणे ते सपूर्ण भणी रह्या पछी महोटी परातमा ( थालमा ) प्रतिमाजीने पधरावे पछी "ॐ ह्रीँ नमो अरिहताण " ए प्रमाणे कहेतो थको, श्री अरिहतपदनी पूजा करे अष्टद्रव्य अनुक्रमे चढावे इति प्रथमपद पूजा विधि

२ बीजु सिद्धपद रक्तवर्णे छे, माटे घउ रकेबीमा धरी श्रीफळ तथा अष्ट द्रव्य लइने नव कळश पचामृतथी भरीने बीजी पूजा भणे ते सपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीँ नमो सिद्धस्स ' एम कही कळश ढोळे, अष्टद्रव्य चढावे. इति द्वितीयपदपूजा विधि

३ त्रीजु आचार्यपद पीळे वर्णे छे, माटे चणानी दाळ, अष्ट द्रव्य श्रीफळ प्रमुख लइ, नव कळश पचामृतथी भरीने त्रीजी पूजानो पाठ भणे. ते सपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीँ नमो आयरियाण" एम कही कळश ढोळे, अष्ट द्रव्य चढावे इति तृतीयपदपूजा विधि

४ चोथु उपाध्यायपद नील वर्णे छे, माटे मग प्रमुख तथा अष्ट द्रव्य लइने पूर्वोक्त विधिये पूजा भणी सपूर्ण थयाथी

"ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाण" एम कही कळश ढोळे, अष्ट द्रव्य चढावे इति चतुर्थपदपूजा विधि.

५ पाचमु श्री साधुपद श्यामवर्ण छे, माटे अडद प्रमुख लेइ बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करी पूजा भणे ते सपूर्ण थयाथी "ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूण" कहे इति पचमपद पूजा विधि.

६ तेमज छठ्ठु दर्शनपद श्वेतवर्ण छे, माटे तदुल प्रमुख लेइ "ॐ ह्रीँ नमो दसणस्स" कहेवु, बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो इति षष्ठपदपूजा विधि.

७ सातमु ज्ञानपद श्वेतवर्ण छे, माटे चावल प्रमुख लेइ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स" कहेवु बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो इति सप्तमपदपूजा विधि,

८ आठमु चारित्रपद पण श्वेतवर्ण छे, माटे चोखा प्रमुख "ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स" कहेवु बीजो सर्व पूर्वोक्त विधि करवो. इति अष्टमपदपूजा विधि

९ नवमु तपपद श्वेतवर्ण छे, माटे चोखा प्रमुख लई पूर्वोक्त विधि करीने " ॐ ह्रीँ नमो तवस्स " कही कळश ढाळे अष्ट द्रव्य चडावे पछी अष्टप्रकारी पूजा करे, आरति करे, इतिश्री नवमपदपूजा विधि

॥ इति नवपदपूजा विधि समाप्त ॥

श्रीतार्किकचक्रचक्रवर्ति-न्यायविशारद-न्यायाचार्य
महामहोपाध्याय—
॥ श्रीयशोविजयजीगणिजीविरचित्त
श्रीनवपदजीनी पूजा ॥

॥ प्रथम श्री अरिहंतपदपूजा प्रारंभ ॥

काव्य—उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण,
सप्पाडिहेरासणसंठियाण ॥
सद्देसणाणंदियसज्जणाण,
नमो नमो होउ सया जिणाण ॥१॥

श्रीज्ञानविमलसूरिकृत स्तवना ॥

॥ भुजगप्रयातवृत्तम् ॥

नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान-प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म

बीजी मतनों वधारो—
१ परम मन प्रणमी करी तास धरी उर ध्यान ।
अरिहंत पद पूजा करो निज निज शक्ति प्रमाण ॥
(बाकी सरखु)

चकचूर जेणे, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाळे, सदा वासियो आतमा तेणे काळे ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महा पाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्यां घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गा ॥ जगत् पच कल्याणके सौरय पा नमो तेह तीर्थकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

---

श्रीदेवचन्द्रजीकृत स्तवना ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

तीर्थपति अरिहा नमु, धर्म धुरधर धीरोजी ॥ देशना अमृत वरसता, निजवीरज वडवीरोजी ॥ १ ॥ (उलालो) वर अखय, निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता ॥ निज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरणथिरता वासता ॥ जिन नामकर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जगजतु करुणावंत भगवंत, भविकजनने क्षोभता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाळ ॥ श्रीपाळना रासनी ॥

त्रीजे भव वरस्थानक तप करी, जेणे बाध्युं जिन नाम ॥ चोसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्रपद वंदो, जेम चिर-काळे नदो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पण अजवाळु ॥ सकळ अधिक गुण अतिशय धारी, ते जिन नमी अघ टाळु रे ॥ भविका ॥ सि० ॥२॥ जे तिहु नाण समग्ग उप्पन्ना, भोगकरमक्षीण जाणी ॥ लइ दीक्षा शिक्षा दिये जनने, ते नमिये जिननाणीरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहिये, नियामक स-त्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमिये उत्साहरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पात्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमिये प्राणी रे ॥ भविका ॥ सि-द्धचक्र० ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ श्रीपालना रासनी ॥

अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे।

पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥६॥ त्रिभागोनदेहावगाहा-
त्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादि लेशा ॥ सदानद

करजु स्मरण ध्यान तसु, प्रतिमा वन्दन तास ।
नाम जाप पूजन न्हवण करीये धरी उल्लास ॥३॥
अवर्णवाद आशातना, वरजी नर सुविवेक ।
सदा भक्ति करवी भली, धरी मनमाही टेक ॥ ४ ॥
अरिहत पण जेहने नमे, आठ कर्म कृतनाश ।
पनर भेद छे सिद्धना, कुण समरे नहि तास ॥ ५ ॥
सुणाये भवसहस (भ्रमण) थी, सिद्ध भणी नमस्कार ।
भावे जेह करे भविक, बोधि लाभ विस्तार ॥ ६ ॥
सुरतरु असुरादिक तणा, सुख सघळा ए मेल्य ।
तेह थकी तिन सुख तणी, अनन्ती गुणी छे वेली ॥७॥
जिणे अमृत रस चाखीयो बीजे रस न सुहाय ।
तिम शिवसुख जाण्यो जिणे, बीजा ना वेदाय ॥ ८ ॥
जीहा एक सिद्धातमा तिहा अनता होय ।
पण अमूर्तपणा थकी, बाधा न लहे कोय ॥ ९ ॥
सिद्ध तणी अवगाहना, त्रिणसया तेत्रीस ।
धनुष त्रिभागे अधिक, कही उत्कृष्टी इश ॥१०॥
उणा हाथ त्रिभागथी च्यार हाथ गणी लेय ।
सिद्ध तणी अवगाहना, मध्यम भाखी एह ॥११॥

सौम्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादिस्वरूपा ॥७॥

॥ढाळ॥ उल्लालानी देशी ॥

सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपोजी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्तिभूपोजी ॥३॥ [उलालो] जेह भूप आतम सहजसंपत्ति,शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल भावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परिणति, सिद्धसाधन परभणी ॥ मुनिराज मानसहंस समवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥४॥

॥ पूजा ढाळ ॥

समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते

जघन्य सिद्ध अवगाहना, अङ्गुल एक हाथ ।
कूर्मा पुत्रादिक तणा, इम भणी श्री जगनाथ ॥१२॥
सिद्ध ध्यानथी जीवना, जाये दुष्कृत कोटि ।
जीम अमृतना बिन्दुथी, जाय तीव्र विषचोटि ॥१३॥
प्रतिबिंबित निज आतमसु, सिद्ध निहाळे जेह ।
त्रिजग पूज्यपद संपदा, ततखिण पामे तेह ॥

भविका ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारज पद योग ॥ जे उवज्झाय सदा ते नमता, नावे भवभय सोग रे ॥ भविका ॥ सि० ॥१९॥ बावना चदन रस सम वयणे, अहिततात सवि टाळे ते उवज्झाय नमीजे जे वळी, जिनशासन अजुवाळे रे॥ भविका॥ सिद्धचक्र पद वदो ॥२०॥

॥ ढाळ ॥

तपसज्झाये रत सदा, द्वादश अगनो ध्याता रे
उपाध्याय ते आतमा, जगवधव जगभ्राता रे॥५॥ वीर०॥

॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्ता ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम श्री साधुपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्य ॥

साहूण ससाहिअ सजमाण ॥
नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥३॥

---

अन्य मतनो वधारो—

१ साहूण० तिगुत्तिगुत्ताण समाहियाण, मुणीणमाणदपयट्ठियाण ॥१॥

करे सेवना सूरिवायग गणिनी, करु वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंचसमिति त्रिगुता,

२ मोक्षमारग साधन भणी, सावधान थया जेह
ते मुनिवर पद वदता, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

(राग सरखु)

शान्तदान्त अन्तर्मुहि, निर्विकार परिणाम
क्रियावत सयम गुणे, चरण करण अभिराम ॥ १ ॥
दयावत षट् कायना, मैत्री पवित्रित काय,
अप्रतिबध वायु परे, करे विहार अमाय ॥ २ ॥
ध्यान करे त्रिकरणपणे, ते देखी मुनिराय,
परम प्रमोदे प्रणमीये, पूज्य तणा त्या पाय ॥ ३ ॥
जननी पुत्र शुभ करे, तिम ए प्रवचण माय,
चारित्र गुणगणवर्धिनी, निर्मल शिव सुखदाय ॥ ४ ॥
भाव अयोगी करण रुचि, मुनिवर गुप्ति वरत,
जो गुप्ते न रही शके, तो समिति विचरत ॥ ५ ॥
गुप्ति एक सवरमयी, औत्सर्गिक परिणाम,
सवर निर्जर समितिथी, अपवादे गुणधाम ॥ ६ ॥
द्रव्ये द्रव्य चरणता, भावे भावचरित्र,
भावदृष्टि द्रव्यक्रिया, करता शिवसपत्त ॥ ७ ॥
आतमगुण रागभावथी, जे साधक परिणाम,
समिति गुप्ति ते जिन कहे, आतमसिद्धि शिवठाम ॥ ८ ॥

त्रिगुप्ते नहीं कामभोगेपु लिप्ता ॥ १२ ॥ वळी वाह्य अभ्यतर ग्रंथि टाळी, होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाळी॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाळी, नमु साधुने तेह निज पाप टाळी ॥१३॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

सकल विपय विप वारीने, नि कामी नि'सगीजी ॥ भवदवताप शमावता, आतमसाधन रंगीजी ॥९॥ [उलालो] जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म जीपे, नैव छीपे परभणी ॥ मुनिराज करुणासिधु त्रिभुवन, वधु प्रणमु हित भणी ॥१०॥

निश्चय चरण रुचि थइ, समिति गुप्तिधर साधु;
परम अहिंसक भावथी, आराधे निरुपाधि ॥ ९ ॥
परम महोदय साधवा, जेह थया उजमाळ ॥
श्रमण भिक्षु माहणय, गाउ तस गुणमाळ ॥ १० ॥
जे चारित्रे निर्मळा, ते पचापण सिंह;
विपय कपाय ते गजीया, ते वदु निशदीन ॥ ११ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

जेम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तस न उपावे। लेइ रस आतम संतोषे, तेम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २१ ॥ पंच इंद्रियने जे नित्य जीपे षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जन्म पवित्र रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाळे, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमीये जो प्रगटे, पूरवपुण्य अंकूरा रे ॥ भविका ॥ सि० ॥२४॥ सोना-तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमिये, देश काल अनुमाने रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाळ ॥

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचेरे ॥
साधु सुधा ते आतमा,शुं मूंडे शुं लोचे रे ॥६॥ वीर०॥

---

॥ इति पंचम साधुपदपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥

## ॥ अथ षष्ठ श्री सम्यग्दर्शनपदपूजा प्रारभ ॥

॥ काव्य ॥

जिंणुत्ततत्ते रुइलरक्खणस ॥
नमो नमो निम्मलदसणस्स ॥

विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टळे जे अनादि अच्छे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी

१ बीजी मतनो वधारो—

१ जिणुत्त० "मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स । मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥ १ ॥

२ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्वतणी परतीत ।
ते सम्यग्दर्शन सदा, आदरीये शुभ रीत ॥ २ ॥

( बाकी सरखु )

जेहना जेहवा गुण हुवे, जाणे तास स्वरूप,
देव धर्मगुरुने विषे, सम्यक् श्रद्धारूप ॥ १ ॥
अरिहत देव सुसाधुगुरु, केवलिभाषित धर्म,
तीन तत्त्व ए सद्दहे, ते सम्यक्त्व अकर्म ॥ २ ॥
ते सम्यक्त्व अनेकधा, होय परिणाम वशेण,
इगदुतिविहा चउविहा, पचविह दशविधश्रेणि ॥ ३ ॥

श्रद्धान, कहिये दर्शन तेह परम निधान ॥१४॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञान रूपं, चरित्र विचित्र भवारण्यकूप ॥ प्रकृति सातने उपशमे क्षय ते होवे, तिहा आपरूपे सदा आप जावे ॥१५॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

सम्यग्दर्शन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत स्वरूपोजी॥ जसु निरधार स्वभाव छे, चेतनगुण जे अरूपोजी॥११॥ (उलालो) जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर-ईहा टळे॥ निजशुद्धसत्ता प्रगट अनुभव, करणरुचिता उच्छळे ॥ बहु मान परिणति वस्तुतत्त्वे, अहव तसु कारणपणे ॥ निज साध्यदृष्टे सर्वकरणी, तत्त्वता सपत्ति गणे ॥ १२ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

शुद्धदेव गुरुधर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम ॥

---

धर्मतत्त्व रुचि एक विधि, दुविह निसर्ग उपदेश
क्षायिक क्षायोपशमिक वळी, औपशमिक तृतीय विशेष ॥ ४ ॥
कीजे साम्वादन सहित, थाये चार ते वार,
वेदक समन्वित युक्तस्यु, थाय पच प्रकार ॥ ५ ॥

जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यगूदर्शन नाम रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २६ ॥ मलउपशम क्षय उपशमक्षयथी, जे होय त्रिविध अभग ॥ सम्यगूदर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे दृढरग रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २७ ॥ पच वार उपशमिय लहीजे, क्षयउपशमिय असख ॥ एक वार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमिये असंख रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फळियो ॥ सुख निवाण न जे विण लहीये, समकितदर्शन वलियो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २९ ॥ सडसट्ठ बोले जे अलकरियु, ज्ञानचारित्रनु मूल ॥ समकितदर्शन ते नित्य प्रणमु, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३० ॥

॥ ढाळ ॥

शम सनेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे रे॥ दर्शन तेहिज आतमा, शु होय नाम धरावे रे ॥ ७ ॥ वीर० ॥

---

॥ इति षष्ठ सम्यग्दर्शनपदपूजा समाप्त ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तम श्री सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाणसंमोहतमोहरस्स॥
नमो नमो नाणदिवायरस्स॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावर्ण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणिये वस्तु षड्–द्रव्यभावा, न हुये वितत्था निजेच्छा स्वभावा ॥ १६ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वळी ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वालप्रदीपे ॥ १७ ॥

२ बीजी मतनो वधारो—

१ अन्नाण॰ पचप्पयारस्सुवगारस्स, सत्ताण सव्वत्थपगासगस्स ॥

२ सप्तम पदश्रीज्ञान छे, सिद्धचक्र तपमाय
आराधी जे शुभ मने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥ २ ॥
( बाकी सरखु )

सदनुष्ठान सपूर्ण फल, तास प्रदायक एह
तेह निरन्तर भावशु, ज्ञान उपयोग करेह ॥ १ ॥
वर्ष कोडि बहु नारकी, कर्म खपावे जेह,
ज्ञानी श्वासोश्वासमा, तिन गुप्ति शु तेह ॥ २ ॥

जेह पामीजे तेह नमीजे, सम्यगदर्शन नाम रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २६ ॥ मलउपशम क्षय उपशमक्षयथी, जे होय त्रिविध अभग ॥ सम्यगदर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे दृढरग रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २७ ॥ पच वार उपशमिय लहीजे, क्षयउपशमिय असख ॥ एकवार क्षायिक ते समकित, दर्शन नमिये असंख रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २८ ॥ जे विण नाण प्रमाण न होवे, चारित्र तरु नवि फळियो ॥ सुख निवाण न जे विण लहीये, समकितदर्शन बलियो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ २९ ॥ सडसठ बोले जे अलकरियुं, ज्ञानचारित्रनु मूल ॥ समकितदर्शन ते नित्य प्रणमु, शिवपंथनु अनुकूल रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३० ॥

॥ ढाळ ॥

शम सवेगादिक गुणा, क्षयउपशम जे आवे रे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शु होय नाम धरावे रे ॥ ७ ॥ वीर० ॥

॥ इति षष्ठ सम्यग्दर्शनपदपूजा समाप्त ॥ ६ ॥

## ॥ अथ सप्तम श्री सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाणसमोहतमोहरस्स ॥
नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावर्ण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणिये वस्तु षड्-द्रव्यभावा, न हुये वितथा निजेच्छा स्वभावा ॥ १६ ॥ होय पञ्च-मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वळी ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वातप्रदीपे ॥ १७ ॥

---

२ बीजी मतनो वधारो—

१ अनाण० पचप्पयारस्सुगारस्स, सत्ताण सव्वत्थपगासगस्स ॥

२ सप्तम पदश्रीज्ञान छे, सिद्धचक्र तपमाय
आराधी जे शुभ मने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥ २ ॥
( वाकी सरखु )

सदनुष्ठान सपूर्ण फल, तास मदायक एह
तेह निरन्तर भावथु, ज्ञान उपयोग करेह ॥ १ ॥
वर्ष कोडि वहु नारकी, कर्म खपावे जेह,
ज्ञानी श्वासोश्वासमा. तिन गप्ति श तेह ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

भव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपरप्रकाशक भावे

छठ्ठ अठ्ठम दश दोयलसे, करे अज्ञानी शोधि;
बहु गुणे जोय एहथी, ज्ञाने युक्ति विशोधि ॥ ३ ॥
अतर तत्त्व विचारणा, सम्यग्-ज्ञान सयोग,
दुर्जय कर्म तणो सही, तत्क्षण होय वियोग ॥ ४ ॥
जिनवर उक्तक्रिया विषे, ज्ञान तणो उपयोग,
महानिर्जरा कारणे, कहे विशुद्ध वियोग ॥ ५ ॥
अग अनग भेदे करी, श्रुतना दोय प्रकार;
अग आचारागादि तिहा, अनग वळी अवधार ॥ ६ ॥
आवश्यक उत्तराध्ययन, कल्पाध्ययनादीनु,
उपाग कहे सहु ग्रहे, सूत्राथ तल्लीन ॥ ७ ॥
ज्ञान अपूर्व ग्रह्या थका, कर्मनिजरा होय,
तत्त्वातत्त्व यथार्थथी, समकित निर्मल जोय ॥ ८ ॥
ज्ञानना कारण विना, ज्ञान महातमभूर,
भव समुद्र तारण भणी, ज्ञाननाव भरपूर ॥ ९ ॥
सूक्ष्म बादर लोकमा, जाणे सघळा भाव,
ज्ञान शिखवो ते भणी, जे होवे चतुरा जीव ॥ १० ॥
ज्ञान परम गुण जीवनो, ज्ञान भरण प्रद्योत,
मिथ्यामति तम भेदवा, ज्ञान महा उद्योत ॥ ११ ॥

पर्यय धर्म अनतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १३ ॥
उलालो ॥ जे मुख्यपरिणति सकलज्ञायक, बोध भा-
वविलच्छना ॥ मति आदि पच प्रकार निर्मळ, सिद्ध
साधन लच्छना ॥ स्याद्वादसगी तत्त्वरंगी, प्रथम भे-
दाभेदता ॥ सविकल्प ने अविकल्प वस्तु, सकल संशय
छेदता ॥ १४ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये [illegible] ॥
कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये ज्ञान [illegible] आ
धार रे ॥ भविका ॥ सि० [illegible] ज्ञान ने
पछी अहिंसा,श्री सिद्धाते [illegible] ज्ञान
म निंदो, ज्ञानीये शिवसुख [illegible] ॥ सि०
॥ ३२ ॥ सकल क्रियानु [illegible] मूळ जे
कहिये ॥ तेह ज्ञान नित [illegible] ते विण [illegible]
केम रहिये रे ॥ भविका ॥ [illegible] ॥ पंच [illegible]
माहि जेह सदागम, [illegible] तेह ॥
परे [illegible]

भविका ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिषु, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञान मुज शुद्ध रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ३५ ॥

॥ ढाळ ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षयउपशम तस थाय रे ॥ तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे ॥८॥ वीर०॥

॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा समाप्ता ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम श्री चारित्रपदपूजा प्रारंभ ॥

॥ काव्य ॥

आराहिअखंडिअसक्किअस्स ॥
नमो नमो संजमवीरिअस्स ॥

---

बीजी मतनो वधारो—

१ आरा० सम्भावणासंगविवड्ढियस्स निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ।

(बाकी सरखुं)

वळी ज्ञानफल चरण धरीये सुरंगे, निराशसता द्वाररोध प्रसंगे ॥ भवाभोधिसंतारणे यानतुल्य, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १८ ॥ होये जास महिमाथकी रंक राजा, वळी द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वळी पापरूपोऽपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ १९ ॥

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

चारित्रगुण वळी वळी नमो, तत्त्वरमण जसु मूळोजी

२ अष्टमपद चारित्रने पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रस मिले, पातक होय उच्छेद ।
एहवा रिण बहुपापने, उद्धरवा देहत्थ ।
भव्यजीव जिनराजनी, छे एक शुद्धि अवत्थ ॥ १ ॥
ते दुःखवल्ली वनदहन, ते शिवतरु सुखकंद,
ते कुलधर गुणगणतणु, ते टाळे भवफंद ॥ २ ॥
ते आकर्षण सिद्धिनुं, भवनिष्कर्षण तेह,
ते कषायगिरि भेदपवि, तो कषाय उच्छेद ॥ ३ ॥
दशविध मुनिवर धर्म जे, ते कहीये चारित्र,
द्रव्य भावथी-आचर्या, तेहना जन्म पवित्र ॥ ४ ॥

॥ पररमणीयपणुं टळे, सकलसिद्ध अनुकूलोजी ॥१५॥
(उलालो) प्रतिकूळ आश्रव त्याग संयम, तत्त्वस्थिरता दममयी ॥ शुचि परम खांति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुप अमल उज्ज्वल, कामकश्मल चूर्णना ॥ २ ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

देश विरतिने सर्वविरति जे, गृहि यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतु, कीजे तास प्रणामरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्ती पण वरियो ॥ ते चारित्र अक्षयसुख कारण, ते में मनमांहे धरियो रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३७ ॥ हुआ रांक पण जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरण शरण चरण ते वंदू, पूर्युं ज्ञान आनंदे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ३८ ॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भविका ॥

सि० ॥ ३९ ॥ चय ते आठ करमनो सचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते भाख्यु, ते वदु गुणगेह रे ॥ भविका ॥ सिद्धचक्र० ॥ ४० ॥

॥ ढाळ ॥

जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर० ॥

---

॥ इति अष्टम चारित्रपदपूजा समाप्ता ॥ ८ ॥

---

॥ अथ नवम श्री तप पदपूजा प्रारंभ· ॥

॥ काव्य ॥

कम्मद्दुमोम्मूलणकुजरस्स ॥
नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥

---

बीजी मतनो वधारो—

१ कम्म० अणेगलद्धीणनिबधणस्स दुस्सज्झअत्थाण य साहणस्स ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इयनवपयसिद्ध, लद्धिविज्जासमिद्ध ॥
पयडियसरवग्ग, ह्रींतिरेहासमग्ग ॥
दिसिवइसुरसारं, खोणिपीढावयार ॥
तिजयविजयचक्कं, सिद्धचक्क नमामि ॥६॥

त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाळे, निकाचितपणे बाधियां तेह बाळे ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अतर दुभेदे, क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥२०॥ होये जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवाछकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमतिनी जिम सकेते ॥२१॥ इम नवपद ध्यानने जेह ध्यावे,

२ कर्मकाष्ठ प्रतिजाल्वा परतक्ष अग्नि समान ।
ते तप पद पूजो सदा, निर्मल धरीये ध्यान ॥

( बाकी सरखु )

निर्लोभी इच्छातणो, रोध होय अविकार,
कर्मतपावन तप कह्यो, तेहना बार प्रकार ॥ १ ॥
जेह कषायने शोषवे, प्रतिसमय टाळे पाप,
ते तप करीये निर्मळो बीजो नहु सताप ॥ २ ॥

सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वळी ज्ञानविमलादि गुणरत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥२२॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

इम नवपद ध्यावे, परम आनद पावे ॥ नवमे जव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रभावे ॥ सवि दुरित शमावे, विश्व जयकार पावे ॥२३॥

॥ इति श्रीज्ञानविमलसूरिकृत श्रीसिद्धचक्रस्तवना समाप्ता ॥

---

॥ ढाळ ॥ उलालानी देशी ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥ आतम सत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदेजी ॥ १७ ॥ (उलालो) उच्छेद कर्म अनादि सतति, जेह सिद्धपणुं वरे ॥ योग सगे आहार टाळी, भाव अक्रियता करे ॥ अतर मुहुरत तत्त्व साधे, सर्व सवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥१८॥

॥ ढाळ ॥

इम नवपद गुण मंडल, चउ निक्षेप प्रमाणे जी

सात नये जे आदरे, सम्यग्ज्ञान ते जाणेजी ॥१९॥ [उलालो] निद्धारसेती गुणी गुणनो, करे जे बहुमान ए॥ तसु करण ईहा तत्त्व रमणे, थाय निर्मळ ध्यान ए॥ एम शुद्धसत्ता भळ्यो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे॥ अक्षय अनत महत चिद्‌घन, परम आनदता वरे॥२०॥

॥ अथ कलश ॥

इय सयल सुखकर गुणपुरदर, सिद्धचक्र पदावलि॥ सवि लद्धि विद्या सिद्धिमदर, भविक पूजो मनरुली ॥ उवझायवर श्री राजसागर, ज्ञानधर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचद सुचरण सेवक, देवचद सुशोभता ॥ २१ ॥

॥ इतिश्री देवचन्द्रजीकृत स्तवना समाप्ता ॥

॥ पूजा ढाळ ॥

जाणता तिहु ज्ञाने सयुत, ते भव मुक्ति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु कद रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पण क्षय जाये क्षमा सहित जे करतां ॥ ते तप नमिये जेह दीपावे,

जिनशासन उजमता रे ॥ भविका॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महासिद्धि नवनिधि प्रगटे, नमिये ते तप भावे रे ॥ भविका॥ सि० ॥ ४३ ॥ फळ शिव सुख महोटु सुर नरवर, संपत्ति जेहनु फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखुं वदू, शम मकरंद अमूल रे ॥ भविका॥ सि० ॥४४॥ सर्व मंगलमां पहेलु मंगळ, वरणवीये जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहु काळ नमीजे, वर सहाय शिवपंथे रे ॥ भविका ॥ सि० ॥ ४५ ॥ एम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुओ तन्मय श्रीपाळ॥ सुजसविलासे चोथे खंडे, एह अग्यारमी ढाळ रे भविका ॥ सिद्धचक्र ॥ ४६ ॥

॥ ढाळ ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुण भोगे रे ॥ १० ॥ वीर० ॥ आगम नोआगमतणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतम भावे थिर होजो परभावे मत राचो रे ॥ ॥११॥ वीर०॥ अष्ट सकळ समृद्धिनी, घटमांहे ऋद्धि

दाखी रे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ १२ ॥ वीर० ॥ योग असरय छे जिन कह्या, नवपद मुरय ते जाणो रे ॥ एहतणे अनल बने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ १३ ॥ वीर० ॥ ढाळ बारमी एहवी, चोथे खडे पूरी रे ॥ वाणी वाचकजस-तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ १४ ॥ वीर० ॥

॥ इति नवम तप पदपूजा समाप्ता ॥९॥

॥ अथ काव्य ॥

विमलकेवलभासनभास्कर, जगति जंतुमहोदय-कारणम् ॥ जिनवर बहुमानजलौघत ,शुचिमना स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥

स्नात्र करता जगद्गुरु शरीरे, सकलदेवे विमल कळश नीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥ २ ॥ हर्ष धरीअप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशिष पावे ॥ जिहा लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथ देवाधिदेवो ॥ ३ ॥ अमतणानाथ जीवानुजीवो ॥३॥ ओं ह्रीं श्रीं परम-

पुरुषाय परमात्मने परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवा-
रणाय श्रीमते सिद्धचक्राय श्री तप पदाय जलं च-
न्दन पुष्प धूपं दीपं अक्षत नैवेद्य फल यजामहे स्वाहा
ॐ ह्रीं नमो तवस्स कही तप पदनी पूजा करवी

॥ इतिश्रीमहामहोपाध्यायन्यायविशारदन्यायाचार्य
श्रीयशोविजयजीगणिकृतश्रीसिद्धचक्रपूजा समाप्ता॥

॥ इति श्रीमद्यशोविजयजिदुपाध्यायकृत ॥
॥ नवपद पूजा समाप्ता ॥



## श्री सिद्धचक्रजीनी आरती

सिद्धचक्र पद सेवता, ए सहजानंद स्वरूप
अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चैतन्यभूप
भविजन मंगळ आरती करीए,
जन्म जन्मकी आरति हरीये
आरती प्रथम जिनेश्वरजीकी,
दारण विघ्न निवारणनीकी
दुजे पद श्री सिद्ध मुणिंदा,आरती करतमिटतभवफंदा
त्रीजेपद श्री सूरिमहंता, मारग शुद्ध प्रकाश करंता
चौथे पदपाठक गुणवंता, आरती करत हरत भवचींता
पांचमी आरती साधु केरी,
कुगति निवारण शुभगति सेरी
शिवसुखकारण श्रीजिनवाणी,
छठ्ठी आरती तास वखाणी,
सातमी आरती आनंदकारी,
समकित व्रत गृह प्रतिमा धारी

यह्विधि मगळ आरती गावे,
शुद्ध क्षमा कल्याण ते पावे

---

## श्री सिद्धचक भगवान्‌नी आरति

---

श्री नवपद प्राणी नित्य ध्यावो, पचमगति सासय
सुखपावो ॥ श्री० ए आकणी ॥

धुरथी अरिहत पद ध्याइजे स्थिरताए
श्रीसिद्ध थुणीजे ॥ श्री नवपद० १

आचारज त्रीजे आराधो
शुद्ध मने निजकारज साधो श्री नवपद० २

उपाध्याय पचम अणगारा
प्रणमता पामे भवपारा श्री नवपद० ३

दंसण नाण चरण भला दीपे
तप तपता कर्म अरिने जीपे श्री नवपद० ४

ए नवपद प्राणी नित्य थुणतां
गिरुवा नरभव सफल गणता श्री नवपद ५

## श्री सिद्धचक्रजीनी आरती

सिद्धचक्र पद सेवता, ए सहजानंद स्वरूप
अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चैतन्यभूप
भविजन मंगळ आरती करीए,
जन्म जन्मकी आरति हरीये
आरती प्रथम जिनेश्वरजीकी,
दारुण विघ्न निवारणनीकी
दुजे पद श्री सिद्ध मुणिंदा,आरती करतमिटतभवफंदा
त्रीजेपद श्री सूरिमहंता, मारग शुद्ध प्रकाश करंता
चौथे पदपाठक गुणवंता, आरती करत हरत भवचींता
पांचमी आरती साधु केरी,
कुगति निवारण शुभगति सेरी
शिवसुखकारण श्रीजिनवाणी,
छट्ठी आरती तास वखाणी,
सातमी आरती आनंदकारी,
समकित व्रत गृह प्रतिमा धारी

यह विधि मंगळ आरती गावे,
शुद्ध क्षमा कल्याण ते पावे

---

## श्री सिद्धचक्र भगवान्‌नी आरति

---

श्री नवपद प्राणी नित्य ध्यावो, पचमगति सासय
सुखपावो ॥ श्री० ए आकणी ॥
धुरथी अरिहंत पद ध्याइजे स्थिरताए
श्रीसिद्ध थुणीजे ॥ श्री नवपद० १
आचारज त्रीजे आराधो
शुद्ध मने निजकारज साधो श्री नवपद० २
उपाध्याय पंचम अणगारा
प्रणमता पामे भवपारा श्री नवपद० ३
दंसण नाण चरण भला दीपे
तप तपता कर्म अरिने जीपे श्री नवपद० ४
ए नवपद प्राणी नित्य थुणता
गिरुवा नरभव सफल गणता श्री नवपद ५

श्री सिद्धचक्रनी कीजे सेवा
मन वाछित लहीये नित्य मेवा     श्री नवपद ६
अजर अमर सुखदायक साचो
रुडा मनथी नित्य नित्य राचो     श्री नवपद ७

## नवपद्जीनी लावणी ॥

जगतमें नवपद् जयकारी, पूजता रोग टले भारी ।
प्रथम पद् तीर्थपति राजे, दोप अष्टादश कु त्यागे ॥
आठ प्रतिहारज छाजे, जगत प्रभु गुण वारे राजे ।
अष्टकरम दल जीतके, सकल सिद्ध थया सिद्ध अनत।
भजो पद्वीजे, एक समय शिव जाय ।
प्रकट भयो निजस्वरूप भारी ॥ १ ॥ जगतमा ॥
सूरिपदमा गौतम केशी, उपमाचद्र सूरज जेसी ।
जगायों राजा परदेसी, एक भनग्हे शिवलेशी ।
चोथेपदे पाठक नमु, श्रुतधारी उवज्झाय,
सव्वसाहु पंचम पदमाहीं, धन्य धन्नो मुनिराय,
वखाण्यो वीर प्रभु भारी ॥ २ ॥ जगतमां ॥

द्रव्यषट्को श्रद्धा आवे, शम सवेगादिक पावे ।
विनाए ज्ञान नहि किरिया, जैनदर्शनसे सव तरीया ॥
ज्ञान पदारथ पद सातमे, पदमें आतमराय ।
रमता राम अध्यातममाहे, निजपद साधे काम,
देखता वस्तु जगत सारी ॥ ३ ॥ जगतमा
जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर छोडी सव राणी,
यति दशधर्मे करी सोहे, मुनिश्रावक सव मन मोहे ॥
कर्म निकाचित कापवा, तप कुठार करधार,
नवमु पद जो धरे क्षमासु, कर्म मूल कट जाय
भजो नवपद जय सुखकारी ॥ ४ ॥ जगतमा ॥
श्रीसिद्धचक्र भजो भाड, आचाम्ल तपनो विधि थाइ
पाप त्रिहु जोगे परिहरज्यो, भाव श्रीपालपरे धरज्यो ।
सवत ओगणीश सत्तरा, समे जे पोशीणा श्रीपास
चैत्र धवल पूनमने दिवस, सकल फली मुज आश
चाल कहे नवपद छवी थारी, जगतमें नवपद जयकारी ५

इति लावणी सपूर्ण ॥

---

## ॥ अथ चैत्यवंदनो ॥

नवपदनु चैत्यवंदन

जैनेन्द्रमिन्द्रमहित गतसर्वदोष,
ज्ञानाद्यनंतगुणरत्नविशालकोशम् ।
कर्मक्षयं शिवमयं परिनिष्ठितार्थं,
सिद्धं च बुद्धमविरुद्धमहं च वंदे ॥ १ ॥
गच्छाधिपं गुणगणं गणिनं सुसौम्यं,
वंदामि वाचकवरं श्रुतदानदक्षम् ।
क्षान्त्यादिधर्मकलितं मुनिमालिका च,
निर्वाणसाधनपरं नरलोकमध्ये ॥ २ ॥
सद्दर्शनं शिवमयं च जिनोक्तसत्यं,
तत्त्वप्रकाशकुशलं सुखदं सुबोधम् ।
छिन्नाश्रवं समितिगुप्तिमयं चरित्रं,
कर्माष्टकाष्ठदहनं सुतपः श्रयामि ॥ ३ ॥
पापौघनाशनकरं वरमंगलं च
त्रैलोक्यसारमुपकारपरं गुरुं च ।
भावातिशुद्धिवरकारणमुत्तमानां,
श्रीमोक्षसौख्यकरणं हरणं भवानाम् ॥ ४ ॥
भव्याब्जबोधनरविं भवसिंधुनावं,
चिंतामणे सुरतरोरधिकं सुभावम् ।
तत्त्वत्रिपादनवकं नवकाररूपं,
श्रीसिद्धचक्रसुखदं प्रणमामि नित्यम् ॥ ५ ॥

## ॥ अथ अरिहतपद चैत्यवदन ॥

जय जय श्री अरिहत भानु, भवि कमलविकाशी ॥ लोकालोक अरूपी रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुदघात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि ॥ शुक्ल चमर शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥२॥ अतरग रिपुगण हणाए, हुय अप्पा अरिहत ॥ तसु पदपकजमे रही, हीर धरम नित सत ॥३॥ इति अरिहतपदचैत्यवदनम्

## ॥ अथ श्री सिद्धपद चैत्यवदन ॥

श्री शैलेशी पूर्वप्रात, तनु हीन त्रिभागी ॥ पुन्वपओगपसंगसे, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमे लोकप्रात गये निगण निरागी ॥ चेतन भूपे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥२॥ केवल दसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वदे धरी शुभ भाव ॥३॥ इति सिद्धपदचैत्यवदनम् ॥

## ॥ अथ तृतीय श्रीआचार्यपद चैत्यवदन ॥

॥ जिनपदकुल मुखरस अनिल, मिलरस गुण धारी ॥ प्रबल सबल घन मोहकी, जिणने चमुहारी ॥ १ ॥ स-

ज्वादिक जिनराज गीत, नयनन विस्तारो ॥ भव कूपे पापे पडत, जगजन निस्तारो ॥ २ ॥ पचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकु वदे हीर धर्म, अष्टोत्तरसो वार ॥ ॥ इति आचार्यपदचैत्यवदनम् ॥ ३ ॥

## ॥ अथ चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद चैत्यवदन ॥

॥ धन धन श्री उवज्झाय राय, शठता घन भजन ॥ जिनवर दिसत दुवालसग, कर सूत्र जनरजन ॥ १ ॥ गुणवण भजण मण गयद, सुय शाणि किय गजण ॥ कुणालध लोय लोयणे, जत्थ य सुय मजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए आगमसे पद तुर्य ॥ तिनपे अहनिश हीर धर्म, वदे पाठकवर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवदनम् ॥ ४ ॥

## ॥ अथ पचम श्रीसाधुपद चैत्यवदन ॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम त्रय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्तते, भये अतरजामी ॥ मानस इंदिय दमनभूत, शम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारु तिघन गुण गण भर्यो ए, पचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपकज नमत हैं, हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपदचैत्यवदनम् ॥ ५ ॥

## ॥ अथ षष्ठ श्रीदर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अड्ढ परमित संसार ॥ गठि-भेद तब करी लहे, सब गुणनो आधार ॥ १ ॥ क्षायक वे-दक शशी असंख्य, उपशम पण वार ॥विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनो ए, रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकु गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥३॥ इति दर्शनपदचैत्यवंदनम् ॥६॥

## ॥ अथ सप्तम श्रीज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मति आदिम नाण ॥ भाव मिलापसे जिन जनित, सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव ओहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण, इक केवल भाण ॥ २॥ नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपदचैत्यवंदनम् ॥७॥

## ॥ अथ अष्टम श्री चारित्र पद चैत्यवदन ॥

॥ जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेद ॥ नमन करे शुभ भाव लाय, कुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपे

घरी अरिहंत राय, करी कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इपु छूर्ति मान कपायथी ए, रहित लेश शुचिवंत ॥ जीव चरित्तकु हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥३॥ इति चारित्रपदचैत्यवंदनम् ॥४॥

## ॥ अथ नवम श्री तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण ॥ विहि अंतरपि बाह्य मध्य, द्वादश परिमाण ॥१॥ वसु कर मित आमोसही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेदे समता युत खिणे, दग्घन कर्म विमान ॥ २ ॥ नवमो श्री तपपद भलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसे नित हीर धर्म, दूर भवतु भवकूप ॥३॥ इति तपपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

## ॥ अथ श्रीसिद्धचक्रचैत्यवन्दनम् ॥

॥ श्री अर्हत्पदकाव्यम् ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

जियंतरंगारिजणे सुनाणे, सप्पाडिहेराइसयप्पहाणे ॥
संदेहसंदोहरयं हरंते,झाएह निच्चंपि जिणेऽरिहंते ॥१॥

॥ श्री सिद्धपदकाव्यम् ॥

दुट्टट्ठकम्मावरणप्पमुक्के अनंतनाणाइसिरीचउक्के ॥
समग्गलोगग्गपयप्प( त्थ )सिद्धे, झाएह निच्चपि
मणमि सिद्धे ॥२॥

॥ श्रीउपा यायपदकाव्यम् ॥

न त सुह देइ पिया न माया, ज दति जीवाणिह सूरिपाया ॥ तम्हा हु ने चेव सया महेह, जं मुक्ख-सुक्खाइ लहु लहेह ॥ ३ ॥

॥ श्री आचार्यपदकाव्यम् ॥

सुत्तत्थसवेगमयस्सुएण, सनीरखीरामयविस्सुएण ॥
पीणति जे ते उवज्झायराए, झाएह निच्चंपि
कयप्पसाए ॥ ४ ॥

॥ श्रीसाधुपदकाव्यम् ॥

खते अ दते अ सुगुत्तिगुत्ते, मुते पसते गुणजोगजुत्ते ।
गयप्पमाए हयमोहमाए, झाएह निच्चं मुणिरायपाए॥५॥

कुसुमेहि अलकियओ, सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अम्ह मन-वछिय फल दिओ ॥१॥

## ॥ पुन नव पद चैत्यवदन ॥

॥ श्रीअरिहत उदार काति, अतिसुन्दर रूप ॥ सेवो सिद्ध अनन्त ज्ञात, आतमगुण भूप ॥१॥ आचारज उवझाय साधु, समतारस धाम ॥ जिनभाषितसिद्धात-शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधिबीजगुणसपदाए, नाणचरणतव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानन्दपद, ए नव पद अविरुद्ध ॥३॥ इह परभव आनन्दकद, जग माहि प्रसिद्धा ॥ चिंतामणि सम जास जाग, बहुपुण्ये लद्धा ॥४॥ तिहु-अणसार अपार एह, महिमा मन धारो ॥ परिहर पर-जजालजाल, नित एह सभारो ॥५॥ सिद्धचक्रपद सेवता, सहजानन्द स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥६॥ इति श्रीसिद्धचक्रचैत्यवदन सपूर्णम् ॥

## ॥ चैत्यवदनम् ॥

॥ श्री सिरि सिद्धचक्क नवपय मरहड पढमिड पय मय जिणद असुरिंद चिय पयपकय नाह तुझ नमो ॥१॥ सिरि रिसहेसर सासिय फल दाण कप्पतरु कप्प कदप्पग-

जण भवभंजण देव तुझ नमो ॥२॥ सिरि नाभि नाम कुलगर कुलकमलुद्दाम परमहंस समअसम तमनम तमो भरहरणिक्कपईव तुझ नमो ॥ ३ ॥ सिरि मरुदेवासामिणि उदरदरी दरियकेसरिकिसोर घोरभुयदंड खडियपयंड मोहस्म तुझ नमो ॥४॥ हरखागुवसभूसण गयदूसण दुरियमयगलमइंद चंदसम वयणवियासिय नीलुप्पल नयण तुझ नमो ॥ ५ ॥ कल्लाणकारणु मम नत्तकणयकलसरिस सठाण कठठिय कलकुंतल नीलुप्पलकालिय तुझ नमो ॥ ६ ॥ आईसर जोईसर रयणगयमणलरग रक्खिय सव्व भवकूव पडिय जंतुतारण जिणनाह तुझ नमो ॥७॥ सिरि सिद्धमेलमंडण दुहखंडण खधरराय नयपाय सयलमह सिद्धिदाय जिणनायग होउ तुझ नमो ॥८॥ तुझ नमो तुझ नमो तुझ नमो देव तुझ चेव नमो ॥ पणयसुररयणमेहर रइराजिय पाय तुझ नमो ॥९॥इति॥

## ॥ नवपद चैत्यवंदनम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाण, सप्पाडिहेरासणसठियाण ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाण, नमो नमो होउसया जिणाण ॥१॥ सिद्धाणमाणंदरमालयाण, नमो नमोऽणंतचउक्कयाण सूरीण दूरीकयकुग्गहाण, नमो नमो सूरसमप्पहाण ॥२॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराण, नमो नमो वायगकुंजराण ॥

कुसुमेहि अलंकियओ, सो सिद्धचक्क गुरुकप्पतरु अम्ह मन
वंछिय फल दिओ ॥१॥

## ॥ पुन नव पद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीअरिहंत उदार कांति, अतिसुन्दर रूप
सेवो सिद्ध अनन्त शांत, आतमगुण भूप ॥१॥ आचार
उवझाय साधु, समतारस धाम ॥ जिनभाषितसिद्धांत
शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोधिबीजगुणसंपदाण
नाणचरणतव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानन्दपद, ए नव प
अविरुद्ध ॥३॥ इह परभव आनन्दकंद, जग मांहि प्रसिद्ध
॥ चिंतामणि सम जास जाग, बहुपुण्ये लद्धा ॥४॥ तिहु
अणसार अपार एह, महिमा मन धारो ॥ परिहर फ
जजालजाल, नित एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्रपद सेवत
सहजानन्द स्वरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेत
भूप ॥६॥ इति श्रीसिद्धचक्रचैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

## ॥ चैत्यवंदनम् ॥

॥ श्री सिरि सिद्धचक्क नवपय मह्हट पढमिल्ल प
मय जिणंद असुरिंद विय पयपंकय नाह तुज्झ नमो ॥
सिरि रिसहेसर सासिय फल दाण कप्पतरु कप्प कदप्पग

एणीपरे नव पद भावशुए, जपता नव नव कोड,
पडित शांतिविजय तणो, शिष्य कहे करजोड ६

## नवपदनु चैत्यवंदन

सुललित नवपद ध्यानथी परमानद लहीए,
ध्यान अग्निथी कर्मना, इधन पुण दहीए १
इति भीति ने रोग शोक, सावि दूर पणासे,
भोग सजोग सुबुद्धिता, प्राप्त सुविलासे २
सिद्धचक्र तप कीजता ए, उत्तम प्रभुता सग,
मोहन नाण प्रसिद्धता, गगारग तरग ३

## श्री सिद्धभगवाननु चैत्यवदन

सिद्ध सकळ समरू सदा, अविचळ अविनाशी,
थाशे ने वळी थाय छे, थया अष्टकर्म विनाशी १
लोकालोक प्रकाश भास, कहेवा कोण शूरो,
सिद्ध बुद्ध पारगत, गुणथी नहीं अधूरो २
अनत सिद्ध एणीपरे नमु ए, वळी अनत अरिहत,
ज्ञानविमळ गुण सपदा, पाम्या ते भगवत ३

साहूण ससाहिअसजमाण, नमो नमो सुद्धदयादमाण ॥३॥ जिणुत्तत्ते रूइलरकणस्स, नमो नमो निम्मलदसणस्स ॥ अन्नाणसमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥४॥ आराहिया खंडीयसक्किअस्स, नमो नमो संजयवीरिअस्स ॥ कम्मदुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥ इयनवपयसिद्ध लद्धिविज्ञासमिद्ध ॥ पयडियसुरवग्ग, हींतिरेहासमग्ग ॥ दिसवइसुरसार, खोणिपीढावयार ॥ निजयविजयचक्क, सिद्धचक्क नमामि ॥६॥ इति॥

## नवपदनु चैत्यवदन

पहेले दिन अरिहंतनु, नित्य कीजे ध्यान,
बीजे पद वळी सिद्धनु कीजे गुणगान १
आचारज त्रीजे पदे जपता जयजयकार,
चोथे पदे उपाध्यायना, गुण गाओ उदार २
सकल साधु वंदो सही, अढीद्वीपमा जेह,
पंचम पद आदर करी, जपजो धरी ससनेह ३
छठ्ठे पदे दर्शन नमो, दरिसण अजुआलो,
नमो नाण पद सातमे जिम पाप पखालो ४
आठमे पद आदर करी चारित्र सुचग,
पद नवमे बहु तपतणो, फळ लीजे अभग ५

नेह ॥ १२ ॥ छठे पदे दरसण नमु, दरशन अजवालु ॥ ज्ञान पद नमु सातमे, तेम पाप पखालु ॥ १३ ॥ आठमे पद रुड जपु चारित्र सुसग ॥ नवमे पद बहु तप तपो जिम फल लहो अभग ॥ १४ ॥ एही नवपद ध्यानथी, जपना नाठे कोड ॥ पडित धीरविमलतणो, नय चदे कर जोड ॥ १५ ॥ इति ॥

## ॥ जिन पूज्यानुं चैत्यवंदन

॥ प्रणमी श्री गुरुराज आज, जिनमदिर केरो ॥ पुन्य भणी करशु सफल, जिनवचन भलेरो ॥ देहरे जावा मन करे, चोथ तणु फल पावे ॥ जिन जुहारवा उठता, छट्ट पोते आवे ॥ जइशु जिनवर भणी ए, मार्ग चालता ॥ होवे द्वादश तणु पुन्य, भक्ति मालता ॥ अध पथ जिनवर तणो ए, पदरे उपवास ॥ दीठो स्वामी तणो भुवन, लहीए एक मास ॥ जिनवर पासे आवता, छमासी फल सिद्ध ॥ आव्या जिनवर बारणे, वर्षी तप फल लीध ॥ सो वर्ष उपवास पुन्य, प्रदक्षिणा देतां ॥ सहस वर्ष उपवास पुन्य, जे नजरे जोता ॥ फल घणो फूलनी माल, प्रभु कठे ठवता ॥ पार न आवे गीत नाद, केरा फल स्थुणता ॥ शिर पूजी पूजा करो ए, सुर धूप तणो धूप ॥ अक्षर सार ते अक्षय, सुख दीप तनुरुप ॥ निर्मल तन मने करीए,

## ॥ सिद्धचक्रजीनु चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सिद्धचक्र आराधतां, सुख संपत्ति लहीए ॥ सुरतरु सुररमणी थकी, अधिकज महिमा कहीए ॥ १ ॥ अष्ट कर्म हणी करी, शिवमंदिर रहीए ॥ विधिशुं नव पदध्यानथी, पातिक सवि दमीए ॥ २ ॥ सिद्धचक्र जे सेवशे, एकमना नर नार ॥ मनवांछित फल पामशे, ते सवि त्रिभुवन मोजार ॥ ३ ॥ अंग देश चंपापुरी, तस केरो भूपाल ॥ मयणा साथे तप तपे, ते कुंवर श्रीपाल ॥ ४ सिद्धचक्रजीना नमन थकी, जस नाठा रोग ॥ तत्क्षण त्याथी ते लहे, शिवसुख संजोग ॥ ५ ॥ सातसे कोढी रोता, हुवा निरोगी जेह ॥ सोवन वाने झलहले, जेहनी निरुपम देह ॥ ६ ॥ तेणे कारण तमे भविजनो, प्रह उठी भक्त ॥ आसो मास चैत्र थकी, आराधो जुगते ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र त्रण कालना, वदा वली देव ॥ पडिक्कमणु करी उभय काल जिनवर मुनि सेव ॥ ८ ॥ नवपद ध्यान हृदे धरो, प्रतिपालो भवि शील ॥ नव पद आंबिल तप तपो, जेम होय लीलम लील ॥ ९ ॥ पहेलो पद अरिहंतनो, नित्य कीजे ध्यान ॥ बीजो पद वली सिद्धनो, करीए गुणग्राम ॥ १० ॥ आचारज त्रीजे पदे, जपता जयजयकार ॥ चोथो पद उवज्झायनो गुण गाउ उदार ॥ ११ ॥ सरव साधु वंदु सही अढीद्वीपमां जेह ॥ पंचम पदमां ते सही, धरजो धरी स-

प्रणमो बिहु करे जोडी । नमिए श्रीउवज्झायने, चोथे पद मोडी ॥२॥ पंचम पद सर्व साधुनु, नमता न आणो लाज । ए परमेष्ठी पचने, ध्याने अविचल राज ॥३॥ दंसण शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो । सर्व नाण पद सातमे, क्षण एक न विसारो ॥ ४ ॥ चारित्र चोखु चित्तधी, पद अष्टम जपिए । सकल भेद विच दानमूल, तप नवमे तपिए ॥५॥ ए सिद्धचक्र आराधता, पूरे वांछित कोड, सुमतिविजय कविराजनो, 'राम' कहे करजोड॥६॥

## सिद्ध भगवाननु चैत्यवंदन

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राणनिरूपक ॥ ध्यान रूप अनुपमोपम, नमो सिद्ध निरंजन ॥ १ ॥ गगन मंडल मुक्ति पद्म, सर्व ऊर्ध्व निवासन ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे ॥ नमो० ॥ २ ॥ अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुष ॥ नामगोत्र निरंतराय, ॥ नमो० ॥ ३ ॥ विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभविसर्जन ॥ राग द्वेष विमर्दित अंकुरे, ॥ नमो० ॥ ४ ॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समीरित ॥ योगिनामिति गम्यरूप ॥ नमो० ॥ ॥ ५ ॥ योगमुद्रा सम समुद्रा, करी पल्यंकासन ॥ योगिनामिति गम्यरूप, ॥ नमो० ॥६॥ जगत जनके दास दासी, तास आश निरासन ॥ योगिनामिति गम्यरूप ॥ नमो० ॥ ॥ ७ ॥ समय समकित दृष्टि जनकी, सोय योगी अयोगि-

स्तुणता इन्द्र जगीश ॥ नाटक भावना भावतां, पामे पदवी जगीश ॥ जिनवरभक्ति वली ए, प्रेमे प्रकाशी ॥ सुणी श्रीगुरु वयण सार, पूर्व ऋषि भाखी ॥ अष्ट कर्मने टालवा, जिनमंदिर जइशुं ॥ भेटी चरण भगवतना, हवे निर्मल थइशुं ॥ कीर्त्तिविजय उवज्झायनो, विनय कहे कर जोड ॥ सफल होजो मुज विनति, जिन सेवानुं कोड ॥ इति ॥

## ॥ चैत्यवंदन ॥

पहेले दिन अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान । बीजे दिन वली सिद्धनुं, कीजे गुणगान ॥१॥ आचारज त्रीजे पदे, जपता जयजयकार । चोथे पदे उवज्झायना, गुण गावो उदार ॥२॥ सकल साधु वंदो सही, अढी द्वीपमा जेह पंचम पद आदर करी, जपजो धरी सनेह ॥ ३ ॥ छट्ठे पदे दर्शन नमो, दरिसण अजुआळो । नमो नाणपद सातमे, जिम पाप पखालो ॥४॥ आठमे पद आदर करी, चारित्र सुचंग । नवमे पद बहु तप तणो, फल लीजे अभंग ॥५। एणी परे नवपद भावसुं ए, जपता नव नव कोड । पंडित 'शांतिविजय' तणो, शिष्य कहे कर जोड ॥६॥

## ॥ चैत्यवंदन ॥

पहिले पद अरिहंतना, गुण गाउं नित्ये । बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥१ ॥ आचारज त्रीजे पदे

वसु, चैत्यवन्दन कीजे । चैत्यप्रवाडी वीतराग, पूजा फल लीजे ॥ स्वामिवत्सल कीजीये ये, नवओली वृत्तांत । ऊजमणु सिद्धचक्रनु, मोहन महिमावन ॥३॥इति॥

## अथ स्तवनो

### ॥ श्री अरिहतपद स्तवनम् ॥

॥ त्रीजे भव विधिसहितथी, वीश स्थानक तप करीने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बाधीयु, समकित शुद्ध मन धरीने रे ॥ ॥१॥ अरिहतपद नित वदीए, करम काठन जिम छडीए रे॥ ए आकणी ॥ जनम कल्याणकने दिने, नारकी सुखीया थावे रे॥ मति श्रुत अवधि विराजता, जसु ओपम कोइ नावे रे ॥अ०॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने, मनःपर्यव आदरीयु रे ॥ तप करी कर्म खपाइने, ततखिण केवल वरीयु रे ॥अ०॥ ३ ॥ चउतीश अतिशय शोभता, वाणी गुण पंतीशो रे ॥ अठदश दोष रहित थइ, पूरे सघ जगीशो रे अ०॥४॥ तन मन वयण लगाइने, अरिहतपद आराधे रे ॥ ते नर निश्चयथी सही, अरिहतपदवी साधे रे ॥ अरिहतपद नित वदीए ॥५॥इति॥

### ॥ श्री सिद्धपद स्तवनम् ॥

॥ सकल करमनो क्षय करी, सिद्ध अवस्था पाइ रे ॥

क ॥ देखि तामें लीन होवे, ॥ नमो० ॥ ८ ॥ तीर्थसिद्ध अतीर्थसिद्धा, भेद पंच दशादिक ॥ सर्व कर्म विमुक्ति चेतन, ॥ नमो० ॥ ९ ॥ चंद्र सूर्य दीप मणिकी, ज्योति तेने ओलंगिक ॥ तज्यो तिथि कोई अपर ज्योति, ॥ नमो० ॥ १० ॥ एक माहे अनेक राजे, नेक मांहि एकक ॥ एक नेकी नाहि संख्या, ॥ नमो० ॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अनंत, निराकार निरंजन ॥ ब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन, ॥ नमो० ॥ १२ ॥ अचल सुखकी लहेरमां, प्रभु लीन रहे निरंतर ॥ धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन, ॥ नमो० ॥ ॥ १३ ॥ ध्याने धूप मने पुष्प, पंच इंद्र हुताशन ॥ क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजन ॥ १४ ॥ नमो सिद्ध निरंजन ॥ इति ॥

## ॥ चैत्यवंदन ॥

सिद्धचक्र महामंत्र राज, पूजाफल प्रसिद्धि। जास न्हवणथी संपजे, संपूर्ण ऋद्धि ॥ अरिहंतादि नवपदो, नित्य नवनिधि दाता॥ ए संसार असार पंथ,होये पार विख्याता ॥ अचलाचलपद संपजे ए, प्होचे मननो कोड । मोहन कहे नवपद भणी, वंदु बेकर जोड ॥२॥

## ॥ चैत्यवंदन ॥

आसो चैत्र उद्योतपक्ष, नव दिवस निरंतर । आंबिल तप बेउ टंकना, प्रतिक्रमण सुहंकर॥ त्रण काल अतिभा-

भेद भाव गुन सारी रे ॥ सूरगकुं पडिन करे, जगतजन्तु हितकारी र ॥२॥ श्री० ॥ शीतल चद किरग समो, वागी जेहनी कहीए रे ॥ ते उवझाया पूजता, अविचल सुखडी लहीए रे ॥३॥

॥ श्री सावुपद स्तवनम् ॥

॥ सकल विषय विष वारीने, आतमध्याने राता रे ॥ उपशम रसमा झीलता, निज गुण ज्ञाने माता रे ॥ १ ॥ हित धरी मुनिपद वदीए ॥ ए आकणी ॥ रत्नत्रयी आराधता, षट्काया प्रतिपाले रे ॥ पचिंद्री जीपे सदा, जिनमारग अजुवाले रे ॥ हित० ॥ २ ॥ गुण सत्तावीश अलकर्या, पच महाव्रत धारी रे ॥ द्वादशविध तप आदरे, चिदानद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रह्मचारिज धरे, करम महा भट जीत्या रे ॥ एहवा मुनि ध्यावे सदा, ते नर जगत विदिता रे ॥ हित० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री दर्शनपद स्तवनम् ॥

॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनो, सद्दहणा चित्त धरीए रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरीए रे ॥१॥ दरसणपद नित वदीए ॥ ए आकणी ॥ इण विण ज्ञान निःफल कह्यु, चारित्र नि.फल जाये रे ॥ शिवसुख ए विण ना मीले, बहु ससारी थाय रे ॥ द० ॥ २ ॥ सडसट्ठी भेदे शोभतु, अजरामर फल दाता रे ॥ जे नर पूजे भावशु, ते पामे सुख शाता रे ॥ दरशणपद० ॥ इति ॥

गुण इगतीस विराजता, ओपम जस नहीं काइ रे ॥ मन शुद्ध सिद्धपद वंदीए ॥१॥ ए आंकणी ॥ जनम मरण दु:ख निर्गम्या, शुद्धातम चिद्रूपी रे ॥ अनंत चतुष्टय धारता, अव्याबाध अरूपी रे ॥ मन० ॥२॥ जास ध्यान जोगीसरु, करे अजपा जापे रे ॥ भव भव संच्या जीवडे, कठिण करम ते कापे रे ॥मन०॥३॥ ध्यान धरता सिद्धनु, पूजतां मनरागे रे ॥ अविचल पदवी पाइए, कह्यु जिनवर वड भागे रे ॥ मन० ॥४॥इति॥

॥ श्री आचार्यपद स्तवनम् ॥

॥गुण छत्रीशे दीपता, पाले पंच आचारो रे ॥ जिनमारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥ आचारजपद वंदीए ॥१॥ ए आंकणी ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण नी शिक्षा रे ॥ भव्यजीव समझावता, देवाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जिनवर सूरज आथम्या, परतिख दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे, ज्ञानमयी जसु देहा रे ॥ ३ ॥ विधिशु पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे पावे लघुतर कालमा, आचारजपद प्राणी रे ॥४॥इति॥

॥श्री उपाध्यायपद स्तवनम्॥

द्वादशांगी वाणी वदे, सूत्र अर्थ विस्तारे रे ॥ पंच वरग गुण जेहना, सुमति गुप्ति नित धारे रे ॥ १ ॥ श्री उवज्झाया वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ दायक आगम वाचना,

नव० ॥ ४ ॥ नाणु रे, बहु खरचो रे तोए न खुट जरीए रे, चारित्र पद नमु आठे रे, नवमे तप करो बहु ठाठे रे, दुःख दारिद्रथ जेहथी नाठेरे, जिनवरनी रे प्यारथी पूजा करीए रे, नव० ॥ ५ ॥ नव दिन शियळ व्रत पाळो रे, पडिक्कमण करी दुःख टाळो रे, जेम चंपापति श्रीपाळो रे, मनमांही रे शंका न राखो जरीए, नव० ॥ ६ ॥ ओगणीश अठ्ठावन वर्षे रे, पोष मास पुनम तिथि फरसे रे, भावे गावे ते भव नवि फरसे रे, निर्भयथी रे धर्म कहे भव तरीए र, नव० नव० ॥ ७ ॥

## श्री सिद्धचक्रनु स्तवन

—

( जगजीवन जग वाल्हो ए राग. )

श्री सिद्धचक्र आराधीए, शिवसुख फळ सहकार लाल रे, ज्ञानादिक ग्रण रत्ननु, तेज चढावणहार लाल रे श्री सि० ॥ १ ॥ गौतमे पृछता कह्यो, वीर जिणद विचार लाल रे, नवपद मंत्र आराधता, फळ लहे भविक अपार लाल रे श्री सि० ॥ २ ॥ धर्म रथना चार चक्र छे, उपशम ने सुविवेक लाल रे, सवर त्रीजु जाणीए, चोथु सिद्धचक्र छेक लाल रे, श्री सि० ॥ ३ ॥ चक्री चक्र ने रथ बळे, साधे सयल छ खड लाल रे, तिम सिद्धचक्रप्रभावथी, तेज प्रताप अखड लाल रे, श्री सि० ॥ ४ ॥ मयणा ने श्रीपाळजी,

अगर ने अरगजा, तपदिन तो हो कीजे घृतदीप के श्री सि० ॥ ३ ॥ आशो चैत्र शुक्र पक्षे, नव दिवसे हो तप कीजे एह के, सहज सोभागी सुसपदा, सोवनसम हो झबके तस देह के श्री सि० ॥ ४॥ जावजीव शक्ते करो, जिम पामो हो नित्य नवला भोग के, चार वरस साडा तथा, जिनशासन हो ए मोटो योग के श्री सि० ॥ ५ ॥ विमळदेव सानिध्य करे, चक्रेश्वरी हो करे तास सहाय के श्री जिनशासन सोहीए, एह करता हो अविचळ सुख थाय के श्री सि० ॥ ६ ॥ मत्र तत्र मणि ओषधि, वश करवा हो शिवरमणी काज के, त्रिभुवन तिलक समोवडी, होय ते नर हो कहे नय कविराज के, श्री सि० ॥७॥

## श्री नवपदनु स्तवन

नरनारीरे भमता भव भरदरीए, नवपदनु ध्यान सदा धरीए, सुखकारीरे, तो शिवसुदरी वरीए, नवपदनु ध्यान सदा धरीए ॥ १ ॥ पहेले पद श्री अरिहत रे, करी अष्ट रिपुनो अत रे, थया शिवरमणीना कत रे, पद बीजे रे सिद्ध भजी दु ख हरीए रे, नवपदनु ध्यान सदा धरीए, सुखकारी रे० ॥ २ ॥ आचार्य नमु पद त्रीजे रे, चोथे पद पाठक लीजे रे, प्रीतेथी पाय प्रणमीजे रे, पद पाचमे रे मुनि महाराज उच्चरीए रे, नव० ॥ ३ ॥ छट्ठे पद दर्शन जाणु रे, ज्ञान गुण मुख्य वखाणु रे, आ जगमां जे खरु

रे, आसो चैत्र शुदि सातमथी, आंबिल ओळी मांडीजे, सुभवि० ॥ ३ ॥ चैत्यपूजा गुरुभक्ति करीए, पडिकमणां दोय धारोजी, त्रण काळ देववंदन करीए, ब्रह्मचर्य भूमि संथारो, सुभवि० ॥ ४ ॥ नोकारवाळी वीशज गणीए, एकेक पदनी रंगेजी रे, पडह अमारि सदा वजडावी, सुणो आगम गुरु संगे, सुभवि० ॥ ५ ॥ कहे धर्मचंद सिद्धचक्र सेवता लहीए मंगल मालाजी रे, राज्यऋद्धि रमणी सुख पाम्यो, जेम नरपति श्रीपाळ, सुभवि० ॥ ६ ॥

## श्री सिद्धचक्रनुं स्तवन,

( तम पितावर पहेयाजी मुखने मरकुन्डे—ए देशी )

श्री सिद्धचक्रने वंदोजी, मनोहर मनगमतां, अविचळ सुखनो कंदोजी, म० मास आसोए मधुरे सोहावेजी, म० भवि आदरो तमे भले भावेजी, म० ॥ १ ॥ नव आंबिल तप कीजेजी, म० तो अविचळ सुखडा लीजेजी, म०, शुदी सातमथी तमे मांडीजे, म० घरना आरंभ सवि छांडीजी, म० ॥ २ ॥ पहेले पदे अरिहंत सेवाजी, म० आपे मुक्तिना मेवाजी, म० बीजे पदे सिद्ध सोहावेजी, म० मन शुद्धे पूजो भले भावेजी, म० ॥ ३ ॥ आचार्य त्रीजे पदे नमो जी, म० तमे क्रोध कषायने दमो जी, म० उवज्झाय ते

जपता वहु फळलीध लाल रे, गुण जसुवंत जिनेंद्रनो, ज्ञानविनोद प्रसिद्ध लाल रे, श्री सि० ॥ ५ ॥

## श्री नवपदनु स्तवन

नवपद ध्यान सदा जयकारी ए आकणी.

अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी, नव० ॥ १ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र हे उत्तम, तप दोय भेदे हृदय विचारी, नव० ॥ २ ॥ मन्त्र जडी ओर तन्त्र घणेरा, उन सबकु हम दूर विसारी, नव० ॥ ३ ॥ बहोत जीव भवजलसें तारे, गुण गावत हे बहु नरनारी, नव० ॥ ४ ॥ श्री जिनभक्त मोहन मुनिवदन, दिन दिन चढते हर्ष अपारी, नव० ॥ ५ ॥

## श्री सिद्धचक्रनु स्तवन

( साभळ रे तु सजनी मारी, रजनी कया रमी आवी जी रे. ए देशी )

श्री वीर प्रभु भविजनने एम कहे, भावदया दिल आणीजी रे सुरतरु सम सिद्धचक्र आराधो, वरवा शिववधु राणी, सुभविया सुणजोजी ॥ १ ॥ शिव कार्यनु मुख्य कारण नवपद छे, गुणी गुण पण चारजी रे, अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाये, साधु वर दर्शनधार, सुभवि० ॥ २ ॥ ज्ञान चारित्र तप ए नव पदनु, आराधन एणीपरे कीजेजी

जिन गुण गावो होके, शिवसुख पावो मा० २
श्री श्रीपाळ होके, मयणा चाले मा०,
ध्यान रसाळे होके, रोगज टाळे मा०,
सिद्धचक्र ध्यायो होके, रोग गमायो मा०,
मंत्र आराध्यो होके, नवपद पायो मा० ३
भामिनी भाळी होके, पहेरी पटोळी मा०,
सहियर टोळी होके, कुंकुम घोळी मा०,
थाळ कचोळी होके, जिनघर ग्योली मा०,
पूजी प्रणमी होके, कीजे ओळी मा० ४
चैत्रे आसो होके मनने उल्लासे मा०,
नवपद ध्याशे होके, शिवसुख पाशे मा०,
उत्तमसागर होके, पंडित राया मा०,
सेवक कांति होके, बहु सुख पाया मा० ५

## श्री नवपदजीनु स्तवन

नवपद महिमा सार, सांभळजो नर नार, आछे लाल, हेज धरी आराधीएजी, तो पामो भव पार, पुत्र कलत्र परिवार, आछे०, नव दिन मन आराधीएजी ॥ १ ॥ ए आकणी आसो मास सुविचार, नव आंबिल निरधार, आछे०, विधिशु जिनवर पूजीएजी, अरिहंत सिद्ध पद सार, गणणु तेर हजार, आछे०, नव पद महिमा कीजीएजी ॥ २ ॥ मयणा सुंदरी श्रीपाळ, आराध्यो तत्काळ, आछे० फळदायक तेहने थयोजी, कंचन वरणी

च्योथे वदोजी, म० साधु पाचमे देखी आणदोजी म० ॥४॥ छट्ठे दरिसण जाणोजी, म०, श्री ज्ञानने सातमे वखाणोजी म० चारित्र पद आठमे सोहेजी, म० वळी नवमे तप मन मोहेजी, म० ॥ ५ ॥ रस त्यागे आंबिल कीजेजी, म० तो मुक्तितणा फळ लीजे जी, म० संवत्सर युग (४) षट (६) मासे जी, म० ते तप कीजे उल्लासे जी, म० ॥ ६ ॥ ए तो मयणा ने श्रीपाळजी, म० तप कीधो थइ उजमाळ जी, म० तेनो कोढ शरीरनो टाळ्यो जी, म० जगमा जशवाद प्रगटायोजी, म० ॥ ७ ॥ पचम काळे तुमे जाणोजी, म० प्रगट परचो परमाणोजी, म० अेनु गुणणु वे हजार जी, म० तमे धरो हृदय मोझार जी, म० ॥८॥ नर नारी ए पदने ध्यावे जी, म० ते तो संपद सघळी पावे जी, म० मुनि रत्नसुंदर सुपसायजी, म० सेवक मोहन गुण गायजी, मनोहर मनगमता ॥ ९ ॥

## श्री नवपदजीनु स्तवन.

गोयम नाणी होके, कहे सुणो प्राणी मारा लाल,
जिनवर वाणी होके, हइडे आणी मारा लाल,
आसो मासे होके, गुरुनी पासे मारा लाल,
नवपद ध्याशे होके, अंग उल्लासे मारा लाल १
आंबिल कीजे होके, जिन पूजीजे मा०,
जाप जपीजे होके देव वांदीजे मा०,
भावना भावो होके, सिद्धचक्र ध्यावो मा०,

भ० ॥ ४ ॥ जाणी प्राणी लाभ अनत, सेवो सुखदायक ए मन, भ०, उत्तमसागर पडित शिष्य, सेवे कांतिसागर निशदीश भ० ॥ ५ ॥

### श्री सिद्धचक्रजी स्तवन

( कृपानिधि वीनती अवधारी, ए चाल. )

सिद्धचक्र वदो जयकारी। हुतो वारी जाउ वार हझारि, सिद्ध०। अरिहत १ सिद्ध २ गुणधारी। आचारज उपगारी। उवजाय ४ सकल अणगारी ५। सि० ॥१॥ वरदरशण ६ नाण ७ जीतारी। सुखकरण चरण८हितकारी। शमरस युत तप ९ चित्तधारी सि० ॥ २ ॥ ए नवपद दुरित विदारी। वळि सहु जगजन मनहारी। तुमे सेवो नित निरधारी सि० ॥ ३ ॥ नवपद सहु सुर नर राया। वदे नित चित गुणलाया। एतो अशरणशरण कहाया, सि० ॥ ४ ॥ नवपद भवजलधि जिहाझा। ए सकल भुवनमहाराजा। निताचित धरिये हितकाजा, सि० ॥५॥ अगणित जग जीउ उदारा। नवपद समरण उर धारा। भये मुगति रमाभरतारा। सि० ॥ ६ ॥ नवपद सेवी सुखकदा। भया ते सिरिपाल नरिंदा, नित लहीया

काय देहडी तेहनी थाय, आछे०, श्री सिद्धचक्र महिमा कह्यो जी ॥ ३ ॥ साभळी सहु नर नार, आराध्यो नवकार, आछे०, हेज धरी हैडे घणुजी, चैत्र मास वळी एह, नवपद शु धरो नेह, आछे०, पूजयो दे शिवसुख घणु जी ॥ ४ ॥ एणी परे गौतम स्वाम, नव निधि जेहने नाम, आछे०, नवपद महिमा वखाणीएजी, उत्तमसागर शिष्य, प्रणमे ते निशदीश, आछे०, नवपद महिमा जाणीए जी ॥ ५ ॥

## श्री नवपदजीनु स्तवन

( कीसके चेले कीसके पुत ए देशी )

सेवोरे भवि भावे नवकार, जपे श्री गौतम गणधार, भवि साभळो, हारे सपद थाय भ०हारे सकट जाय भ०, आसो ने चैत्रे हरख अपार, गणणु कीजे तेर हजार भ० ॥ १ ॥ चार वर्ष ने वळी षट् मास, ध्यान धरो भवी धरी विश्वास, भ०, ध्यायो रे मयणासुदरी श्रीपाळ, तेहनो रोग गयो तत्काळ भ० ॥ २ ॥ अष्ट कमल दल पूजा रसाल, करी न्हवण छाट्यु तत्काल, भ०, सातसो महीपति तेहने रे ध्यान, देहडी पाम्या कचनवान भ० ॥ ३ ॥ महिमा कहेता नावे पार, समरो तिण कारण नवकार, भ०, इह भव परभव दीए सुखवास, पामे लच्छी लीलविलास

थारो शीलने पालो, जिनशासननु रहस्य ॥ ५ ॥ पूजोरे इम ओली नवकीजे, विधिश्यु चढते उच्छाह्य, द्रव्य भाव बेहुस्युं साढा चार वरस माह्य ॥ ६ ॥ पूजोरे ॥ तप पूरे ऊजमणु कीजे, तुरत यथाशक्ति दर्शन जैन, जिम पटमा दीपे देखालीविगते ॥ ७ ॥ पूजोरे० लघुकर्मोने क्रिया फल दिये सफलो उवएस, सेर होय तिहा कूवो खणीये ते विण सस्लेश ॥ ८ ॥ पूजोरे ॥ सफल हूवो श्रीपालने, सवि जस द्रव्य भाव शुध्ध, इम जो विधिस्यु आराधे, फल पामे वुद्ध ॥ ९ ॥ पूजोरे ॥ एहथी राजऋद्धि वहु रमणी, सवि गुणनी वृद्धि, न्याय सागर कहे एहने, सेवो जो व्हाली सिद्धि ॥ १० ॥ पूजोरे ॥ इति श्रीसिद्धचक्र स्तवन सपूर्णम् ॥

श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री सिद्धचक्र सेवा करो, जस गाजे छे
सिध्ध साधन पुष्ट उपाय, त्रिभुवन राजे छे
कारण शिव साधन तणा, जस गाजे छे
सख्यातीत कहेवाय ,, ॥ १ ॥

परम आणदा ॥७॥ सि० ॥ नवपदके महिमा उदारा॥
कोइ पाम न शके पारा। कितने कहु गुण विसतारा ॥८॥
पार्श्व प्रभु अतरजामी । तसु चरण अनुग्रह पामी ॥
शिवचद्र नमे शिरनामी, सि० ॥ ९ ॥

श्रीसिद्धचकजी स्तवन

(मातारे यशोदाजी म्हने चादलीयो आपो,) ए देशी ।

पूजोरे सिद्धचक्रने भावे वाञ्छित आपे, नरभव पामी लाहो लीजे भवदु ख कापे॥१॥ ए आकणी। पहीले पदे अरिहत जपीजे, बीजे वली श्रीसिद्ध, त्रीजे आचार ज तीम समरो, आप गुणे वृद्ध ॥ १ ॥ पूजोरे ॥ १ । चोथे पदे उवज्झाय जपीजे पाचमे साधु, छट्टे दर्शन सातमे नाण भक्ते आराधु ॥ २ ॥ पू० ॥ आठमे पद चारित्र नमीजे, नवमे तप तीम, ए नवपद भावे आराध्या श्रीपाले जीम ॥ ३ ॥ पूजोरे ॥ मन वच तनु त्रिहु शुद्धि कीजे पडिकमणा दोय, देवत्रिकाले वदो तीम वली, पूजा त्रिण होय ॥ ४ ॥ पूजोरे ॥ गुणणुं तेर सहस उत्कृष्ट अथवा दोय सहस, भूमि स

ते पण देव अनत छे जस गाजे छे
एक ठामे नवि सकोच त्रिभुवन राजे छे ६
छत्रीस छत्रीशी गुणे ,,
गुरु तत्वमा मुख्य कहाय ,,
तीर्थकर सम तेह छे ,,
गौतम प्रमुख सूरि राय ,, ७
सूरि सम पाठक वळी ,,
पण वीस गुणवत्त महत ,,
सयल जीव उपगारीया ,,
प्रणमो गुरुपद विरतत ,, ८
शिवमारग साधक मुनि ,,
करे अरस विरस आहार ,,
ते पण गुरु तत्त्वे नमो ,,
गुण सत्तावीश आधार ,, ए
समकीत सडसठ भेदथी ,
आराधो थइ उजमाल ,,
भेद एकावन नाणना ,,
समझो गुरुनिकट रसाल ,, १०

कारण सर्व शिरोमणि जस गाजे छे
जीहा लहीये तत्त्वविचार त्रिभुवन राजे छे
धर्मी पाच सोहामणां ,,
तिहा लहीये तत्त्वविचार ,, २
वर्जित दोप अढारथी ,,
अड प्रातिहार्य धार ,,
चोत्रीस अतिशय राजतो ,, ,,
गुण पात्रीश वाणी उदार ,, ३
गुण ठाणे तेरमे तथा ,,
चौदमे वरते जिनराज ,,
देवतत्त्व अरिहतजी ,,
प्रणमो भवि आतमकाज ,, ४
आठ कर्मक्षयथी थया ,,
गुण अड एकत्रीश विशाल ,,
अव्याबाध सुखी घणा ,,
जस सादि अनतह काल ,, ५
जाणे लोकालोकने ,,
पण नवि हरखे नवि शोच ,,

॥ श्रीरूपातीत परमातमा, गुण वरीया एकत्रीश, वेदी ज लोकालोकना, प्रणमो तास गुणीश॥३॥ श्री०गुणछत्रीश सूरि नमो, छत्रीस छत्रीशी जास। पाठक गुणपचवीसथी, भणीये सूत्र जई पास ॥४॥श्री०गुण सत्तावीश धारजे, मुनिवर नमिये उल्लास, सम्यग्दर्शन पद छठे, भवु सातमे नाणविलास ॥५॥श्री०चारित्र आठमे जाणीये नवमे तवगुण खाण, आराधो भवि एहने, जीम लहो क्रोड कल्याण ॥६॥श्री०शिालहीये एह साधता, जीम जग कुंवर श्रीपाल, उत्तमविजय कृपाथकी, पद्मने मगल माल ॥७॥ इति स्तवनम् ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ॥

॥ सुरमणी सम सहु मत्रमा, नव पद अभिरामी रे लोय ॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग अतरजामी रे लोय ॥ अहो० जग० ॥ १ ॥ त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोकप्रकाशी रे लोय॥ अहो लोका० ॥ एहना श्री अरिहतजी, नमु चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी,

सित्तेर भेद चरण तणा जस गाजे छे
तिम तपना भेद पचास त्रिभुवन राजे छे
धर्मतत्त्व ए चारमा ,,
वदो आणी उल्लास ,, ११
इण परे वहुविध अवतरे ,,
साधन नवपद्मा सार ,,
गुण कुण कही शके एहना ,,
जो होय मुख जीभ हजार ,, १२
विधिपूर्वक आराधता ,,
लहे जिम शिव श्रीपाळ ,,
जिन उत्तम गुण गावतां ,,
इम पद्मने मगल माळ ,, १३

स्तवन बीजु मुजरो ल्योने जालीम जाटनी ए देशी

तत्त्व ते त्रण्य छे जेहमा, देव गुरुनेरे धर्म, श्रीसिद्ध चक्रने जाउ भामणे,अे आकणी ॥धर्मो धर्म वली एहमा जे जिनशासनमर्म ॥१॥ चोत्रीश अतिशय राजतो, वाणी गुणरे पात्रीश। अरिहादेव पहेले पदे,विवरे छे जेह वीस॥

भेदे रे लोय ॥ अहो वा० ॥ वांध्या काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ १० ॥ ए नव पद बहु मानथी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय ॥ अहो ध्या० ॥ नृप श्रीपाल तणी परे, मनवछित पावे रे लोय ॥ अहो म० ॥ ११ ॥ आसो चैत्रक मासमा, नव आंबिल करीए रे लोय ॥ अहो न०॥ नव ओली विधि युत करी, शिवकमला वरीए रे लोय ॥ अहो शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अहो व० ॥ श्री जिनलाभ कहे सदा अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अहो अ० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पद स्तवन ॥

॥ राग मारु ॥ तीरथनायक जिनवरुजी, अतिशय जास अनुप ॥ सिद्ध अनन्त महागुणीजी, परमानद सरूप ॥ भविक मन धारजो रे ॥ १ ॥ धारजो नवपदध्यान ॥ भ० ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण छत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरुजी, श्रुतदायक सुविलास ॥ भ० ॥२॥ सुमति गुपतिधर शोभ-

थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो न० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपी रे लोय । अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे शोभता, सुदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजे पदे, वंदु अविकारी रे लोय ॥ अहो व० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, सवेग समाधि रे लोय ॥ अहो स० ॥ ५ ॥ पचाचार पालणपरा, पचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अहो प० ॥ गुणरागी मुनि पाचमे, प्रणमु वडभागी रे लोय ॥ अहो प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अहो श्रुत० ॥ छट्ठे गुण दरसण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ॥ अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ८ ॥ आठमे चारित्रपद नमो, परभाव निवारी रे लोय ॥ अहो प० ॥ खंत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ९ ॥ नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यतर

॥ अथ पंचम स्तवनम् ॥

॥ भविया श्री सिद्धचक्र आराधो, तुमे मुक्तिमारगने साधो, इह नरजव दुर्लभ लाधो हो लाल ॥ नव पद जाप जपीजे ॥ १ ॥ त्रण टक देव वादीजे, त्रिहु काले जिन पूजीजे, आंबिल तप नव दिन कीजे हो लाल ॥ न० ॥ २ ॥ सुदि आसो चैत्रज मासे, तप सातमथी अभ्यासे, पद सेव्या पातक नासे हो लाल ॥ न० ॥ ३ ॥ मयणा ने नृप श्रीपाले, आराध्यो, मंत्र उजमाले, एह दुख दोहगने टाले हो लाल ॥ न० ॥ ४ ॥ एहनी जे सेवा सारे, तस मयगल गाजे बारे, ईति भीति अनीति निवारे हो लाल ॥ न० ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व विकार अनिष्ट, जाय जाये दोषी दुष्ट, इण सेव्या समकित पुष्ट हो लाल ॥ न० ॥ ६ ॥ जशवंत जिनेंद्र सुसाखे, भाव सिद्धचक्रना गुण भाखे, ते ज्ञानविनोद रस चाखे हो लाल ॥ न० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सप्तम स्तवनम् ॥

॥ चिंतामणि स्वामी सच्चा साहेब मेरा ए ॥ देशी ॥ आराहो प्राणी साची नवपद सेवा ॥ ए आंक-

ताजी, साधु समतावत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरूजी, ज्ञानप्रकाश अतन्त ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छे रे तप उत्तम विधि होय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥भ० ॥४॥ अमृतसम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुभव कारणेजी, नित प्रति नमत कल्याण ॥ भ० ॥५॥ इति नवपदस्तवनम् ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ राग प्रभाती ॥ नवपद ध्यान धरो रे ॥ भविका न० ॥ मन वच काया कर एकते, विकथा दुर हरो रे ॥ भ० न० ॥ १ ॥ मन्त्र जन्त्र अरु तन्त्र घणेरा, इन सबकु विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपने, पुण्य भंडार भरो रे ॥ भ० न० ॥ २ ॥ अड सिद्ध नवनिध मंगलमाला, संपत्ति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, शिवतरु बीज खरो रे ॥ भ० न० ॥३॥ इति श्रीसिद्धचक्रस्तवनम् ॥

जिनेंद्र ज्ञानविनोद प्रसगे, भक्ति करो भगवानकी ॥
॥ बलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ नवम स्तवनम् ॥

॥ पूज्य पधारो मरु देशे ए देशी ॥

नवपद महिमा साभलो, वीर भाखे हो सुणो पर्षदा बार के ॥ ए सरिखो जग को नहीं, आराध्यो हो शिवपद दातार के ॥ न० ॥ १ ॥ नव ओली आंबिल तणी, भवि करीए हो मनने उल्लास के ॥ भूमिशयन ब्रह्मवत धरो, नित सुणीए हो श्रीपालनो रास के ॥ न० ॥ २ ॥ नव विधिपूर्वक तप करी, उजमणु हो कीजे विस्तार के ॥ साहामी सामिणी पोषीए, जेम लहीए हो भवनो निस्तार के ॥ न० ॥ ३ ॥ नरसुख सुर सुख पामीए, वली पामे हो भवभव जिनधर्म के ॥ अनुक्रमे शिवपद पण लहे, जिहा मोटा हो अक्षय सुख शर्म के ॥ न० ॥ ४ ॥ साभली भावियण दिल धरो, सुखदायी हो नवपद अधिकार के ॥ वचनविनोद जिनेंद्रनो, मुज होजो हो भवभव आधार के ॥ नवपद महिमा साभलो ॥ ५ ॥ इति ॥

णी ॥ नवनिधि आपे नव पद सेवे, इम भाखे श्री जिनदेवा ॥ आ० ॥ १ ॥ श्रीसिद्धचक्र धरो नित्य दिल में, जैसे गजमन रेवा ॥ आ० ॥ २ ॥ अरिहंतादिक एक पद जपता, हारे लहीए सुख सदैवा ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुदित जपता किम करी न करे, सुरसुख-द्रुमफल लेवा ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिनेन्द्र कहे इम ज्ञानविनोदे, हर्षित थ्यो नित मेवा ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टम स्तवनम् ॥

॥ राग सारग ॥

॥ गौतम पूछत श्री जिन भाखत, वचन सुधारस पानकी ॥ वलिहारी नवपद ध्यानकी ॥ १ ॥ नव पद सेवे नवमे स्वर्गे, पावत ऋद्धि विमानकी ॥ व०॥२॥ याकी महिमा वल्लभ हमकु, जेसे जसोदा कानकी ॥ व० ॥ ३ ॥ पावे रूप सरूप मदनसो, देही कंचन वानकी ॥ व० ॥ ४ ॥ याकी ध्यान हृदय जब आवत, उपजत लहेरी ज्ञानकी ॥ व० ॥ ५ ॥ समकित ज्योति होवे दिल भींतर, जैसे लोकनमे भानकी ॥ व० ॥६॥

शक ॥ आ० जिनवर जन आगे भणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निशिदिश, कहीए वीशवावीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परिहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहना कीजे जत्न ॥ आ० ॥ मन्त्र नहीं एह उपरे जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर जक्ष, होजो मुज परतक्ष ॥ आ० ॥ हु किंकर छु ताहरो जी ॥ पाम्यो तुहीज देव, निरंतर करु हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करु छु एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमने शु कहीए वली वली जी ॥ श्री लब्धिविजय गुरुराय, शिष्य केसुर गुण गाय ॥आ०॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

अवसर पामीने रे, कीजे नव आंबिलनी ओली ॥ ओली करता आपद् जाये, ऋद्धि सिद्धि लहीए बहुली ॥ आ० ॥ १ ॥ आसो ने चैत्रे आदरशुं, सातमथी संभाली रे ॥ आलस महेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दिवाली ॥ आ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते,

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ आठ लालनी देशी ॥

समरी शारदा माय, प्रणमी निज गुरु पाय ॥ आठे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशु जी ॥ ए सिद्ध चक्र आधार, भवि ऊतरे भवपार ॥ आ० ॥ ते भणी नवपद ध्यायशु जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जसगुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समया सकट उपशमे जी ॥ लहीए वछित भोग, पामी सवि सजोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी वहु नमे जी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोग रहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरे जाय ॥ आ० ॥ आपे मंगलमालने जी ॥ ३ ॥ ए सम अवर न कोय, सेवे ते सुखीओ होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी ॥ नव आंबिल तप सार, पडिकमणु दोय वार ॥ आ० देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गणणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल जले जी ॥ आराधे सिद्धचक, सानिध्य करे तेनी

जग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहा नवपद आधार ॥ भ० ॥ ए आकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधना ॥ लाला ॥ नंदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाभिगम माँहि कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ ज० ॥ २ ॥ जीहो नवपद केरा यन्त्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ला०॥ नासे पापनो व्याप ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारज ॥ला० ॥ उवझाय साधु ए पच ॥ जीहो दसण नाण चारित्त तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो नवपद आराधता ॥ ला० ॥ चपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीओ थयो ॥ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोइंगे पर्वत धुमलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीए रे लो. राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो० बे पुत्री तस बाल रे ॥सु०॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे

प्रेमेशु पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ आ० ॥ ३ ॥ देहरे जइने देव जुहारो, आदीश्वर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, भावेशुं भगवंत ॥ आ० ॥ ४ ॥ बे टंके पडिक्कमणुं बोल्युं, देववंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतरजामी आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथे संचरता, आवे भवनो अंत ॥ आ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणु सुदि चैत्रीए, बारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गाता सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ आ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भांजीने, मुक्तिपुरीमां महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंवर बेठा गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ ॥ जीहो आसोइ चैत्री तणी ॥ लाला ॥ अट्ठाइ विशेष भविकजन ॥ जिनवर

जग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहा नवपद आधार ॥ भ० ॥ ए आकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाभिगम माहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ ज० ॥ २ ॥ जीहो नवपद केरा यत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ला०॥ नासे पापनो व्याप ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहत सिद्ध आचारज ॥ला० ॥ उवझाय साधु ए पच ॥ जीहो दसण नाण चारित्त तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपच ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो नवपद आराधता ॥ ला० ॥ चपापति विरयात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीओ थयो ॥ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोदलो पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीए रे लो. राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुदरी मयणासुदरी रे लो० वे पुत्री तस बाल रे ॥सु०॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे

प्रेमेशु पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधी, जाप जपे जपमाली ॥ आ० ॥ ३ ॥ देहरे जइने देव जुहारो, आदीश्वर अरिहत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, भावेशु भगवत ॥ आ० ॥ ४ ॥ बे टके पडिक्कमणुं बोल्यु, देववदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परे समजी, चित्तमा राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अतरजामी आराधो एकात रे ॥ स्याद्वादपथे सचरता, आवे भवनो अत ॥ आ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुं सुदि चैत्रीए, बारशे बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गाता सुख सपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ आ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी चाले रे ॥ भवनी भावठ ते भाजीने, मुक्तिपुरीमा महाले ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्रजीनु स्तवन ॥

॥ जीहो कुवर बेठा गोखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमु दिन प्रत्ये जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ ॥ जीहो आसोइ चैत्री तणी ॥ लाला ॥ अट्ठाइ विशेष भविकजन ॥ जिनवर

जग जयकार ॥ १ ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ भ० ॥ ए आकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधना ॥ लाला ॥ नदीश्वर सुर जाय ॥ जीहो जीवाभिगम माहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ भ० ॥ २ ॥ जीहो नवपद केरा यत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजे रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ला०॥ नासे पापनो व्याप ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारज ॥ला० ॥ उवझाय साधु ए पच ॥ जीहो दंसण नाण चारित्त तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो नवपद आराधता ॥ ला० ॥ चपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखीओ थयो ॥ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कोइला पर्वत धूधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालव धुर उज्जेणीए रे लो. राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुणी नर ॥ सुरसुदरी मयणासुदरी रे लो० वे पुत्री तस बाल रे ॥सु०॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए रे

लो०॥१॥ जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु०॥श्री०॥ ए आंकणी॥ पहेली मिथ्याश्रुत भणी रे लो, बीजी जिन-सिद्धांत रे ॥ सु०॥ बुद्धिपरीक्षा अवसरे रे लो० पूछो समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥श्री० ॥ २ ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो० कोप्यो ते तब नृपभाण रे॥सु० ॥ श्री० ॥३॥ कुष्ठी वर परणावीयो रे लो० मयणा वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रामा हजीय विचारीए रे लो० सुंदरी विणसे तुज देह रे ॥सु० ॥श्री०॥४॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो० निरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥पुण्य-पसाये कमला लही रे लो० वाध्यो घणो ससनेह रे ॥सु०॥ श्री० ॥५॥ माउले वात ते जब लही रे लो० वादवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु० ॥ निज घर तेडी आवीयो रे लो०आपे निज आवासरे ॥सु०॥श्री०॥६॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो० हु जाउ परदेश रे ॥सु०॥ माल मता बहु लावशु रे लो० पूरशु तुम तणी खांत रे ॥सु०॥ श्री० ॥ ७ ॥ अवधि करी एक वर-

यनी रे लो० चाल्यो नृप परदेश रे ॥सु०॥ शेठ धवल साथे चल्यो रे लो०जलपथे सुविशेष रे ॥सु०॥श्री०॥८॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी वब्बरपति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्याह॥ जिनवर वार उघाडते रे, कनकेतु बीजी त्याह ॥ १ ॥ चतुर नर, श्रीश्रीपालचरित्र ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्रतटे आवत ॥ मकरकेतु नृपनी सुता रे, वीणावादे रीझत ॥ च० ॥२॥ पांचमी त्रैलोक्यसुदरी रे, परणी कुब्जारूप॥ छठ्ठी समस्या पूरती रे, पच सखीशु अनुप ॥ च० ॥३॥ राधा वेधी सातमी रे, आठमी विष उतार ॥ परणी आव्यो निज घरे रे, साथे वहु परिवार ॥ च० ॥४॥ प्रजापाले सांभली रे, परदल केरी वात ॥ खधे कुहाडो लेइ करी रे, मयणा हुइ निरयात ॥ च० ॥ चपा राज्य लेइ करी रे, भोगवी कामित भोग ॥ धर्म आराधी अवतर्यो रे, पहोतो नवमे सुरलोक । चतुर नर ॥६॥ श्रीसं

॥ ढाल चोथी ॥

॥ फत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ ए महिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीए ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ अडदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहु दिशे सिद्धादिक चउ, चक्र दिशे तु गुणधार ॥ मो० ॥ श्री० ॥ २ ॥ वे पडिक्कमणां जत्रनी, पूजा देववदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन साविशेषथी, पचामृत कीजे पखाल ॥ मो० ॥ श्री० ॥३॥ भूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीए, धरो सद्दहणा भोग ॥ मो० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ गुरु पडिलाभी पारीए, साहाम्मिवच्छल पण होय ॥ मो० ॥ उजमणा पण नव नवा-फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ श्री ॥५॥ इह भव सवि सुखसंपदा, परभवे सवि सुख थाय ॥ मो०॥ पंडित शान्तिविजय तणो, कहे मानविजय उवझाय ॥ मोरे लाल ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ नवपदजीनुं स्तवन ॥

॥ नव पद ध्यान सदा जयकारी ॥ ए आंकणी ॥ अरिहत सिद्ध आचारज पाठक, साधु देखो गुणरूप उदारी ॥ नव पद० ॥ १ ॥ दरशन ज्ञान चारित्र हे उत्तम, तप दोय भेदे हृदय विचारी ॥ नव० ॥ २ ॥ मत्र जडी ओर तत्र घणेरा, उन सबकुं हम दूर विसारी ॥ नव० ॥३॥ वहोत जीव भवजलसे तारे, गुण गावत हे वहु नर नारी ॥ नव० ॥ ४ ॥ श्री जिनभक्त मोहन मुनि वदन, दिन दिन चडते हरख अपारी ॥नव०॥५॥

॥ श्री नवपदजीनु स्तवन ॥

॥ नव पद धरजो ध्यान, भवि तुमे नव पद धरजो ध्यान ॥ ए नवपदनु ध्यान करता, पामे जीव विसराम ॥ भवि० ॥१॥ अरिहत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल गुणखान ॥ भवि० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए उत्तम, तप तपो करी वहुमान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ आसो चैत्रनी सुद सातमथी, पूनम लगे प्रमान ॥ भवि० ॥ ४ ॥ एम एकाशी आंबिल कीजे,

वरष साडाचारनुं मान ॥ भवि० ॥ ५ ॥ पडिकमणा दोय टकना कीजे, पडिलेहण बे वार ॥ भवि० ॥ ६॥

## श्री अरिहंत पद स्तवन

अरिहंत पद आराधीये, आणी उलट भाव, भविक जीव, अवहर मदमोचन धणी,ज्यों कंचन शुद्ध ताव। भविक जीव ॥ अरि० ॥ १ ॥ त्रीजेर भवे वर ध्यानथी, समकीत बीज अंकुररे, भविक जीव,अरिहंत पदशुद्ध अनुग्रहे, सबल करम चकचूररे ॥ भविक जीव ॥अरि०॥२॥ अलख निरंजन आतमा,घटघट भाव प्रकाशरे,भविकजीव, भरमतिमिर घन सहुने,ज्यों रविकिरण उजासरे। भविक जीव ॥ अरि० ॥ ३ ॥ मोर पयोधर ऋतुममे,हरखे चित्त उदाररे,भविक जीव। जिनवाणी हियडे धरी, उपजे अनुभव साररे, भविकजीव ॥ अरि० ॥ ४ ॥ जलनिधि जल कोण भर शके, कोण तोले नगराजरे, भविक जीव। कहे जिनपद्म मुनीश्वर, त्रिभुवन जग शिरताजरे, भविक जीव ॥ अरि० ॥ ५ ॥ इति ॥

## श्री सिद्धपद स्तवन

भविजन वंदोजी,सिद्ध शुद्ध आतमारे आणी ममता अंग। सिद्ध समरतारे सुगतिपणो वरेरे, लोहा पारससंग ॥ भवि० ॥ १ ॥ पचदश भेदे सिद्धपणु वरीरे,मेटी सकल

उपाधि । निजगुण ध्याने उज्वल आतमारे अध्यातम पद साध ॥ भवि० ॥ २ ॥ सवल करमरे मगे विलुरीयोरे, चेतन चिहुगति सग । सघन करममल मेटी ज्ञानथीरे, पामी मुक्ति उत्तग ॥ भवि० ॥ ३ ॥ इम शुद्ध भावेरे भवि तुमे चादजोरे; सिद्ध सकल शुचिज्ञान । ए पद ध्याता चेन जिन हुएरे, इयल ज्यु भमरी ध्यान ॥ भवि० ॥ ४ ॥ शुचि संवेगीरे ममता आगरूरे, परमातम सुखकद । अद्भुत ज्योतीरूप माहे सदारे पभणे पद्म सुरींद भवि० ॥ ५ ॥ इति

## श्री आचार्य पद स्तवन

सूरि सकल भवि वादीये, पद त्रीजे हो मद मंच्छर टालके । प्रकटे आत्मप्रबोधता, तस रिकमे हो जगजीवन धारके ॥ सूरि० ॥ १ ॥ पच आचारपणु ग्रही, अनपारे हो शुचि तीक्ष्ण धाररे । कुमति कंदर्प कुकर्मन, जिम ज्वाले हो चन पवन तुपारके ॥ सूरि० ॥ २ ॥ अप्रमत भावे देशना टाली विपता हो वली विषय कषायरे । भव्य सुणी मोही रह्या, जीम मधुकर हो नित्य कमल लोभायके ॥ सूरि० ॥ ३ ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयणा हो इम चार विचारके । गुण प्रधानपणु वरी, भयगरे हो जाणी उप कारके ॥ सूरि० ॥ ४ ॥ गुण छत्रीस शु शासना, पटधर हो जगदीपक आपके । कहे जिनपद्म मुनीश्वर, हो मीटे तनु तापके ॥ सूरि ॥ ५ ॥ इति

व- जन ० ॥

## श्री उपाध्याय पद स्तवन

चोथे पद उवज्झाय जपीजे,नित्य समकित दृढ चित्त कीजेरे।समता रस आणी ॥जडपणु तज चेतन शुद्धधारे, भविक आतमकाज सुधारेरे । समता रस आणी ॥ १ ॥ अग उपाग बहु सूत्र जाणे, निज आतम तत्त्व पिछाणे र। समता रस आणी ॥ शुद्ध पचीस गुणे विकसता, शुचि निरुपम धर्म दीपतारे ॥ समता रस आणी ॥ २ ॥ पाच समिति त्रण गुप्ति बीराजे, वाणी मेघतणी परे गाजेरे। समता रस आणी॥ उलट आणी भविजन धारो,निजकर्म उपाधि विदारोरे, समता रस आणी ॥ ३ ॥ अनुभव घर तीक्ष्ण व्रतपाले,नित्य जिनशासन अजवालेरे। समता रस आणी॥ सिद्धामान महातम मोटी, वदे पद्मसूरि कर-जोडी रे, समता रस आणी ॥ ४ ॥

## श्री साधुपद स्तवन

मुनि पचम पद वादिये । समता रसना धोरीर ।
शा त सुधारस वयणसु, आशापूरो मोरीर ॥मुनि०॥१॥
चारित्र रतन चूडामणि, समिति पच प्रकारोर ।
दशविध धर्म मुनितणो, पाले शुद्ध आचारोर ॥मुनि०॥२॥
अढार सहस शीलागना, गुणधारे निजअगेरे ।
षट्कायक प्रतिपालना, विचर वसुधा उछरगेरे ॥मुनि०॥३॥
फुलेजी तरु ऋतुराजरे । बेठे भमर अपारोरे ।

तसु पोडा व्यापे नहि, इणविध ल्ये मुनि आहारोरे
॥ मुनि० ॥ ४ ॥

गुणनिधि करुणा आगर, समता रसना दरीयारे।
वदे पद्म मुनिश्वर इणविध, भवोदधि तरीयारे॥ मुनि० ॥
॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ श्री दर्शनपद स्तवन ॥

सम्यक्त्व नामे हो दर्शनपद नमुरे, आणी सुमति उदार। सडसठ बोले हो जिनवर वर्णव्युं रे। सूत्रसिद्धांत मझार ॥ सम्य० ॥१॥ पंच प्रकार हो उपशम आदिधीरे, ज्ञानादिक गुण जोय। उज्वल ध्याने हो दर्शन सेवियेरे, रागादिकमल खोय ॥ सम्य० ॥ २ ॥ दर्शन सम्यग् हो शुध्ध प्रकटया विनारे, चारित्र ज्ञाननो भंग। जलधर धारा हो जगव्यापे नहिरे,तो त्रिणमें लोक उमंग ॥ सम्य० ॥ ३ ॥ तत्त्व त्रिभेदे हो जिनवर निज कह्यारे। तपजप ध्यान आचार। ए सहु फले हो सम्यग्दर्शने रे। विकसे ज्युं वन जलधार ॥ सम्य० ॥ ४ ॥ सुमति सचेंगी हो शुध्ध स्वरूपनार। दर्शनज्ञान दिणंद। भविजन धारो हो दर्शन नेहशुंरे, पभणे पद्मसूरिंद ॥ सम्य० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

## श्री ज्ञानपद स्तवन

ज्ञानपद हितधार, भवि ए तो ज्ञानपद हितधार, प रम तिमिर विदार ॥ भवि० ॥ सर्व रात्रिमा इन्दुभज- दिवस रवि निरधार । जगतजन्तु मोहमदधर तास भजन कार ॥ भवि० ॥ १ ॥ विकट वनमे प्रभा सुरतरु, विन शुचि गुणसार, वसुधा माहे शोभत मेरु, शिवपंथ ज्ञा उदार ॥ भवि० ॥२॥ परम पच प्रकार अनुपम, मति श्रु- अवधि विचार, जननी उदरे धर्या छे जिनवर, सर्व चोथो सार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सघनघाती कर्मवनदल प वन तास तुषार, जगत जिनवर नामधर शुचि, उद्धये आगम अपार भ० ॥ ४ ॥ सुमतिधर भवि ज्ञानतज मद मेटी विषय विकार । पद्मसूरि भणे निजहेते, ज्ञानथी हो निस्तार । भवि० ॥ ५ ॥ इति ॥

## श्री चारित्रपद स्तवन

वदो भवि चारित्र गुणधामि अष्टमपद अभिरामीरे । समता रस अगे पूरण पामी, विपत विदारण कामीरे ॥ वदो० ॥ १ ॥ अर प्रभावे अनुज प्रकटे, परिमल पवन प्र- काशेर, धर्मनिपुणना ज्ञान विकासे, चारित्र तास उजा- सेरे ॥ व० ॥२॥ सामायिक छेदोपस्थापनीय वळी परि- हारविशुद्धीरे सूक्ष्मसपराय दशमे गुणठाणे [illegible] प्रसिद्धोरे ॥ व० ॥ ३ ॥ यथाख्यात चारित्र ए

निकट विभासेरे, वरते क्षीणमोह गुणठाणे, कर्म कठोर विनासेरे ॥ वदो० ॥ ४ ॥ एकपण जेह हृदय धरता, ध्यावे इन्द्र आणदेरे। वदे पद्म सूरि निजहेते अष्टम पदसुख पदोरे ॥ वदो० ॥ ५ ॥

## श्री तप पद स्तवन

नवमे पद प्रणमु सुदार, तप आतम शुद्धिहेतु। समल अथिर पद परिहरीरे, कर्मभजन धूमकेतु ॥ भविक जीव धारो तप शिवहेत, ज्वाले कर्मनु खेत्र ॥ भविकजीव० ॥१॥ विकटसघन वन सहररे, दावानल असराल। ज्वाले कम कपायनेरे, क्षमासहित तपपाल ॥ भवि० ॥ २ ॥ द्वादशविध तपस्या तणारे, आगळ अग मझार। बाह्य अभ्यतर भेद दुवुरे, पदपद भेद विचार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ अरिहत जाणे ज्ञानथीरे, इणभव मोक्ष पहोंचत। क्षमासहित तप आदरेरे, धारे शुचि मन सत ॥ भवि० ॥ ४ ॥ आमोसही आदे करीर, अष्ट महासिद्ध जाम। उपजे गणधर वृन्दनेरे, सारे सघना काम ॥ भवि० ॥ ५ ॥ वनतरूवृन्द विवस्था सहारे, वाजेवाय कुवाय। नविफूले नविफली शकेरे, तीम क्षमारहित तप जाय ॥ भवि० ॥ ६ ॥ तपपद शुचि आराधतारे, छुटे कर्मनी कोड। पद्मसूरि भणे नेहस्यु रे, मान महातम मोड ॥ भविक० ॥ ७ ॥ इति.

## कलश

नवपद ध्यान प्रभावथी,शिवशुचि पदपावे। भरमति मिरघन संहर, समता रस आवे ॥ नव० ॥ १ ॥ करम कलक पके करी,भ्रम चेतन पावे। चिहु दिशि भ्रमत फीरे सदा, मृगनिंद न पावे ॥ नव०॥२॥ सद्गुरु सगपणो धरी, जडपद मीट जावे। उपल अनल प्रभावथी,कलधौत कहावे ॥ नव० ॥ ३ ॥ शुद्ध सवेगपणु धरी, ममता तजी ध्यावे। भवोदधि भ्रमणपणु मटे, चेतन जिन थावे ॥ नव० ॥ ४ ॥ शुद्ध स्वरूपपणे करी, निजकर्म खपावे। कहे जिनपद्म मुनीश्वर, ज्योतिरूप कहावे ॥ नव० ॥५॥

॥ इति श्री नवपद स्तवन संपूर्णम् ॥

## नवपद स्तवन

अहो भविप्राणी रे सेवो। सिद्धचक्र ध्यान समो नहीं मेवो ॥ अहो० ॥ जे कोइ सिद्धचक्रने आराधे, तेहनो जगमाहि जश वाधे ॥ अहो० ॥ १ ॥ पहेले पदे रे अरिहंत। बीजे सिद्ध बुद्ध ध्यान महंत ॥ त्रीजे पदे रे सुरीश। चोथे उवज्झाय ने पाचमे मुनीश ॥ अ० ॥ २ ॥ छठ्ठे दरसण रे कीजे। सातमे ज्ञानथी शिवसुख लीजे। आठमे चारित्र पालो। नवमे तपथी मुक्ति भालो ॥ अ० ॥ ३ ॥ आंबिल ओलो रे कीजे। नोकारवाली वीश ग-

तीजे ॥ अणे टकना र देवो । पडिलेहण पटिकमणु सेवो । अ० ॥ ४ ॥ गुरुमुख किरिया रे कीजे । देवगुरुभक्ति चेत्तमा धरीजे ॥ एम कहे रामला रे शिशो ओली उजवीए जगीशो ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति ॥

## सिध्धचक्रजीनु स्तवन.

श्री सिध्धचक्र आराधो । मनवांछित कारज साधो रे ॥ भवियां ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ पद पहेले अरिहंत भावो । जेम अरिहंतपदवी पावो रे ॥ भवियां ॥ श्री०॥ पद दूजे सिद्ध मनावो । ज्यम सिद्ध सरूपी होइ जावो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ सूरि त्रीजे गुणवंता । जशनां एक जग जयवता र ॥ भ० ॥ श्री० ॥ चोथे पदे उवझाया । जेणे मारग आण चलाव्या र ॥ भ० ॥ श्री० ॥ साधु सकल गुणधारी, पद पचमे जग हितकारी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ दरसण पद छठ्ठे चंगे, जेम कीर्रात होय शीर नदी रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ज्ञानपद सातमे दाख्यो । चारित्रपद आठमे भाख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ तप नवमे पद शाख्यो, जेम वीरजीने वचने राख्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ श्रीपालने मयणा लीधो, नवमे भव कारज सिध्यो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ नवपद महिमा आणी. जिनचंद्रहोए मन आणी रे ॥ भ० ॥ श्री ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विनयविजयजी कृत ॥

## श्री सिद्धचक्र स्तवन

॥ ढाळ पहेली ॥ चेतन चेतोरे आतमा ॥ ए देशी ॥

सरस्वतीने चरणे नमी,प्रणमी सद्गुरु पायरे । सिद्ध-चक्र गुण गाइस्यु, मुझ मन हर्ष उछायरे। धन्य धन्य श्री सिद्धचक्रने ए आकणी ॥ १ ॥ तेह दिवसे सुरपति मली, जाइ नदीश्वर द्वीपेरे । उत्सव महोत्सव सुर करी, कर्म कटकने जीपेर ॥ धन्य० ॥ २ ॥ अट्टाइ महोत्सव करे, जीवाभिगमनी साखेरे । श्रेणिकराये पूछीयु, इन्द्रभूति इम दाखेरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ श्री श्रीपालमयणापरे, जाप-जपो भव्यप्राणीरे । रोगशोकने आपदा जीम शमे ते उकाय प्राणीर ॥ धन्य ॥ ४ ॥ आसो शुदि सातम थकी पुनम लगे ओलीए कर। एक्यासी नव ओळीए, आबील तप सुविवेकरे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ साढाचार सवत्सरे, तप-नो एह परिणामरे । गणणु पद एकएकनु, सहस्रदोय सुविज्ञाने र ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

॥ ढाळ बीजी ॥ आदिजिनेश्वर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

बारगुणे अरिहंतध्याउ, सिद्धभजो गुण आठेरे छत्रीश गुणे आचार्य सोहे, पचवीश ऊपद पाठेरे ॥ १ ॥ गुण सतावीश साधु वदु, दर्शन सडसठ भेदेर । ज्ञान एकावन गुणे सपूरो, चारित्र सीत्तेर उमेदेरे ॥ गु० ॥२॥ पचास भेदे तपने जपीये, गुणणु ए वर्तमानरे । तेर सह-

सवली धीजे मेदे, विद्याप्रवाद पुराणरे । गुण० ॥ ३ ॥ अरिह्त आदे पचपद केरा, गुण छे एकसो आठ रे । दर्शन ज्ञानना दश वली जाणो, चारित्रपद सत्तरपाठरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ तपना बारगुण सर्व मलीने, एकसोत्रीसज थाय रे । नोकारवाली एह प्रमाणे, समर्थ भवदुःख जायरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ हवे उजमण विधिस्यु बोलुं, साभळज्यो चित्तलाय रे । उजमणाथी फल बहु पावे, जीम जलपकज न्याय रे ॥ गु० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रेणिक मन अचरिज हूओ ॥ ए देशी॥

तपजप करीये शक्तिथी, तेहतणो छे भेद रे । शक्ति प्रमाणे उजवो,भवभवना दुःख छेद रे । वीरवचनथी जाणज्यो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ऊजमणा विण फल कह्यु, जीम अलुणो धान्य रे । शक्ति घणी छे जेहनी, पण उजवे नहिं मनमान्योरे ॥ वीर० ॥ २ ॥ तेहने फल थेतो कह्यो, सामळ श्रेणिकरायरे । कुकश आपे वर्तिने, पुण्य ते जे तो थायरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ आत्मज्ञाने धारीये, धरीये धरीये शीयल जगीशरे । गुरुपडिलाभीने पारीये, स्वामिवत्सले फल ले सीर ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पालणपुरमा प्रेमस्यु, श्री सिद्धचक्र गुणगायार । चतुर चोमासु तिहा रही. ऊजमणे मन भायारे ॥ वीर० ॥ ५ ॥

## श्री सिद्धचक्र स्तवन

॥ ढाळ पहेली ॥ चेतन चेतोरे आतमा ॥ ए देशी ॥

सरस्वतीने चरणे नमी,प्रणमी सद्गुरु पायरे । सिद्धचक्र गुण गाइस्युं, मुझ मन हर्ष उछायरे । धन्य धन्य श्री सिद्धचक्रने ए आकणी ॥ १ ॥ तेह दिवसे सुरपति मली, जाइ नदीश्वर द्वीपेरे । उत्सव महोत्सव सुर करी, कर्म कटकने जीपेर ॥ धन्य० ॥ २ ॥ अट्ठाइ महोत्सव करे, जीवाभिगमनी साखेरे । श्रेणिकराये पूछीयु, इन्द्रभूति इम दाखेरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ श्री श्रीपालमयणापरे, जापजपो भव्यप्राणीरे । रोगशोकने आपदा जीम शामे ते उकाय प्राणीरे ॥ धन्य ॥ ४ ॥ आसो शुदि सातम थकी पूनम लगे ओलीए करे । एक्यासी नव ओळीए,आबील तप सुविवेकर ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ साढाचार सवत्सरे, तपनो एह परिणामरे । गणणु पद एकएकनु, सहस्रदोय सुविज्ञाने रे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

॥ ढाळ बीजी ॥ आदिजिनेश्वर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

बारगुणे अरिहतध्याउ, सिद्धभजो गुण आठेरे छत्रीश गुणे आचार्य सोहे, पचवीश ओपद पाठेरे ॥ १॥ गुण सतावीश साधु वदु, दर्शन सडसठ भेदेरे । ज्ञान एकावन गुणे सपूरो, चारित्र सीत्तेर उमेदेरे ॥ गु० ॥२॥ पचास भेदे तपने जपीये, गुणणु ए वर्तमानरे । तेर सह-

सवली बीजे मेदे, विद्याप्रवाद पुराणरे । गुण० ॥ ३ ॥ अरिहत आदे पचपद केरा, गुण छे एकसो आठ रे । दर्शन ज्ञानना दश वली जाणो, चारित्रपट बहुपाठरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ तपना पद्गुण सर्व मलीने, एकसोत्रीसज थाय रे । नोकारवाली एह प्रमाणे समये भवदु ख जायरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ हवे उजमण विधिस्यु बोलु, साभळज्यो चित्तलाय रे । उजमणाथी फल बहु वाधे, जीम जलपकज न्याय रे ॥ गु० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ श्रेणिक मन अचरिज हूओ ॥ ए देशी॥

तपजप करीये शक्तिथी, तेहतणो छे भेद रे । शक्ति प्रमाणे उजवो,भवभवना दु'ख छेद र । वीरवचनथी जाणज्यो ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ उजमणा विण फल कह्यु, जीम अलुणो धान्य रे । शक्ति घणी छे जेहनी, पण उजवे नहि मनमान्योरे ॥ वीर० ॥ २ ॥ तेहने फल थेडो कह्यो, साभळ श्रेणिकरायरे । कुकश आपे वर्तिने, पुण्य ते जे तो थायरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ आत्मज्ञाने धारीये, धरीये थरीये शीयल जगीशरे । गुरुपडिलाभीने पारीये, स्वामि वत्सले फल ले सीरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ पालणपुरमा प्रेमस्यु, श्री सिद्धचत्र गुणगायारे । चतुर चोमासु तिहा रही. उजमणे मन भायार ॥ वीर० ॥ ५ ॥

( कलश )

इम मयल सुहकर सयल पुरदर सस्तव्यो रिसहेश्वर ।
तपगच्छ राजेवड दीवाजे विजय जिनेन्द्रसूरीश्वर ॥
तासपसाए स्तवन पभण्यो शिष्यरूप विजयतणो ।
अढार एकासी आसोपूनम रंगविजय ऊलट घणो ॥ १ ॥
इतिश्री सिद्धचक्र नवपद वर्णन ऊजमणा फलदायक स्तवनम् ॥

## अथ स्तुतिओ ( थोयो )

॥ अथ श्रीअरिहतपद स्तुति ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपोजी ॥ केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनत गुणे करी पूरोजी ॥ तीजे भव थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ वार गुणाकर एहवा अरिहत, आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहंतपदस्तुति ॥१॥

॥ अथ श्रीसिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकु धमन करीने, गमन कियो शिववासीजी । अव्यावाध सादि अनादि, चिदानंद चिद्र-

राशिजी। परमातम पद पूरण विलासी, अघघन दाघ विनाशीजी ॥ अनत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भापीजी ॥ इति सिद्धपदस्तुति ॥२॥

॥ अथ श्रीआचार्यपद स्तुति ॥

पचाचार पाले उजवाले, दोप रहित गुणधारीजी। गुण छत्तीसे आगमधारी, द्वादश अग विचारीजी। प्रवल सवल घनमोह हरणकु, अनिल समो गुण वाणीजी। क्षमा सहित जे सयम पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुति ॥३॥

॥ अथ श्रीउपाध्यायपद स्तुति ॥

अग इग्यारे चउदे पूरव, गुण पचवीसना धारीजी। सूत्र अरथधर पाठक कहीए, जोग समाधि विचारीजी ॥ तप गुणशूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी। मुनि गुणधारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥४॥

॥ अथ श्रीसाधुपद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर सजम पाले, दोप बयाली-

श टालेजी ॥ षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी ॥ पच महाव्रत सूधा पाले, धर्म शुक्ल उजवालेजी ॥ क्षपकश्रेणि करी कम खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥ इति साधुपदस्तुति ॥५॥

॥ अथ श्रीदर्शनपद स्तुति ॥

जिनपन्नत्त तत्त सुधा सरधे, समकित गुण उजवालेजी ॥ भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो, गणधर अरिहत शूराजी ॥ ए दरशनपद नित नित वदो, भवसागरको तीराजी ॥ इति दशनपदस्तुति ॥६॥

॥ अथ श्रीज्ञानपद स्तुति ॥

मति श्रुत इंद्रिय जनित कहीए, लहीए गुण गभीरोजी ॥ आतमधारी गणधर विचारी, द्वादश अग विस्तारोजी ॥ अवधि मन पर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पच ज्ञानकु वदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥७॥

॥ अथ श्रीचारित्रपद स्तुति ॥

कर्म अपचय दूर खपावे, आतमध्यान [illegible] जी ॥ वारे भावना सूधी भावे, सागर [illegible] ॥ षट् खड राजकु दूर तजीने, चक्री [illegible] जी ॥ एहवो चारित्रपद नित वंदो, [illegible] इति चारित्रपदस्तुति ॥८॥

॥ अथ श्रीतपपद [illegible]

इच्छारोधन तप ते [illegible] नेहनो साखीजी ॥ द्रव्य भावसे [illegible], जोगसमाधि राखीजी ॥ चेतन निज गुण [illegible], तेहीज तप गुण दाखीजी ॥ लब्धि [illegible] कारण देखे ईश्वर सेमुस चाखीजी ॥ [illegible] स्तुति ॥९॥

॥ सिद्ध [illegible]

वीर जिनेश्वर [illegible], गौतम दरीआ जी॥ एक दिन [illegible] केडने सचरीआ जी [illegible] मनमा [illegible]

सुणो भविप्राणी जी ॥ १ ॥ मानवभव तुमे पुण्ये पाम्या, श्रीसिद्धचक्र आराधो जी ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया, साधु देखी गुण वाधे जी ॥ दरशण नाण चारित्र तप कीजे, नव पद ध्यान धरीजे जी ॥ धुर आसोथी करवा आंबिल,सुख सपदा पामीजे जी ॥२॥ श्रेणिकराय गौतमने पूछे,स्वामी ए तप केणे कीधो जी ॥ नव आंबिल तप विधिशु करता, वछित सुख केणे लीधो जी ॥ मधुरी ध्वनि बोल्या श्री गौतम, साभलो श्रेणिकराय वयणा जी ॥ रोग गयो ने सपदा पाम्या, श्रीश्रीपाल ने मयणा जी ॥३॥ रुमझुम करती पाये नेउर, दीसे देवी रूपाली जी ॥ नाम चक्केसरी ने सिद्धाइ, आदि जिनवर रखवाली जी ॥ विघन कोड हरे सहु संघना, जे सेवे एना पाय जी ॥ भाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध्य करजो माय जी ॥४॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ श्री सिद्धचक्र सेवो सुविचार, आणी हैडे हरख अपार, जिम लहो सुख श्रीकार ॥ मन शुद्धे ओली

तप कीजे, अहोनिश नव पद ध्यान धरीजे, जिनवर पूजा कीजे ॥ पडिक्कमणा दोय टंकनां कीजे, आठे थुइए देव वादीजे भूमि सथारो कीजे ॥ मृषा तणो कीजे परिहार, अगे शीयल धरीजे सार, दीजे दान अपार ॥ १ ॥ अरिहत सिद्र आचार्य नमीजे, वाचक सर्वे साधु वदीजे, दसण नाण सुणीजे ॥ चारित्र तपनुं ध्यान धरीजे, अहोनिश नव पद गणणु गणीजे, नव आविल पण कीजे ॥ निश्चल राखी मन हो निश्चे. जपीए पद एक एक ईश, नोकारवाली वीश ॥ छेल्ले आविल मोटो तप कीजे, सत्तरभेदी जिनपूजा रचीजे, मानवभव लाहो लीजे ॥२॥ सातसें कुष्टीयाना रोग, नाठा यत्र नमण सजोग दूर हुआ कर्मना भोग ॥ अढारे कुष्ट दूरे जाये, दु ख दोहग दूर पलाये, मनवछित सुख थाये ॥ निरधनीयाने दे बहु धन्न, अपुत्रीयाने ये पुत्ररतन्न, जे सेवे शुद्ध मन्न ॥ नवकार समो नहीं कोइ मत्र, सिद्धचक्र समो नहीं कोइ जन्त्र, सेवो भवि हरखत ॥ ३ ॥ जिम सेव्या मयणा श्रीपाल, ज्वर रोग गयो सुख रसाल पाम्या मगलमाल ॥ श्रीपाल तणी पेरे जे

आराधे, दिन दिन दोलत तस घर वाधे, अति शिवसुख साधे ॥ विमलेश्वर यक्ष सेवा सारे, आपदा कष्टने दूर निवारे, दोलत लक्ष्मी वधारे ॥ मेघविजय कवियणना शिष्य, आणी हेडे भाव जगदीश, विनय वदे निशादेश ४

॥ अथ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ जिनशासन वछित, पूरण देव रसाल ॥ भावे भवि भणीए सिद्धचक्र गुणमाल ॥ त्रिहुं काले एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमरपद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वदो, आचारज उवझाय ॥ मुनि दरिसण नाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नव पद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्याने भविना, भव कोटि दु ख जाय ॥ २ ॥ आसो चैतरमा, सुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगे कीजे, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवु, पद सम साडाचार ॥ एकासी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणी परे, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दु ख दोहग

नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्री सुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्यमेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारज वाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमो, तप ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥१॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वली भावनिक्षेपे गुण गाशे ॥ पडिकमणा देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरि पाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परे भव तरशे। सिद्धचक्रने कुण आवे तोले, एहवा जिनआगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साडाचार वरसे तप पूरु, ए कर्म विदारण तप शूरु ॥ सिद्धचक्रने मनमंदिर थापो, नयविमलेश्वर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ सिद्धचक्र स्तुति ॥

अंगदेश चंपापुरी वासी, मयणाने श्रीपाल सु खासी । समकितसुं मनवासी, आदि जिनेश्वरनी उल्लासी, भावपूजा कीधी मन आशी । भाव धी

न्कामधेणूवम। दुस्खदोहग्गदारिद्दनिन्नासय,सिद्धचक्कं सया सथुणे सासय ॥ १ ॥ तिजगजणसथुणिअपाय पकेरुहा, हेमरूप्पजणासोगनीलप्पहा । सिद्धचक्कं थुणंताण कयनिव्वुइ, सव्वतित्थकरा दितु नाणुन्नइं ॥२॥ जत्थ जिणसिद्धसूरिवायगजइ दंसणं नाणचरणं तव नवपइ । सिद्धचक्कस्स वण्णिआए त सया, नमह सिरिवीरासिद्धतमाणदिआ ॥ ३ ॥ जक्खिणीजक्खवीरदिसिवालया जयविजयजभिणीपमुहवरदेवया । दितु सत्ताण खुद्दाण निन्नासग, सिद्धचक्कं भणताण कल्लाणग ॥ ४ ॥

॥ नवपद स्तुति ॥ ॥

॥ श्री शत्रुंजय तीरथ सार ॥ ए चाल ॥

श्रीसिद्धचक्रमा छे त्रण तत्व। देवगुरु धर्म तणुं एकत्व। आराधो धरी सत्व॥ बे पद देवतत्त्वमा सारा। गुरुतत्त्वे त्रण पद छे प्यारा । धर्म्ममा चार उदारा ॥ विद्याप्रवाद पूर्वथी सार। सिद्धचक्रनो कर्यो उद्धार। पूर्वधरे धरी प्यार॥ विमलेश्वर सुर पूरे आश। जे करे नवपद तप उल्लास। 'हंस' लहे शिववास ॥१॥

## ॥ श्री सिद्धचक्र स्तुति ॥

ज्ञात्वा प्रश्न तदर्थ गणधरमनस प्रागवद्वीरदेव, अर्हत्सिद्धार्यसाधुप्रभृतिनवपदान् सिद्धचक्रस्वरूपान्। ये भुव्याश्रित्य धिष्णं प्रतिदिनमधिक सजपन्ते स्वभक्त्या, ते स्यु श्रीपालवच्च क्षितिवरपतय सिद्धचक्रप्रसादात् ॥ १ ॥ दुस्तीर्णं निस्तरीतु भवजलनिधिक पाणियुग्मे गृहीत्वा, यानेकान् कोटिकुम्भान् कनकमणिमयान् पंष्टिलक्षाभियुक्तान्। गगासिन्धुद्रदाना जलनिधितटतस्तीर्थतोयेन भृत्वा, सत्स्नार्वाधीश्वराणा सुरपतिनिकरा जन्मकृत्य प्रचक्रु ॥२॥ कुर्युर्देवास्त्रिवप्रं रजतमणिमयं स्वर्णकान्त्याऽभिरामे, स्थित्वा स्थाने सुवास्य जिनवरपतय प्रावदन् या च नित्यम्। ता वाचा कर्णकूपे सुनिपुणमतय श्रद्धया ये पिबन्ति, ते भव्या शैवमागागमविधिकुशला मोक्षमासादयन्ति ॥३॥ देवी चक्रेश्वरी स्त्रग्दधति च हृदये पत्तने देवकाख्ये, कामे मोदाभिकीर्णे विमलपदयुजि सिद्धचक्रस्य बीजे। श्रीमद्वार्पादियुक्तैर्विजयप्रभवरैर्वरैरूपैर्मुनीन्द्रै, ९८.

नित्य सुलक्ष्मीविजयपदवृते प्रेमपूर्णे प्रसन्ना ॥ ४ ॥
इति श्रीसिद्धचक्रस्तुतय ।

॥ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय, जपीये नवपदनो, जाप सदा सुखदाय, विधिपूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाल, ते सवि सुख पामे, जेम मयणा श्रीपाल ॥ १ ॥ मालवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत । तस कर्मसयोगे, कोढी मळीयो कत । गुरु वचणे तेणे, आराध्यु तप एह । सुख सपद वरीया, तरीया भवजल तेह ॥२॥ आंबिलने उपवास, छठ वली अठम । दस अठाइ पदर, मासी छमासी विशेष ॥ इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार ॥ जे भवियण करशे, ते तरशे ससार ॥ ३ ॥ तप सानिध्य करशे, श्री विमलेश्वर यक्ष, सहु सघना सकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष। पुडरीक गणधर, कनक विजय बुध शिष्य । बुध दर्शनविजय कहे, पहोंचे सयल जगीश ॥ ४ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रस्तुति ॥

विपुलकुशलमाला केलिगेह विशाला, समविभव-

निधान शुद्धमंत्रप्रधान ॥ सुरनरपतिसेव्य दिव्य-माहात्म्यभव्य, निहतदुरितचक्र, सस्तुवे सिद्धचक्रम् ॥१॥ दमितकरणवाह-भावतो य कृताह, कृतिनिकृति-विनाश पूरिताशिव्रजाशम् ॥ नमितजिनसमाज सिद्ध-चक्रादिबीज, भजति स गुणराजी सोऽनिश सौख्य-राजी ॥ २ ॥ विविधसुकृतशाखो भगपत्रौघशाली, नयकुसुममनोज्ञ प्रौढसपत्फलाढ्य ॥ हरतु विनुवतां श्री सिद्धचक्र जनाना, तरुरिव भवतापा–नागम श्री-जिनानाम् ॥३ ॥ जिनपति पदसेवा सावधाना धुनाना, दुरितरिपुकदंब–कात(त) कांति द धाना ॥ ददतु तपसि पुसा सिद्धचक्रस्य नव्य-प्रमदमिह रताना रोहिणीमुख्य-देव्य ॥ ४ ॥

॥ श्रीसिद्धचक्र स्तुति ॥

पहीले पद जपीये अरिहत, बीजे सिद्ध जपो जयवत, त्रीजे आचारज सत । चोथे नमो उवज्झाय-हसत, नमो लोए सव्वसाहु महत, पांचमे पद विल-सता, ॥ दसण छठ्ठु नमो मतिमत, सातमे पद नमो

नाण अनंत, आठमे चारित्र हुत । नमो तवस्स नवमे सोहत, श्रीसिद्धचक्रनु ध्यान धरत, पातिकनो होय अत ॥ १ ॥ केशर चदन अगर घसीजे, माहे कस्तुरी भलीजे घन घनसार ठवीजे, । गगोदकस्यु न्हवण करीजे श्रीसिद्धचक्रनी पूजा कीजे, सुरभि कुसुम चरचीजे ॥कदरू अगरुनो धूप डहीजे कामधेनुघृत दीप भरीजे, निर्मल भाव वहीजे । अनुपम नवपद ध्यान धरीजे, रोगादिक दु ख दूर हरीजे, मुक्तिवहु परणीजे ॥ २ ॥ आसो ने वली चैत्र रसाल, उज्वल पक्ष ओली सुविशाल, नव आंबिल चोसाल । रोग शोषनो ओ तपकाल, साढा चार वरस तस चाल, वली जीवे त्या भाल ॥जे सेवे भावि थई उजमाल, ते लहे भोग सदा असराल, जीम मयणा श्रीपाल । छडी अलगो आल पपाल, नित्य आराधे त्रण काल, श्रीसिद्धचक्र गुणमाल ॥ ३ ॥ गजगामिनी चपकदलकाय, चाले पग ने उर ठमकाय, हीयडे हार सोहाय । कुकुम चदन तिलक रचाय, पहिरे पीत पटोली वनाय, लीलाये लहकाय ॥ वाली भोळी चक्केसरी माय, जे नर सेवे सिद्धचक्रराय, थे तेहने सुसहाय ।

श्रीविजयप्रभसूरि तपगच्छराय, प्रेमविजय सेवी पाय,
कांतिविजय गुण गाय ॥ ४ ॥

---

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनी स्तुति ॥

श्रीजिनशासन भविक विमासन, कुमतिकुशासन वारेजी। जे शुभ भावे भवियण ध्यावे,नावे कष्ट किवारेजी, राजग्रही गुरु गोतम आव्या, वीरतणे आदेशेजी,श्रेणीक आगले नवपद महीमा, श्रीमुखथी उपदेशेजी ॥१॥
श्रीअरीहापद मध्ये ठवीये, पूरवादिसि सिद्ध जाणोजी आचारज उवझाय मुनीसर, अनुक्रम एह वखाणोजी, ( अग्निखुणे दर्शनपद जाणो, ज्ञानचरण तप सूत्रोजी) ॐ ह्रीं बीजाक्षरधुरी गुणीअे, गुरुगमथी ए मत्रोजी२
आसो चैत्रसुदि सातमथी, नवदिन आंबेल कीजेजी, आठ थोय कही देव वादीने, देवत्रिकाल पूजीजेजी, एक एक पदनी नवकारवाळी, वीस गुणो शुभभावोजी, आवश्यक दोय टक करीने,श्रीसिद्धचक्र गुणगावोजी।३।
नव दिन चैत्य प्रवाडी, वाचा जेम श्रीपाळजी

साडाचार वर्षे होळी, नव करी तप उजवालेजी
मुनि भीमराज चकेसरी देवी, विमलेसर सुखकारोजी
श्रीसघ सहु दिनदिन अति दीपे, पामीजे भवपारोजी४

---

॥ श्री सिद्धचक्र स्तुति (थोय)॥

त्रिगडे वेठा त्रिभुवननायक, वीर वदे एम वाणीजी, श्री श्रीपालतणी परे सेवो, सिद्धचक्र गुण खाणीजी ॥ अरिहत आदि सिद्ध आचारज, उवज्झाय उलट आणीजी। साहूदसण नाण चारित्र तप, इति नव पद जाणीजेजी ॥ १ ॥ आसो चैत्र शुदि सातमथी, नव आयविल पच्चखीजेजी। पडिक्कमणा दोय त्रिकाल पूजा, देववन्दन त्रण कीजेजी ॥ पद एकेकु प्रतिदिन मन शुद्धे, तेर हजार गुणीजेजी, चोवीश जिननी सेवा करीने, नरभव लाहो लीजेजी ॥ २ ॥ नव दिननी नव ओली करता, आयविल एक्याशी थायजी, साढाच्यार वरसे उजमणु करीने, तेहने सवी सुख दाइजी ॥ सिरि सिद्धचक्रना न्हवणजलथी, कुष्ट अढार पलायजी, सकल

शास्त्र शिर मुकुट नगीनो, अगे सुणो चित्त लाइजी ॥ ॥३॥ मातग यश प्रभु पद सेवे, उलट आणी अंगेजी, सिरि सिद्धचक्रनी ओली करता, विघ्न हरे मन रगेजी॥ हसविजय गुरु पंडित पुगव, चरण सरोरुह भृगजी, धीरविजय बुध मगलमाला सुख सपत्ति लहे चगजी ॥ ४ ॥ इति ॥

## श्री स्तुति

आदीश्वरने पूजो आणी मन उल्लास, सिद्धचक्र आराधो जिम पहोंचे मन आश ॥ आसो चैत्र सातमथी ओलीकीजे सार आबीलस्यु करता लहीये जय जयकार ॥ १ ॥ अरिहत सिद्धादिक आचार्य वली जेह, उवज्झाय सर्व साधु दर्शन ज्ञानस्यु नेह ॥ चारित्रतप धारो नवपद गुणभडार, पचवर्णा जिनवर सेवता सुखकार ॥२॥ श्रीपालनरेशर मयणा सुदरी तपसार, उपदेशे श्रीवीरजी परखद बारमझार ॥ श्रेणीकनृप आदे साभले हरख अपार। आराधो भवि ऋद्धिवृद्धि उदार

॥३॥ रमझमके नेउरी चीर चुनडी नथी सामु गोमुख चक्केसरी श्री ऋषभशासन हितकार॥ वछित फल दे ज्यो सुख सपत्तिदातार, गुरु कुवरविजयनो रवि लहे जयकार ॥ ४ ॥

## नवपदनी सज्झाय.

( नणदलनी ए देशी )

वारी जाउ श्री अरिहतनी, जेहना गुण छे बार॥ मोहन० ॥ प्रातिहारज आठ छे, मूल अतिशय चार मोहन० ॥ १ ॥ वारि० ॥ वृक्ष अशोक कुसुमनी वृष्टि, दीव्य ध्वनि वाण ॥ मोहन० ॥ चामर, सिंहासन, दुदुंभि, भामडल छत्र वखाण ॥ मो० ॥ वारि० ॥ २ ॥ पूजा अतिशय छे भलो, त्रिभुवन जनने मान ॥ मो० वचनातिशय योजनगामी, समजे भविअसमान ॥ ॥ मो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ ज्ञानातिशय अनुत्तरतणा, संशय छेदणहार ॥ मो० ॥ लोकालोक प्रकाशता, केवल ज्ञानभडार ॥ मो० ॥ वारि० ॥ ४ ॥ रागादिक अन्तररिपु, तेहनो कीधो अन्त ॥ मो० ॥ जिहा विचरे जग-

दीश्वरु तिहा साते ईति समत ॥ मो० ॥ वा० ५ ॥ एहवा अपायापगमनो, अतिशय अति अद्भूत ॥ ॥ मो० ॥ अहर्निश सेवा सारता, कोडिगमे सुर हुत ॥ मो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ मार्ग श्री अरिहन्तनो, आद्रीये गुणगेह ॥ मो० चारनिक्षेपे वादीये, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ मो० ॥ वा ॥ ७ ॥

॥ इति अरिहत प्रथम पद सज्झाय सपूर्ण ॥

॥ सिद्धपदनी सज्झाय ॥

अलचे जो होली हलवेडेरे॥ ए देशी ॥

नमो सिद्धाणं वीजे पदेरे लाल, जेहना गुण छे आठ रे, हु वारी लाल, शुक्लध्यान अनले करीरे लाल, वाळ्या कर्म कुठाररे ॥ १ ॥ हु वारी लाल ॥ ज्ञानावरणीक्षये लह्यारे लाल, केवलज्ञान अनतरे ॥ हु० ॥ दर्शनावरणी क्षयथी थयारे लाल, केवलदर्शन करतरे ॥ हु० न० ॥ २ ॥ अक्षय अनन्त सुख सहजथीरे लाल, वेदनी कर्मनो नाशरे ॥ हु० ॥ मोहनीय क्षये निर्मलुरे लाल, क्षायक समकित वासरे, हु० ॥

न० ॥ ३ ॥ अक्षय स्थिति गुण उपन्योरे लाल, आयु कर्म अभावरे ॥ हुं० ॥ नाम कर्म क्षये नीपन्योरे लाल, रूपादिक गतिभावरे । हु० न० ॥४॥ अगुरुलघु गुण उपन्योरे लाल, नरहया कोड विभावरे॥ हु० गोत्र कर्मना नाशथीरे लाल, निज प्रकट्या जस भावरे ॥ हुं० न० ॥ ५ ॥ अनन्त वीर्य आतमतणु रे लाल, प्रगट्यो अतराय नाशरे ॥ हुं० आठे कर्म नाशीगयारे लाल, अनन्त अक्षयगुण वासरे ।। हु० न० ॥ ६ ॥ भेद पन्नर उपचारथी लाल, अनन्त परम्पर भेदरे ॥ हु० निश्चयथी वीतरागनारे लाल, किरण कर्म उच्छेदरे ॥ हु० न० ॥ ७ ॥ ज्ञानविमलनी ज्योतिमारे लाल, भासित लोकालोकरे ॥हु०॥ तेहना ध्यानयकी यशेरे लाल, सुखीया सघला लोकरे ॥ हु० न० ॥ ९ ॥

॥ इति सिद्धपद सज्झाय ॥

॥ त्रीजा आचार्य पदनी सज्झाय ॥

आचारी आचार्यनो जी, त्रीजे पद धरो ध्यान, शुभ उपदेश प्ररूपताजी, कह्या अरिहत समान ॥सूरीश्वर॥

नमतां शिव सुख थाय, भव भवना पातिक जाय ॥ सू० ॥ १ ॥ पचाचार पलावताजी आपण पे पालत ॥ छत्रीशी छत्रीश गुणेजी, अलकृत तनु विलसन्त ॥ सूरीश्वर ॥ नम० ॥ २ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्रनाजी, एकेक आठ आचार ॥ वारहतप आचारनाजी इम छत्रीश उदार ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ३ ॥ पडिरूपादिक चउदे अछेजी, वली दशविध यतिधर्म ॥ वारद भावना भावताजी, ए छत्रीशी मर्म ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ४ ॥ पंचेन्द्रिय दमे विपयथीजी, धारे नवविध ब्रह्म ॥ पच महाव्रत पोपताजी, पचाचारसमर्थ ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ५ ॥ सुमति गुप्ति शुद्धि धरेजी, टाले चार कपाय ॥ ए छत्रीशी आदरेजी, धन्य धन्य तेहनी माय ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ६ ॥ अप्रमत्ते अर्थ भाखताजी, गणि सपद जे आठ ॥ छत्रीश चउ विनयादिकेजी, इम छत्रीशी पाठ ॥ सूरी० ॥ नम० ॥ ॥ ७ ॥ गणधर उपमा दीजीएजी, युगप्रधान कहाय ॥ भावचारित्री तेहवाजी, तिहा जिनमार्ग ठराय ॥

सूरी० ॥ नम० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल गुण राजताजी ॥ गाजे शासन माहे, ते वादि निर्मल करोजी ॥ बोधि बीज उच्छाह ॥ ९ ॥ न० ॥ इति नवपद अधिकार तृतीय पद सज्झाय ॥

॥ चतुर्थ पद सज्झाय ॥

॥ पाडव पाचेवा ॥

चोथे पद उवज्झायनु, गुणवतनु धरो ध्यानरे, युवराजा समते कह्या, पद सूरिने समानरे ॥ १ चो० ॥ जे सूरि समान व्याख्यान करे, पण न धरे अभिमान रे, वळी सूत्र अर्थनो पाठ दीये, भविजीवने सावधान रे ॥ चो० ॥२ ॥ अग इग्यार चउद पूर्व जे वळी भणे भणावे जेहरे ॥ गुण पचवीश अलकर्या, दृष्टिवादे अर्थना गेह रे ॥ चो० ॥ ३ ॥ बहु नेहे अर्थ अभ्यासे सदा, मन धरता धर्मध्यान रे ॥ करे गच्छ निश्चित प्रवर्त्तक, दिये स्थविरने बहु मान रे ॥ चो० ॥ ४ ॥ अथवा अग इग्यार जे वळी, तेहना वार उपाग रे ॥ चरण करणनी सित्तरी, जे धारे आपणे

अग रे ॥ चो० ॥ ५ ॥ वळी धारे आपणे अग, पचा-गीसम–ते शुद्धवाणी रे ॥ नयगमभग प्रमाण वि-चारने, दाखता जिन आणरे ॥ चो० ॥ ६ ॥ सघ सकल हित कारीया, रत्नाधिक मुनिहितकार रे॥ पण व्यवहार प्ररूपता, कहे दस समाचारी आचार रे ॥ ॥ ७ ॥ इन्द्रिय पंचथी विषय विकारने, वारता गुण-गेहरे ॥ श्रीजिनशासन धर्मधुरा, निरवाहता शुचि-देहरे ॥ ८ ॥ पचविशि पचविस गुणतणी, जे भाखी प्रवचन माहे रे ॥ मुक्ताफल सुक्तापरे, दीपे जस अग उछाहरे ॥ ९ ॥ जस दीपे अति उच्छाहे, अ-धिक गुणे जीवथी एकतानरे ॥ एहवा वाचकनुं उप-मान कहु किम, तेहथी शुभ ध्यान रे ॥ १० ॥ इति चतुर्थ पद सझाय सपूर्ण ॥

॥ पञ्चमपद सज्झाय ॥

॥ राग धनाश्री ॥

॥ मगधदेश राज गृही नगरी ॥ ए देशी

ते मुनिने करु वन्दन भावे, जे षट्काय व्रत राखेरे ॥ इन्द्रिय पण दमे विषय घणाथी, वलि शा-

न्ति सुधारस चारेरे ॥ १ ॥ ते मुनिने करु वन्दन- भावे ॥ ए टेक ॥ लोभ तणा निग्रहने करता, वली पडिलेहणादिक किरियारे ॥ निराशंसयतनाए बहु पदी, वळी करणशुद्धि गुणदरियारे ॥ ते मुनि० ॥ ॥ २ ॥ अहनिश सजम योगशुं युक्ता, दुर्धर परिसह सहतारे ॥ मन वच काय कुशळता जोगे, वरताने गुण अनुसरतारे ॥ ते मुनि० ॥ ३ ॥ छडे निज तनु धरमने कामे, उपसर्गादिक आवे रे ॥ सत्तावीश गुणे करी सोहे सूत्राचारने भावेरे ॥ ते मुनि० ॥ ४ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तणा जे, त्रिकरण जोग आचार रे ॥ अगे धरे निस्पृहता शुद्धि, ए सत्तावीश गुण साररे ॥ ते मुनि० ॥ ५ ॥ अरिहतभक्ति सदा उप- दिशे, वायगसूरीना सहाइरे ॥ मुनि वीण सर्वे क्रिया नवी सूजे, तीर्थ सकल सुखदाइरे ॥ ते मुनि० ॥ ६ ॥ पद पाचमे इणि परे ध्यावो पचमी गति ने साधोरे॥ सुखी करजो शासननायक, ज्ञानविमल गुण वा- धोरे ॥ ते मुनि० ॥ ७ ॥ इति नवपद विषे पचम मुनिपदनी सज्झाय सपूर्ण

## सज्झाय

### देशी भमरगीतानी

गुरु नमता गुण उपजे, बोले आगम वाण
श्री श्रीपालने मयणासुदरी, सद्दहे गुणखाण
श्री मुनीचद मुनीसर बोले अवसर जाण ॥१॥
आंबिलनो तप वरणव्यो, नवपद नवेरे निधान
कष्ट टले आशा फले, वाधे वसुधा वान ॥ श्री० ॥२॥
रोग जाए रोगी तणा, जाए सोग सताप
वाहलाउद भेळा मले, पुन्य वधे घटे पाप ॥श्री०॥३॥
उज्वल आसो सातम, तप माडे तनुहेत
पुरण विध पुनिमलगे कामिनी कत समेत ॥श्री०॥४॥
चैत्र सुद माहे तीम, नव आंबील नीरमाय
इम एकाशी आंबिले, ए तप पुरो थाय ॥श्री० ॥५॥
राज नीकटक पाळता नवशत वरस जगीश
देशविरतिपणुं आदरी, दीपाव्यो जगीश ॥श्री० ॥६॥
गजरथ सहस ते नवहुआ नवलख देश नीसार
नवकोडी हयदल भलु नवनदन मनोहर ॥ श्री०

तपजप उद्यापन थकी, लाधो नवमो सग्ग
सुरनरना सुख भोगवी, नवमे भव अपवग्ग ॥श्री० ८॥
हंसविजय कविरायना जी भजलउपर नाव
आप तरे पर तारवे मोहन सुहस्वभाव ॥ श्री० ९ ॥

## अथ नोकारवालीनी सज्झाय

॥ वार जपु अरिहंतना, भगवंतना रे गुण हु निशदीस ॥ सिद्ध आठ गुण जाणिये वखाणीये रे गुण सूरि छत्रीश ॥ नोकारवाली वदीये ॥ १ ॥ चिर नदिये रे उठी गणीये सवेर ॥ सूत्रनणा गुण गुंथिया, मणिआ मोहन रे मह मोटो मेर ॥ नोका० ॥ २ ॥ पचवीश उवझायना, सत्तावीश रे गुण श्री अणगार॥ एकशो आठ गुणे करी, इम जपीये रे भवियण नवकार ॥ नोका० ॥ ३ ॥ मोक्ष जाप अगुठडे, वैरी जूठडे रे तर्जनी अंगुली जोय ॥ वहु सुखदायक मध्यमा, अनामिका रे वश्यारथ होय ॥ नोका० ॥४॥ आकर्षण टची अगुली, वली सुणजो रे ए गणवानी रीत ॥ मेरु उल्लंघन मम करो, मम करजो रे नख

अम्रे प्रीति ॥ नोका० ॥ ५ ॥ निश्चल चित्तें जे गणे, जे गणे सत्यादिकथी एकात ॥ तेहने फल होए अ तिघणु, इम बोले रे जिनवर सिद्धात ॥ नोक० ॥६॥ शख प्रवाल स्फटिक मणि, पन्ना जीव रताजली मोती सार ॥ रूप सोवन रयण तणी, चदन अवर अगरने घनसार ॥ नोका० ॥ ७ ॥ सुदर फल रुद्राक्षनी जप-मालिका रे रेशमनी अपार ॥ पचवरण सम सत्रनी, वली वस्तुविशेष तणी उदार ॥ नोका० ॥ ८ ॥ गौतम पुछते कह्यो, महावीरे रे ए सयल विचार ॥ लब्धि कहे भवियण सुणो, गणजो भणजो रे नित्य सज्झायो नवकार ॥ नोका० ९ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धनी सज्झाय ॥

आठ कर्म चूरण करीरे लाल, आठ गुण परसिद्ध । मेरे प्यारे ॥ क्षायिक समकितना धणीरे लाल ॥ वदु वंदु एहवा सिद्ध ॥ मेरे प्यारे ॥आ०॥१॥ अनत नाण दरसण धरारे लाल, चोथु वीर्य अनत ॥ मे०॥ अगुरु-लघु सूक्ष्म कह्यारे लाल, अव्यावाध महत ॥ मे

आ० ॥ २ ॥ जेहनी काया जेहवीरे लाल, उणी त्रीजे भागे ॥ मे० ॥ सिद्धशिलाथी जोयणेरे लाल, अवगाहना वीतरागे ॥ मे० आ० ॥ ३ ॥ सादिअनंता तिहा घणारे लाल, समय समय तेह जाय ॥ मे० ॥ मदिर माहे दिपालीकारे लाल, सघलो तेज समाय ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ मानवभवथी पामीयेरे लाल, सिद्ध तणा सुख सग ॥ मेरे० ॥ एहनुं ध्यान सदा धरीरे लाल, एम बोले भगवइ अग ॥ मेरे० अ० ॥ ५ ॥ श्री विजयदेव पटोधररे लाल. श्री विजयसेनसूरीश मे० ॥ सिद्धतणा गुण ए कह्यारे लाल, देव दीए आशीष ॥ मे० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति श्री सज्झाय संपूर्ण.

॥ नवपद महिमानी सज्झाय ॥

॥ सरसती माता मया करो, आपो वचन विलासोरे ॥ मयणासुदरी सती गायशु, आणी हीयडे भावोरे ॥ १ ॥ नवपद महिमा साभळो, मनमा धरी उल्लासोरे ॥ मयणासुदरी श्रीपालने, फलीयो धर्म उदारोरे ॥ न० ॥ २ ॥ मालव देशमाही वली, उज्जेणी

नयरी जामोरे ॥ राज्य करे तीहां राजीओ, पुहवीपाल नरिंदोरे ॥ न० ॥ ३ ॥ रायतणी मनमोहनी, धरणी अनोपम दोयरे ॥ तासु कुखे सुता अवतरी, सुरसुदरी मयणा जोडरे ॥ न० ॥ ४ ॥ सुरसुदरी पडित कने, शास्त्र भणी मिथ्यातोरे ॥ मयणासुदरी सिद्धातनो, अर्थ लीयो सुविचारोरे ॥ न० ॥ ५ ॥ राय कहे पुत्री प्रत्ये, हु तुटो तुम जेहोरे ॥ वछीत वर मागो तदा, आपु अनोपम जेहोरे ॥ न० ॥ ६ ॥ सुरसुदरीए वर मागीओ, परणावी शुभ ठामोरे ॥ मयणासुदरी वयणा कहे, कर्म करे ते होयरे ॥ न० ॥ ७ ॥ करमे तुमारे आवीयो, वर वरो बेटी जेहोरे ॥ तात आदेशे कर ग्रह्यो, वरीयो कुष्टी तेहोरे ॥ न० ॥ ८ ॥ आबिलनो तप आदरी, कोढ अढारनो कालोरे ॥ सद्गुरु आज्ञा शिरधरी, हुओ राय श्रीपालोरे ॥न०॥ ॥ ९ ॥ तप प्रसादे सुख सपदा, प्रत्यक्ष स्वर्गे पहुंतोरे ॥ उपसर्ग सवी दूरे टळ्या, पाम्यो सुख अनतोरे ॥ ॥ न० ॥ १० ॥ देश देशातर भमी करी, आव्यो ते वरसंतोरे ॥ नव राणी पाम्या भली, राज्य पाम्यो म

नरगोरे ॥ न० ॥ ११ ॥ तपगच्छ दिनकर उगीयो,श्री विजयसेन सूरिंदोर, तास शिष्य विमल एम विनवे, सतीय नामे आणदोरे ॥ १२ ॥

॥ साधुजीनी सज्झाय ॥

॥ पचमहाव्रत दशविध यतिधर्म सत्तर, सजम भेद पालेजी ॥ वैयावच्च दस नवविधब्रह्मचर्य, वाड भली अजुआलोजी ॥ १ ॥ ज्ञानादित्रय वारे भेदे, तप करे जे अ निदानजी ॥ क्रोधादिक चारेनो निग्रह, ए चरणसीत्तेरी मानजी ॥ २ ॥ चउविध पिड वसती वस्त्र पात्र निर्दूपण ए लेवेजी, सुमति पाच वली प- डिमा वारह, भावना वारह सेवेजी ॥ ३ ॥ पचविश पडीलेहण पचइन्द्रिया ॥ विपयविकारथी वारेजी, त्रिण गुप्तिने च्यार अभिग्रह, द्रव्यादिक सभारेजी ॥ ४ ॥ करणसीत्तेरि एहवी सेवे, गुण अनेक वली वाधेजी ॥ सजमी साधु तेहने कहीये, बीजा सर्वी नाम धरावेजी ॥ ५ ॥ ए गुण विण प्रवज्या वोली, आजीविकाने तोलेजी, ते खटकाय असजमी जाणो, धर्मदास गणी

बोलेजी ॥ ज्ञानविमल गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आराधोजी ॥ जिम अनुपम शिवसुख साधो, जगमां कीर्ति वाधेजी ॥ ७ ॥

## श्री सिद्धपदनी सझाय

श्री मुनिचंद्र मुनीश्वर वदीए, गुणवता गणधार, सुज्ञानी, देशना सरस सुधारस वरसता, जिम पुष्करजळधार, सु० श्री ॥ १ ॥ अतिशय ज्ञानी परउपकारीआ, सयम शुद्ध आचार, सु०॥ श्रीश्रीपाळ भणी जाप आपीओ, करी सिद्धचक्र उद्धार, सु० श्री० ॥ २ ॥ आबिलतप विधि शीखी आराधीयो, पडिक्कमणां दोय वार, सु० अरिहंतादिक पद एक एकनो, गणणु दोय हजार, सु० श्री० ॥३॥ पडिलेहण दोय टकनी आदरे, जिनपूजा त्रण काळ, सु०, ब्रह्मचारी वळी भोय मथार, वचन न आळ पपाळ, सु०, श्री० ॥ ४ ॥ मन एकाग्र करी आंबिल करे, आसा चैतर मास, सु० शुदि सातमथी नव दिन कीजीए, पूनमे ओच्छव खास, सु०, श्री ॥ ५ ॥ एम नव ओळी एकाशी आंबिले, पूरी पूरण हर्ष, सु० उजमणु पण उद्यमथी करे, साडा चारे रे वर्ष, सु० श्री० ॥ ६ ॥ ए आराधनथी सुखसपदा, जगमा कीर्ति रे थाय, सु० रोग उपद्रव नासे एहथी, आपदा दूरे पलाए, सु० श्री ॥ ७ ॥ सपदा वाधे अति

सोहामणी, आणा होय अखड, सु०; मत्र जत्र तत्र सोहतो, महिमा जास प्रचड, सु० श्री० ॥ ८ ॥ चक्केश्वरी जेहनी सवा करे, विमलेश्वर वळी देव, सु० मन अभिलाष पूरे सवि तेहना, जे करे नवपद सेव, सु० श्री० ॥ ९ ॥ श्रीपाळे तेणी परे आराधीओ, दूर गयो तास रोग, सु०, राजऋद्धि दिन दिन प्रत्ये वाधतो, मनवछित लह्यो भोग, सु० श्री० ॥ १० ॥ अनुक्रमे नवमे भव सिद्धि वर्या, सिद्धचक्र सुपसाय, सु० एणी परे जे नित्य नित्य आराधशे, तस जस वाद गवाय, सु० श्री० ॥ ११ ॥ सासारिक सुख विलसी अनुक्रमे, करीए कर्मनो अत, सु०, घाती अघाती क्षय करी भोगवो, शाश्वत सुख अनत, सु० श्री ॥ १२ ॥ एम उत्तम गुरु वयण सुणी करी, पावन हुवा बहु जीव, सु० पद्मविजय कहे ए सुरतरु समो, आपे सुख सदैव, सु० श्री० ॥ १३ ॥

## चरणसित्तरी करणसित्तरीनी सझाय.

पच महाव्रत दशविध यति धर्म, सत्तर सजम भेद पाळे जी, वैयावृत्त्य दश नवविध ब्रह्मचर्य, वाड भली अजवाळे जी ॥ १ ॥ ज्ञानादिक गुण बारे भेदे, तप करी जेह निदान जी, क्रोधादिक चारनो निग्रह, ए चरण सित्तरी मानजी ॥ २ ॥ चउविध पिंड वसति वस्त्र पात्र, निर्दूषण ए लेवे जी, समिति पांच वळी पडिमा बारे, भा-

वना वारे सेवेजी ॥३॥पच्चीश पडिलेहणा पण इंद्रिय,विषय-विकारने वारो जी, त्रण गुप्ति वळी चार अभिग्रह, द्रव्यादिकथी सभाळो जी ॥४॥ करणसित्तरी इणविध सेवे, गुण अनेक वळी धारेजी, सजमी साधु तेहने कहीए, बीजा सवि नाम धारी जी ॥५॥ ए गुण विण प्रव्रज्या बोली,आजीविकाने ताले जी, ते पट काय असजमी जाणो, धर्मदास गणी बोले जी ॥६ ॥ ज्ञानविमळ गुरु आणा धरीने, सजम शुद्ध आराधेजी, जिम अनुपम शिव सुख साधे, जगमा सुजस ते वाधे जी ॥ ७ ॥

## ॥ श्री अजितसेन मुनिए श्रीश्रीपाळ महाराजाने आपेल उपदेश ॥

हस्तिनागपुर वर भलो–ए देशी.

प्राणी वाणी जिनतणी, तुम्हें धारो चित्त मझाररे,
मोहे मुज्या मत फिरो, मोह मूके सुख निरधाररे,
मोह मुके सुख निरधार, सवेग गुण पालीयें पुण्यवतरे,
पुण्यवत अनत विज्ञान, वदे इम केवली भगवतरे १
दश दृष्टातें दोहिलो, मानवभव ते पण लह्यरे,
आर्यक्षेत्रें जन्म जे, ते दुर्लभ सुकृत सवधरे ।
[illegible] सुकृत सबधरे ॥ सवे०

आर्यक्षेत्रे जनम हुओ, पण उत्तमकुल ते दुर्लभरे ।
व्याधादिककुलें उपनो, शु आर्यक्षेत्र अचभरे, शुं, संवे०३।
कुल पामे पण दुल्लहो, रूप आरोग आउ समाजरे ।
रोगी रूपरहित घणा, हीण आउ दीसे छे आजरे ॥
हीण आउ दीसे छे आजरे सवे० ॥४॥
ते सवि पामे पण सही, दुलहो छे सुगुरु सयोगरे ।
सघळे खेत्रें नहि सदा, मुनि पामीजें शुभ योगरे ॥
मुनि पामीजे शुभ योगरे, सवे० ॥ ५ ॥
महोटे पुण्यें पामीयें, जो सद्गुरु सग सुरंगरे ।
तेर काठीया तो करे, गुरु दर्शन उत्सव भगरे गु सवे॥६॥
दर्शन पामे गुरुतणु, धूर्ते व्युदग्राहित चित्तरे ।
सेवा करी जन नवि शके, होय खोटो भाव अमित्तरे॥
होय खोटो भाव अमित्तरे सवे० ॥ ७ ॥
गुरुसेवा पुण्यें लही, पासें पण बेठा नित्तरे ।
धर्मश्रवण तोहे दोहिलु, निद्रादिक दिये जो भित्तरे ॥
निद्रादिक दियेजो भित्तरे सवे० ॥ ८ ॥
पामी श्रुत पण दुल्लही, तत्त्वबुद्धि ते नरने न होयरे ।

शृंगारादिक कथारसें, श्रोता पण निज गुण खोयरे
श्रो० सवे० ॥ ९ ॥
तत्त्व लहे पण दुम्ही, सद्दहणा जाणो सतरे ।
कोइ निज मति आगल करे, कोइ डामाडोल फिरंतरे॥
कोइ डामाडोल फिरंतरे सवे० ॥ १० ॥
आप विचारे पामिये, कहो तत्त्वतणो किम अतरे ।
आलसुआ गुरु शिष्यनो इहा भावियो मन वृत्तांतरे ॥
इहा भावियो मन वृत्तातरे सवे० ॥ ११ ॥
चठरछात्र गज आवता, जिम प्राप्त अप्राप्त विचाररे ।
करे न तेंहथी ऊगरे, तेम आपमतिनिरधाररे, ते० सव०॥१२॥
आगम ने अनुमानथी, वली ध्यानरसें गुणगेहरे ।
करे जे तत्त्वगवेषणा, ते पामे नहि सदेहरे ते०सवे०॥१३॥
तत्त्वबोध ते स्पर्श छे, सवेदन अन्यस्वरूपरे ।
सवेदन वंध्येहुइ, जेस्पर्श ते प्राप्तिरूपरे जे०सवे० ॥१४॥
तत्त्व ते दशविध धर्म छे, खत्यादिक श्रमणनो शुद्धरे ।
धर्मनु मूल दया कही, ते खंतिगुणें अविरुद्धरे ते०सवे०
विनयने वश छे गुण सवे, ते तो मार्दवने ...

जेहने मार्दव मन वस्युं, तेणें सवि गुणगण सपत्तरे ॥
तेणे सवि गुणगण सपत्तरे सवे० ॥ १६ ॥
आर्जव विण नवि शुद्ध छे, नवि धर्म आराधे अशुद्धरे ।
धर्म विना नवि मोक्ष छे, तेणें ऋजुभावी होय बुद्धरे ॥
तेणें ऋजुभावी होय बुधरे सवे० ॥१७॥
द्रव्योपकरण देहना वलि भक्त पान शुचिभावरे ।
भावशौच जिम नवि चले, तिम कीजे तास बनावरे॥
तिम कीजें तास बनावरे सवे० ॥ १८ ॥
पचाश्रवथी विरमीयें, इंद्रिय निग्रहीजें पचरे ।
चार कषाय त्रण दड जे, तजीयें ते सजम सचरे ॥
तजीयें ते सजम सचरे सवे० ॥ १९ ॥
बाधव धन इद्रियसुख तणो, वलि भय विग्रहनो त्यागरे॥
अहकार ममकारनो, जे करशे ते महाभागरे जे०सवे०२०
अविसवाद नजोग जे, वलि तन मन वचन अमायरे।
सत्य चतुर्विध जिन कह्यो, बीजे दर्शन न कहायरे ॥
बीजे दर्शन न कहायरे सवे ॥ २१ ।
षड्विध बाहिर तप कह्यु अभ्यतर षड्विध होयरे ॥

कर्म तपावे ते सही, पडिसोअ वृति पण जोयरे,
पडिसोअ वृत्ति पण जोयरे सवे० ॥ २२ ॥
दिव्य औदारिक काम जे, कृत कारित अनुमति भेदरे।
योग त्रिक तस वर्जवु, ते ब्रह्म हरे सवि खेदरे।
तें ब्रह्म हरे सवि खेद रे सवे० ॥ २३ ॥
अध्यात्मवेदी कहे मूर्च्छा ते परिग्रह भावरे ॥
धर्म अकिंचनने भएयो, ते कारण भवजल नावरे ॥
ते कारण भवजल नावरे ॥ संवे० ॥ २४ ॥
पाच भेद छे खंतिना, उवयारवयार विवागरे ॥
वचन धर्म तिहां तीन छे, लौकिक दोइ अधिक सोभागरे॥
लौकिक दोइ अधिक सोभागरे सवे० ॥ २५ ॥
अनुष्ठान ते चार छे, प्रीति भक्ति ने वचन असगरे।
त्रण क्षमा छे दोयमा, अग्रिम दोयमा दोय चगरे।
आग्रिम दोयमा दोय चगरे सवे० ॥ २६ ॥
वल्लभ स्त्री जननी तथा, तेहना कृत्यमा जुओ जुओ
राग रे। रे ॥
पडिक्कमणादिक कृत्यमा, एम प्रीति भक्तिनो

एम प्रीति भक्तिनो लागरे संवे० ॥ २७ ॥
वचन ते आगम आसरी सहेजें थायें असगरे ।
चक्रभ्रमण जिम दडथी, उत्तर तदभावे चगरे ।
उत्तर तदभावे चगरे सवे० ॥ २८ ॥
विष गरल अनुष्ठान छे, तद्धेतु अमृत वलि होयरे ।
त्रिक तजवा दोय सेववा, ए पाच भेद पण जोयरे ।
ए पाच भेद पण जोयरे सवे० ॥ २९ ॥
विषकिरिया ते जाणीयें, जे अशनादिक उद्देशरे ।
विष ततखिण मारे यथा, तेम एहज भव फललेशरे।
तेम एहज भव फल लेशरे सवे० ॥ ३० ॥
परभवें इन्द्रादिक ऋद्धिनी इच्छा करता गरल थायरे।
ते कालातर फळ दीए, मारे जीम हडकियो वायरे ।
मारे जीम हडकियो वायरे सवे० ॥ ३१ ॥
लोक करे तिम जे करे, उठे वेसे समूर्च्छिम प्रायरे ।
विधि विवेक जाणे नहीं, ते अन्यानुष्ठान कहायरे ।
ते अन्यानुष्ठान कहायरे ॥ सवे० ॥ ३२ ॥
तद्हेतु ते शुद्धरागथी, विधिशुद्ध अमृत ते होयरे ।

सकल विधान जे आचरे, ते दीसे विरला कोयरे ।
ते दीसे विरला कोयरे ॥ सवे० ॥ ३३ ॥
करण प्रीति आदर घणो, जिज्ञासा जाणनो संगरे ।
शुभ आगम निर्विघ्नता, ए शुद्ध क्रियाना लिंगरे ॥
ए शुद्ध क्रियाना लिंगरे ॥ सवे० ॥ ३४ ॥
द्रव्यलिंग अनंता धर्या, करी किरिया फल नवि लद्धरे
शुद्धक्रिया तो नंपजे, पुद्गल आवर्तने अद्धरे ॥
पुद्गल आवर्त्तने अद्धरे ॥ सवे० ॥ ३५ ॥
मारग अनुगति भाव जे, अपुनर्वंधता लद्धरे ॥
किरिया नवि उपलपजे, पुद्गल आवर्त्त ने अद्धरे ॥
पुद्गल आवर्त्तने अद्धरे ॥ सवे० ॥ ३६ ॥
अरिहंत सिद्ध तथा भला, आचारिज ने उवज्झायरे
साधु नाण दंसण चरित्त, तव नवपद मुगति उपायरे ।
तव नवपद मुगति उपायरे ॥ सवे० ॥ ३७ ॥
ए नवपद ध्याता थका, प्रगटे निज आतमरूपरे ।
आतम दरिसण जेणे कर्युं, तेणे मूंद्यो भवभयकूपरे ॥
तेणे मूंद्यो भवभयकूपरे ॥ सवे० ॥

क्षण अर्द्धे जे अघ टले, ते न टले भवनी कोडीरे ।
तपस्या करता अति घणी, नहि ज्ञानतणी छे जोडीरे
नहि ज्ञानतणी छे जोडीरे ॥ सवे० ॥ ३९ ॥
आतमज्ञाने मगन जे, ते सवि पुद्‍गलनो खेलरे
इन्द्रजाल करी लेखवे, न मिले तिहा देइ मनमेलरे॥
न मिले तिहा देई मनमेलरे ॥ सवे० ॥ ४० ॥
जाण्यो ध्यायो आतमा, आवरणरहित होय सिद्धरे ।
आतमज्ञान ते दु'ख हरे, एहिज शिवहेतु प्रसिद्धरे ॥
एहिज शिवहेतु प्रसिद्धरे सवे० ॥ ४१ ॥
चोथे खंडे सातमी, ढाल पूरण थई ते खासरे,
नवपद महिमा जे सुणे, ते पामे सुजस विलासरे ॥
ते पामे सुजस विलासरे ॥ सवे० ॥ ४२ ॥

॥ श्री श्रीपालमहाराजे करेली श्री सिद्धचक्र भगवतनी आराधना ॥

हवे नरपति श्रीपाल ते,निज परिवार संयुत्त मेरे लाल;
आराधे सिद्धचक्रने, विधिसहित ग्रही सुमुहुत्त मेरे
लाल मनना महोटो मोजमा ॥१॥

मयणसुंदरी त्यारे भणे, पूर्वे पूज्यु सिद्धचक्र। मेरे ला०
धन त्यारें थोरु हतु, हमणा तु ऋद्धे शक्र, मे० म०॥२॥
धन मोटे छोटु करे, धर्म उजमणु तेह, मेरे लाल।
( पाठातर ) जे करणी धर्मनु तेह, मे।
फळ पूरु पामे नहीं, मम करजो तिहा सदेह—मे० म.३
विस्तारे नवपद्तणी, तिण पूजा करो सुविवेक; मे०
धननो लाहो लीजीयें, राखी महोटी टेक म०म०॥४॥
मयणा वयणा मन धरी, गुरुभक्ति शक्ति अनुसार, मे
अरिहतादिक नवपद भला, आराधे ते सार मे०म०॥५॥
नव जिनघर नव पडिमा भली, नव जीर्णोद्धार करावे, मे,
नानाविध पूजा करी, जिन आराधन शुभभाव, मे म ६
एम सिद्धतणी प्रतिमातणु, पूजन त्रिंहु काल प्रणाम, मेरेलाल
तन्मय ध्याने सिद्धनु, करे आराधन अभिराम। मे म ७
आदर भगति ने वदना, वेयावच्चादिक लग्ग० मे०
सुश्रूषा विधि साचवी, आराधे सूरि समग्ग मे म ॥८॥
अध्यापक भणता प्रति, वसनाशन ठाण वनाय

द्विविध भक्ति करतो थको, आराधे नृप उवज्झाय
॥मे० म०॥ ९ ॥
नमन वदन अभिगमनथी, वसही अशनादिकदान, मे
करतो वेयावच्च घणु, आराधे मुनिपद ठाण मे०
म० ॥ १० ॥
तीर्थयात्रा करी अति घणी, सघपूजा ने रहजत्त मे०
आराधे दर्शनपद भलु, शासन उन्नति दृढचित्त
॥ मे० म० ॥११॥
सिद्धात लिखावी तेहने, पालन अर्चादिक हेत, मे०
नाण पदाराधन करे, सज्झाय उचित मन देत ॥म०
म० ॥ १२ ॥
व्रत नियमादिक पालतो, त्रिरतिनी भक्ति करंत, मे
आराधे चारित्र धर्मने, रागी यतिधर्म एकंत । मे १३
तजी इच्छा इह परलोकनी, हुइ सघळे अप्रतिवद्ध, मे०
षट वाह्य अन्यन्तर षट् करी, आराधे तवपद शुध्ध
मे म ॥ १४ ॥
उत्तम नवपद द्रव्यभावथी, शुभ भक्ति करी श्रीपाल। मे०
आराधे सिद्धचक्रने, नित पामे मगळ माळ मे०म०१५

इम सिद्धचकनी सेवना, करे साडाचार ते वर्ष मे०
हवे उजमणा विधितणो, पूरे तप उपनो हर्ष। मे, म १६
चोथे खडे पूरी थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मे ॥
विनय सुजस सुख ते लहे, सिद्धचक्र थुणे जे चग
मे० ॥ १७ ॥

---

श्री मुनिचन्द्रसूरीश्वरजीए श्रीपाल महाराजा तथा मयणासुन्दरीने बतावेल श्री सिद्धचक्राराधननो विधि ॥

---

श्री मुनिचद गुरे लिहा, आगमग्रंथ विलोइरे ॥ माखणनी पेरे उद्धरयो, सिद्धचक्रयंत्र जोइ रे ॥ चेतन चेतोरे चेतना, आणी चित्त मोझार रे ॥ १३ ॥ अरिहंतादिक नव पदे, ॐ ह्रीं पद सयुक्त रे ॥ अवर मन्त्राक्षर अभिनवा, लहीए गुरुगम तत्त रे ॥ चेतन० ॥ १४ ॥ सिद्धादिक पद चिहुं दिशे, मध्ये अरिहत देव रे ॥ दरिसण नाण चरित्त ते, तप चिहु विदिशे सेव रे ॥ चेतन० ॥१५॥ अष्ट कमलदल इणी परे, यन्त्र

कल शिरताज रे ॥ निर्मल तन मन सेवता, सारे वां
छित काज रे ॥ चेतन० ॥ १६ ॥ आशो सुदि माहे
माडीए, सातमथी तप एह रे ॥ नव आंबिल करी
निर्मला, आराधो गुणगेह रे ॥ चेतन० ॥ १७ ॥ विधि
पूर्वक करी धोतीयां, जिन पूजो त्रण काल रे ॥ पूजा
आठ प्रकारनी, कीजे थइ उजमाल रे ॥ चेतन० ॥१८॥
निर्मल भूमि सथारीए, धरीए शील जगीश रे ॥ ज-
पीए पद एकेकनी, नोकारवाली वीश रे ॥ चेतन०
॥ १९ ॥ आठे थोइए वांदीए, देव सदा त्रण वार रे ॥
पडिक्कमणा दोय कीजीए, गुरु वेयावच्च सार रे ॥
चेतन० ॥ २० ॥ काया वश करी राखीए, वचन वि-
चारी बोल रे ॥ ध्यान धर्मनु धारीए, मनसा कीजे
अडोल रे ॥ चेतन० ॥ २१ ॥ पचामृत करी एकठा,
परिगल कीजे पखाल रे ॥ नवमे दिन सिद्धचक्रनी,
कीजे भक्ति विशाल रे ॥ चेतन० ॥ २२ ॥ सुदि सा-
तमथी इणी परे, चैत्री पूनम सीमरे ॥ ओली एह
आराधीए, नव आंबिलनी नीम रे ॥ चेतन० ॥ २३ ॥
एम एकाशी आंबिले, ओली नव निरमाय रे ॥ साढे

चार सवत्सरे, ए तप पूरण थाय रे ॥ चेतन० ॥२४॥ उजमणुं पण कीजीए, शक्ति तणे अनुसार रे ॥ इह भव परभव सुख घणा, पामीजे भवपार रे ॥ चेतन० ॥ २५ ॥ आराधन फल एहना, इह भवे आण अखंड रे ॥ रोग दोहग दु ख उपशमे, जिम घन पवन प्रचंड रे ॥ चेतन० ॥ २६ ॥ नमणजले सिद्धचक्रने, कुष्ट अढारे जाय रे ॥ वाय चोराशी उपशमे, रुझे गुवड घाय रे ॥ चेतन० ॥ २७ ॥ भीम भगंदर भय टले, जाय जलोदर दूर रे ॥ व्याधि विविध विषवेदना, ज्वर थाये चकचूर रे ॥ चेतन० ॥ २८ ॥ खास खयन खस चखुना, रोग मिटे सन्निपात रे ॥ चोर चरड डाकिणी, कोइ न करे उपघात रे ॥ चेतन० ॥ २९ ॥ हीक हरस ने हेरूकी, नारा ने नासूर रे ॥ पाठा पीडा पेटनी, टले दु ख दतना सूररे ॥ चेतन० ॥ ३० ॥ निर्धनिया धन सपजे, अपुत्र पुत्रीया [illegible] ॥ विण चेतन० ३१ केवली सिद्धयत्रना, गुण न शके कहीं [illegible]

## श्रीमती मयणासुंदरीए अनुभवथी बतावेलुं श्री नव पदजी आराधननु फल

नव पद ध्यानेरे पाप पलाय, दुरित न चारो ग्रह वक्रनो जी ॥ ४ ॥ अरि करि सागर हरि ने व्याल ज्वलन जलोदर बधन भय सवे जी ॥ जाय रे जपता नव पद जाप, लहे रे सपत्ति इह भवे परभवे जी ॥५॥ बीजा रे खोजे कोण प्रमाण, अनभव जाग्यो मुज ए वातनो जी ॥ हुओ रे पूजानो अनुपम भाव, आज रे सध्याए जगतातनो जी ॥ ६ ॥ तद्गतचित्त समयनिधान, भावनी वृद्धि भवभय अति घणो जी ॥ विस्मय पुलक प्रमोद प्रधान, लक्षण ए छे अमृतकिया तणो जी ॥ ७ ॥ अमृतनो लेश लह्यो इक वार, बीजुं रे औषध करवु नवि पडे जी ॥ अमृतकिया तिम लही एक वार, बीजा रे साधन विण शिव नवि अडे जी ॥ ॥ ८ ॥ एहवो रे पूजामा मुज भाव, आव्यो रे भाव्यो ध्यान सोहामणो जी ॥ हजीअ न माये मन आणद,

खिण खिण होये पुलक निकारणो जी ॥ ९ ॥ फुरके रे वाम नयन उरोज, आज मिले छे वालिम माहरो जी ॥ वीजु रे अमृतकिया सिद्धिरूप, तुरत फले छे तिहा नहीं आतरोजी ॥ १० ॥

## श्री अजितसेन मुनिनी श्रीश्रीपाळ महाराजे करेली स्तवना

हुओ चारित्तजुत्तो समितिने गुत्तो, विश्वनो तारूजी
श्रीपाल ते देखी सुगुण गवेषी मोहियो॥ वारूजी
प्रणमे परिवारे भक्ति उदारे, विश्वनो तारूजी
कहे तुझ गुण थुणिये पातक हणीये आपणा ॥वा०॥ १
उपशम असिधारें क्रोधने मारे ॥ विश्वनो तारूजी,
तुं मद्दववज्जे मदगिरि भञ्जे मोटका, वारूजी
मायाविषवेली मूल उखेडी ॥ विश्वनो तारूजी
तें अज्जव कीलें सहज सलीले सामटी ॥ वारूजी, २
मूर्च्छाजल भरियो गहन गुहरियो ॥ विश्वनो तारूजी
तें तरियों दरियो मुत्ति तरीगु लोभनो ॥

ए चार कषाया भवतरु पाया ॥ विश्वनो तारुजी
वहु भेदे खेदे सहित निकदी तु जयो ॥ वारुजी. ३.
कदर्प्पे दर्प्पे सवि सुर जीत्या, विश्वनो तारुजी
ते ते इक धक्के विक्रम पक्के मोडीयो, वारूजी
हरिनादे भाजे गज नवि गाजे, विश्वनो तारुजी
अप्टापद् आगल ते पण छागल सारिखो, वारूजी ४
रति अरति निवारी भय पण भारी, विश्वनो तारुजी.
ते मन नवि धरिया तेहज डरिया तुजथी. वारुजी
तें तजीय दुगछा शी तुज वछा, विश्वनो तारूजी
तें पुग्गल अप्पा विहु परखें थप्पा लक्षणे, वारूजी ५
परिसहनी फोजे तु निज मोजे, विश्वनो तारुजी
नवि भागो लागो रण जिम नागो एकलो, वारुजी ॥
उपसर्गने वर्गे तु अपवर्गे, विश्वनो तारुजी।
चालता नडियो तु नवि पडियो पाशमा वा०॥ ६ ॥
टोय चोर उठंता विषम व्रजंता, विश्वनो तारुजी।
धीरज पविदडे तेज प्रचडे ताडियो, वारुजी।
नइधारण तरता पार उतरता, विश्वनो तारुजी।
नवि मारग लेखा विगत विशेषा देखिये वा०॥७॥

तिहा जोगनालिका समता नामे, विश्वनो तारूजी।
तं जोवा माडि उतपथ छाडि उद्यमें, वारूजी ॥
तिहा दीठी दूरें आनदपूरे, विश्वनो तारूजी।
उदासीनता शेरी नहि भव फेरी वक्र छे वा० ॥८॥
ते तु नवि मूके जोग न चूके, विश्वनो तारूजी।
बाहिर न अतर तुज निरतर सत्य ठे, वारूजी ॥
नय छे वहुरगा तिहा न एकगा, विश्वनो तारूजी।
तुमें नय पक्षकारी छो अधिकारी मुक्तिना वा० ॥९॥
तुमे अनुभव जोगी निजगुण भोगी, विश्वनो तारूजी।
तुमें धर्मसन्यासी शुद्ध प्रकाशी तत्वना; वारूजी ॥
तुमे आतमदरसी उपशम वरसी, विश्वनो तारूजी।
सींचो गुण वाडी थाये जाडी पुण्यशु वारूजी ॥१०॥
अप्रमत्त प्रमत न द्विविध कहीजें, विश्वनो तारूजी।
जाणग गुणठाणंग एकज भाव ते तें ग्रह्यो, वारूजी ॥
तुमें अगम अगोचर निश्चय सवर, विश्वनो तारूजी।
फरस्यु नवि तरस्यु चित्त तुम केरु स्वप्नमा. वा० ॥११॥
तुज मुद्रा सुदर सुगुण पुरदर विश्वनो तारूजी।

सूचे अति अनुपम उपशम लीला चित्तनी, वारूजी ॥
जो दहन गहन होय अतरचारी, विश्वनो तारूजी ।
तो किम नवपल्लव तरुअर दीसे सोहतो वा० ॥१२॥
वैरागी त्यागी तु सोभागी, विश्वनो तारूजी ।
तुज शुभमति जागी भावठ भागी मूलथी, वारूजी ॥
जग पूज्य तु मारो पूज्य छे प्यारो, विश्वनो तारूजी ।
पहेला पण नमियो हवे उपशमियो आदर्यो वा०॥१३॥
एम चोथे खडे राग अखडे सथुण्यो, विश्वनो तारूजी ।
जे मुनि श्रीपाले पचमी ढाले ते कह्यो वारूजी ॥
जे नवपद महिमा महिमाये मुनि गावशे, विश्वनो ता ॥
ते विनय सुजस गुण कमला विमला पावशे वा०॥१४॥

---

श्रीपाल महाराजाने श्री सिद्धचक्र भगवान्ना आराधनथी मळेल साक्षात् फल

सिद्धचक्र मुज एह, मनोरथ पूरशे हो लाल, मनोरथ०
एहिज मुझ आधार, विघन सवि चूरशे हो लाल, वि०
थिर करी मन वच काय, रह्यो इक ध्यानशु होलाल रह्यो०
तन्मय तत्पर चित्त थयु तस ज्ञानशुं होलाल, थयु०८

ततखिण सोहमवासि, देव ते आवियो हो लाल, देव०
विमळेसर मणिहार मनोहर लावियो हो लाल, मनो०
थइ घणो सुप्रसन्न कुअर कंठे ठवे, होलाल, कुंअर०
तेह तणो करजोडी, महीमा वरणवे हो लाल, महीमा०९
जेहवु वंछे रूप ते थायें ततखिणें हो लाल, ते थाये०
ततखिण वांछित ठाम जाये गयणांगणें होलाल जाये०
आवे विण अभ्यास, कळा जे मन धरे होलाल, कळा०
विषना विषम विकार ते सघळा सहरे हो लाल, ते०१०
सिद्धचक्रनो सेवक, हु छु देवता होलाल, के हु छु०
केइ उद्धरिया धीर, में एहने सेवता होलाल, मे०एहने०
सिद्धचक्रनी भक्ति घणी मन धारजो होलाल, घणी०
मुजने कोइक काम पडे सभारजो हो लाल, पडये ११

श्री सिद्धचक तप उद्यापननी ढाल

हवे राजा निज राजनी, लच्छितणे अनुसार,
उजमणु तेह तपतणु, माडे अतिहि उदार १
विस्तीरण जिनभुवन विरचीयें, पुण्य त्रिवेदिक पीठ,
चद्र चद्रिकारे धवल भुवनतळें, नवरंग चित्र निसीट्ठ.२

तप उजमणु रे इणिपरें कीजीये, जिम विरचेरे श्रीपाल-
तप फळ वाधेरे ऊजमणे करी, जेम जळ पकजनाल
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीये        २
पच वरणनारे शालि प्रमुख भला, मत्र पवित्र करी धान्य,
सिद्धचक्रनीरे रचना तिहा करे, सपूरण शुभध्यान
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीये        ३
अरिहतादिक नवपदने विपे, श्रीफळगोळ ठवत,
सामान्यें घृत खड सहित सवे, नृप मन अधिकीरे खत
तप उजमणु रे इणिपरे कीजीये        ४
जिनपद धवलुरे गोलक ठवे, शुचि कर्केतन अठ्ठ,
च्योत्रीश हीरेरे सहित विराजतु, गिरुओ सुगुण गरिट्ठ.
तप उजमणु रे इणिपरे कीजीये.        ५
सिद्धपदे अड माणिक रातडा, वळि इगतीस प्रवाळ,
घुसृण विलपितगोलक तस ठवे, मूरति रागविशाळ त ६
पण मणि पीत छत्रीश गोमेदके, सूरिपदे ठवे गोळ,
नीलरयण पचवीस पाठकपदें, ठवे विपुल रगरोलत त ७
रिष्टरतन सगवीस ते मुनिपदें पच रायपट अक,

सगसट्ठि इगवन्न सित्तरी पचास ते,मुगता शेप नि शक.
तप उजमणुं रे इणिपरे कीजीयें
ते ते वरणेरे चीगदिक ठवे, नव पदतणेरे उद्देश
बीजी पण सामग्री मोटकी, माडे तेह नरेश त० ९
बीजोरा खारेक दाडिम भला, कोहोला सरस नारग,
पूगीफळ वळी कलश कचतनणा, रतनपुज अति चग
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीये १०
जे जे ठामेरे जे ठवबु घटे, ते ते ठवेरे नरिंद,
ग्रह दिकपालपदें फल फूलडा,धरे सवरण आनद त०११
गुरुविस्तारेरे उजमणु करी, न्हवण उत्सव करे राय,
आठ प्रकारीरे जिन पूजा करे,मगल अवसर थाय,त०१२
संघ तिवारेरे तिलक मालानणुं, मगल नृपने करेइ
श्रीजिन मानेरे सघे जे कर्युं,मगल ते शिव देइ त०१३
तप उजमणेरे वीर्य उल्लास जे, तेहज मुक्तिनिदान,
सर्व अभव्येरे तप पूरा कर्यां, पण नाव्युं प्रणिधान,
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीयें,
लघुकर्मानेरे किरिया फल दीये, सकल सुगुरु उवएस.

सर होये तिहा कूपखनन घटे, नहि तो होइ किलेश,
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीये १५
सफल हुवो सवि नृप श्रीपालने, द्रव्य भाव जस शुद्ध,
मत कोइ राचोरे काचो मत लेइ, साचो विहु नयवुद्ध
तप उजमणुरे इणिपरे कीजीये १६
चोथे खडेरे दशमी ढाळ ए, पूरण हुइ सुप्रमाण,
श्रीजिन विनय सुजस भगति करी, पग पग होय
कल्याण, तप १७

॥ कळश ॥

तपगच्छनदन सुरतरु प्रगट्या, हीरविजय गुरु-रायाजी। अकवरशाहे जस उपदेशे, पडह अमारि वजाया जी ॥ १ हेम सूरि जिनशासनमुद्राए, हेम समान कहाया जी ॥ जाचो हीरो जे प्रभु होता, शासन सोह चढाया जी ॥ २ ॥ तास पटे पूर्वाचल उदयो, दिनकर तुल्य प्रतापी जी ॥ गगाजल निर्मल जस कीरति, सघले जगमाहि व्यापी जी ॥ ३ ॥ शाह सभा माहे वाद करीने, जिनमत थिरता थापी जी ॥ वहु आदर

जस शाहे दीधो, विरुद् सवाइ आपी जी ॥ ४ ॥ श्री विजयदेव सूरि तस पटधर, उदया बहु गुणवंता जी ॥ जास नाम दश दिशि छे चावु, जे महिमाए महंता जी ॥५॥ श्रीविजयप्रभ तस पटधारी, सूरि प्रतापे छाजे जी ॥ एह रासनी रचना कीधी, सुंदर तेहने राजे जी ॥ ६ ॥ सूरि हीरगुरुनी बहु कीरति, कीर्त्तिविजय उवझाया जी ॥ सीस तास श्रीविनयविजय वर, वाचक सुगुण सोहाया जी ॥७॥ विद्या विनय विवेक विचक्षण, लक्षण लक्षित देहा जी ॥ सोभागी गीतारथ सारथ संगत सखर सनेहा जी ॥ ८ ॥ संवत् सत्तर अडत्रीसा वरसे, रही रानेर चोमासे जी ॥ संघ तणा आग्रहथी माड्यो, रास अधिक उलासे जी ॥ ९ ॥ सार्द्ध सप्त शत गाथा विरची, पहोता ते सुरलोके जी ॥ तेहना गुण गावे छे गोरी, मिली मिली थोके थोके जी ॥१०॥ तास विश्वासभाजन तस पूरण, प्रेम पवित्र कहाया जी ॥ श्रीनयविजयविबुधपयसेवक, सुजशविजय उवझाया जी ॥ ११ ॥ भाग थाकतो पूरण कीधो, तास वचन संकेते जी ॥ तिणे वळी समकितदृष्टि जे नर,

तेह तणे हित हेते जी ॥ १२ ॥ जे भावे ए भणशे गुणशे, तस घर मगलमाला जी ॥ वंधुर सिंधुर सुदर मंदिर, मणिमय झाकझमाला जी ॥ १३ ॥ देह सवल ससनेह परिच्छद, रंग अभग रसाला जी ॥ अनुक्रमे तेह महोदय पदवी, लहेशे ज्ञान विशाला जी ॥१४॥

"सबोधप्रकरण"मां वतावेली श्री आचार्य गुणनी ४७ छत्रीशीओ

१ ली छत्रीशी १४ प्रतिरूपादि, १० यतिधर्म, १२ भावना
२ जी ,, ५ इन्द्रियसवर, ९ ब्रह्मगुप्ति, ४ कपायत्याग; ५ महाव्रत, ५ आचार, ५ समिति, ३ गुप्ति
३ जी ,, १ विधिप्रतिपन्नचारित्र, गीतार्थवत्सल, सुशील, सेवितगुरुकुल अनुयत्तिपरदेश, कुल -जाति रूपवान्, सघयणी -धृति -अनाशसी–अविकत्थ, अमायी, स्थिर, परिपाटीगृहीतवान् जीतपरिषद्, जीतनिद्र, मध्यस्थ, देशज्ञ कालज्ञ भावज्ञ, आसन्नलब्धप्रतिभ, वहुदेशभाषज्ञ, पचाचारयुक्त, सूत्रविधिज्ञ

अर्थविधिज्ञ, सूत्रार्थविधिज्ञ, उदाहरणज्ञ, हेतुज्ञ, उपनयज्ञ, नयज्ञ, ग्राहणाकुशल, स्वपर समयज्ञ गभीरदीप्तिमान् शिव–सौम्य–गुण-शतकलित प्रवचनोपदर्शक, ८ गणिसपदा, ४ आचारादिएकेक, ४ विनयप्रवृत्ति

४थी „ ८ ज्ञान, ८ सम्य०, ८ चारित्र, १२ तप

५मी „ ८ आचारादि, १० स्थितिकल्प, १२ तप, ६ आवश्यक

६ट्ठी „ १८ पापस्थानत्याग, १२ प्रतिमाधर, ६ व्रत-रक्षण

७मी „ २२ परिषह, १४ जीवभेद रक्षा,

८मी „ ४ सारणादिशिक्षा, ४ दानादि, १६ ध्यान, १२ भावना

९मी „ ५ चारित्र, ५ व्रत, ५ समिति, ५ आचार, ५ सम्य० ५ सज्झाय, ५ व्यवहार, १ सवेग

१०मी „ ५ इन्द्रिय, ५ विषय ५ प्रमाद, ५ आश्रव, ५ निद्रा, ५ भावना, ६ काययतना

११ मी „ ६ लेश्या, ६ आवश्यक, ६ द्रव्य, ६ वचन; ६ दोष, ६ भाषा

१२ मी „ ७ पिंडेषणा, ७ पानेषणा, ७ भय, ७ सुखसरन, ८ मद

१३ मी „ ८ दर्शनाचार, ८ ज्ञानाचार, ८ चारित्राचार, ८ गुरुगुण, ४ शुद्धि

१४ मी „ ८ योगाग, ८ सिद्धि, ८ दृष्टि, ८ कर्मविज्ञान, ४ द्रव्यादि अनुयोग

१५ मी „ ९ निदान, ९ ब्रह्मचर्य, ९ कल्पविहार, ९ तत्व,

१६ मी „ १० उववाय, १० असवर, १० सात्लेश, ६ हास्यादि

१७ मी „ १० सामाचारी १० समाधिस्थान १६ कषायत्याग

१८ मी „ १६ समाधिभेद १० अशनशुद्धि १० प्रतिसेवात्याग

१९ मी छत्रीशी १० मुनिधर्म, १० विनय, १० वैयावच्च, ६ अकल्प त्याग

२० मी ,, १० रुचि, २ शिक्षा, १२ अग, १२ उपाग
२१ मी ,, ११ गृहिप्रतिमा, १२ व्रत, १३ क्रियास्थान
२२ मी ,, १० प्रायश्चित, १२ उपयोग, १४ उपकरण
२३ मी ,, १२ भावना, १२ तप, १२ मुनिप्रतिमा
२४ मी ,, ८ अंडजादिजीव,१४ गुणस्थान, १४ प्रतिरूप
२५ मी ,, ३ गारव, ३ शल्य, १५ सज्ञा, १५ योग
२६ मी ,, १६ उद्गमदोष,१६ उत्पादनदोष,४ द्रव्यभिग्रह
२७ मी ,, १६ वचन, १७ सयम, ३ विराधना
२८ मी ,, १८ दीक्षा अयोग्यने दीक्षा न आपे,१८ पापवर्जन
२९ मी ,, १८ ब्रह्मचर्य शीलांग १८ वसग्ग
३० मी ,, १९ काउस्सगदोष, १७ मरण
३१ मी ,, १ मिथ्या, २० असमाधि, ५ मडलिदोष, १० एषणादोष
३२ मी ,, २१ शवल, १५ शिक्षास्थान
३३ मी ,, १ मिथ्या० ३ वेद,६ हास्यादि,४ कषाय, १४ अभ्यंतर ग्रंथि, २२ परिषह
३४ मी ,, २७ मुनिगुण ९ कोटिविशुध्धि

३५मी ,, २५ पडिलेहण ६ कायविराधनात्याग ५ वेदिकाशुध्धि

३६मी ,, ३२ योगसग्रह ४ भावे ( आचरणा–भाषणा वासना–परावर्त्तना )

३७मी ,, २८ लब्धि, ८ प्रभावक

३८मी ,, २९ पापश्रुतवर्जन, ७ विशोधिगुण

३९मी ,, ६ अभ्यन्तरारि, ३० मोहस्थान

४०मी ,, ३१ सिद्धगुण, ५ ज्ञान

४१मी ,, दिव्यादि ४ उपसर्ग, ३२ जीवभेद

४२मी ,, ४ विकथा, ३२ वदनदोष

४३मी ,, ३३ आशातना, ३ वीर्याचार

४४मी ,, २५ व्रतभावना ११ अगधारी

४५मी ,, १२ अंग, १० पयन्ना, ६ छेद, ४ मूळ, १ नंदी, १ अनुयोग २ अरागद्वेष

४६मी ,, १५ त्रिकरणपूर्वक पचाचार, १० सामाचारी, ५ समिति, ५ स्वाध्याय, १ अप्रमत्त

४७मी ,, ८ प्रव० माता, ८ सुखदु खशय्या, ३ सत्य; ६ भाषा, २ ध्यान, ७ विभग, २ धर्म,

## १ ॥ श्रीआचार्यगुणनी ३६ छत्रीशीओ ॥

---

१ प्रथम छत्रीशी ४ देशना, ४ कथा, ४ धर्म, ४ भावना, ४ सारणा, १६ चार ध्यानना प्रत्येकना चार चार भेद्
२ बीजी छत्रीशी ५ सम्यक्त्व ५ चारित्र, ५ व्रत, ५ व्यवहार, ५ आचार, ५ समिति; ५ स्वाध्याय, १ सवेग
३ त्रीजी ,, ५ इन्द्रिय, ५ विपय, ५ प्रमाद, ५ निद्रा, ५ आश्रव, ५ कुभावनात्याग, ६ कायजयणा
४ थी ,, ६ वचनदोप, ६ लेश्या, ६ आवश्यक ६ द्रव्य, ६ तर्क, ६ भापा
५ मी छत्रीशी ७ भय, ७ पिंडेपणा, ७ पानैपणा, ७ सुख, ८ मद
६ ठी ,, ८ ज्ञानाचार, ८ दर्शनाचार, ८ चारित्राचार, ८ वादिगुण, ४ बुद्धि

७ मी ,, ८ कर्म ८ योग, ८ सिद्धि, ८ योगदृष्टि, ४ अनुयोग

८ मी , ९ तत्त्व, ९ ब्रह्मगुप्ति ९ निदान, ९ नवकल्पविहार

९ मी ,, १०असंवर,१०संक्लेश,१०उपघात,६हास्यादि-

१० मी ,, १० सामाचारी, १० चित्तसमाधिस्थान, १६ कषायत्याग

११ मी ,, १० प्रतिसेवा, १० शोधिदोष, ४ विनयसमाधि, ४ श्रुतसमाधि, ४ तपसमाधि, ४ आचारसमाधि

१२ मी ,, १०वैयावच्च,१० विनय, १०धर्म ६अकल्प,

१३ मी ,, १० रुचि, १२ अंग, १२ उपांग, २ शिक्षा

१४ मी , ११ श्रावकप्रतिमा,१२ व्रत, १३ क्रियास्थान

१५ मी ,, १२उपयोग,१०प्रायश्चित्तदान, १४उपकरण

१६ मी ,, १२ तपभेद, १२ भिक्षुप्रतिमा, १२ भावना

१७ मी , १४ गुणस्थान, १४ प्रतिरूपादिगुण, ८ सूक्ष्मजीवरक्षा

१८ मी ,, १५ योग, १५ सञ्ज्ञा, ३ गारव, ३ शल्य १६
१९ मी ,, उद्गमदोष, १६ उत्पाददोष, ४ अभिग्रह
२० मी ,, १६ वचनविधि, १७ सयम, ३ ज्ञानादि विराधना
२१ मी ,, १८दीक्षा अयोग्य पुरुष भेद, १८पापस्थान.
२२ मी ,, शीलागसहस्र, १८ ब्रह्मचर्यभेद
२३ मी ,, १९ कायोत्सर्गदोष १७ मरणभेद
२४ मी ,, २० असमाधिस्थान, १० एषणादोष, ५ ग्रासैषणादोष, १ मिथ्यात्व
२५ मी ,, २१ शबलदोष, १५ शिक्षास्थान
२६ मी ,, २२ परिषह, १४ अभ्यन्तरग्रन्थि
२७ मी ,, ५ वेदिकाशुद्धि, ६ दोष, २५ प्रतिलेखना
२८ मी ,, २७ साधुगुण, ९ कोटिविशुद्धग्राहक
२९ मी ,, २८ लब्धि ८ प्रभावकगुण
३० मी ,, २९ पापश्रुतत्याग, ७ शोधिगुण
३१ मी ,, ३० महामोहस्थान ६ अतरग शत्रु
३२ मी ,, ३१ सिद्धगुण ५ ज्ञान

२० , २१ श्रावकगुण, ४ वृत्तिप्रवत्तना
२१ ,, ३ अतत्त्व, ३ तत्व,३ गारव,३ शल्य,६ लेश्या, ३ दुड, ४ कारण,
२२ , २० स्थानक ( जीनपदार्जव ) ५ आचार,
२३ ,, १२ अरि० गुण ८ सिध्धगुण ५ भक्तिनी एकता
२४ ,, १५ सिध्धभेद १० त्रिक
२५ ,, १६ आगार ९ ससारी जीव

आ गुणोनी पच्चीशीओमा अप्रशस्त भावथी निवृत्ति अने प्रशस्त भावमा प्रवृत्ति समजवी

---

॥ श्री साधु गुणनी २७ सत्तावीशीओ ॥

---

सत्तावीशी—

१ ली, ६ व्रत, ६ कायरक्षा,५ इन्द्रिय, १ लोभनिग्रह,१ क्षमा, १ भावशुद्धि, १ पडिलेहणशुद्धि,१ सयम, ३ अकुशलयोगरोध, १ शीतादिसहन, १ मरणात उपसर्गसहन

२ जी उरग गिरि-अग्नि-सागर गगन तरु भ्रमर मृग—
धरणि-कमळ सूर्य पवन-विप तिनिश-वायु- वं-
जुल-कर्णिकार-उत्पल भ्रमर उदर नट विगेरे.
३ जी २५ महाव्रतभावना, २ द्रव्य भाव भेदथी
४ थी २५ अशुभ भावना, २ राग द्वेप वडे
५ मी १० श्रमणधर्म, ९ ब्रह्मगुप्ति, ८ प्रव० माता
६ ठी ८ वे शुभध्याननां भेद, ३ ज्ञानादि, १६ मै-
त्र्यादि भाव० ( दरेकना ४-४ ) भेद
७ मी ८ वे अशुभ ध्यान भेद, १६ कपाय, ३ ज्ञा-
नादिविराधनत्याग
८ मी ७ पिंडेपणा, ७ पानैपणा, ७ सप्तसप्तिका,
६ अशुभभापा
९ मी १० सत्यवचन, १७ सयम,
१० मी १२ तप, १४ काम, १ असयमनिग्रह
११ मी १० एपणादोप, १६ उत्पादनदोप,१अगृद्धिभाव
१२ मी १६ उद्गमादिदोप, ५ आश्रव, ५ मडलिदोप,
१ मनसहित

१३ मी १५ शिक्षास्थान, १२ भिक्षुप्रतिमा
१४ मी ८ वसतिदोष, ८ प्रमाद, ८ मद, ३ गारव
१५ मी १० विनय, ५ वरण, असत्यमृपा १२
१६ मी ११ अग, १२ उपाग, ४ अभिग्रह
१७ मी १० सामाचारी, आवश्यकादि १०, २ शिक्षा- ५ स्वाध्याय,
१८ मी १८ हजारशीलाग, ९ निदान
१९ मी ३ अशुभ लेश्या, १८ ब्रह्मचर्यभेद, ३ शल्य, ३ दड
२० मी ८ पडिलेहणा, ८ गोचरी, ८दृष्टि, ३ शुभलेश्या
२१ मी १२ भावना, ४ शय्या (शुभ), ७ भयत्याग, ४ दुखशय्यात्याग
२२ मी १० प्रत्याख्यान, ११ विगय, ६ आवश्यक
२३ मी ४ दिव्यादि ( उपसर्ग ), २२ परिषह, ए २ मा धीरता
२४ मी १ जिनकल्प, १ स्थ०कल्प, १० अचेलादि- कल्प, ५ चारित्र, १० प्रायश्चित्त

२५ मी २० असमाधि, ७ विभगस्थान

२६ मी २१ शबळ, ते करण–मतिथी २ ४ असवर

२७ मी ५ स्थावर,१श्वान,१रासभ,१कुर्कट १कर १दीपक-
१सुवर्ण १मुक्ता १हस,१अबुज,१पोत,१श्रीफळ,१वस,
१शख,१तुबरु, १चदन,१अगुरु,१मेव, १चद्र, १वृषभ,
१गजेन्द्र, १मृर्गन्द्र १सूर्य सरखा

आ गुणोमा अप्रशस्तभावथी निवृत्ति अने प्रशस्तभावमा प्रवृत्ति स्वरूप गुणो समजवा

---

## मन्हजिणाण सज्झाय

मन्हजिणाण आण, मिच्छ परिहरह धरह सम्मत्त ॥
छव्विह–आवस्सयमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवस ॥ १ ॥

भावार्थ—हे भव्य श्रावक ? श्रीजिनेश्वर भगवाननी आज्ञा मान्य, मिथ्यात्वनो त्याग करय, सम्यक्त्व धारण करय, छ प्रकारना आवश्यकमा प्रति दिवस उद्यमवत था १

पव्वेसु पोसहवय, दाण सील तवो अ भावो अ ॥
सज्झायनमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥२॥

भावार्थ—पर्व दिवसने विषे पोसह व्रत करवु, दान, शील, तप अने भावना, स्वाध्याय, नमस्कार अने परोपकार करवु, तथा जयणा राखवु २

जिणपूआ जिणथुणण, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं॥
ववहारस्स य सुद्धा, रहजत्ता तित्थजत्ताय ॥३॥

भावार्थ—जिनेश्वर भगवाननी पूजा, जिनेश्वर भगवाननी स्तुति, गुरुनी स्तुति, अने साधर्मीने विषे वात्सल्य, व्यवहारनी शुद्धि, रथयात्रा अने तीर्थयात्रा ३

उवसम विवेगसंवर, भासासमिइ छजीवकरुणा य॥
धम्मिअजणससग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥४॥

भावार्थ—उपशम, विवेक संवर, भाषासमिति अने छकाय जीवनी दया, धार्मिक माणसनो सत्संग, इंद्रियोनु दमन अने चारित्रना परिणाम राखवा (आ सर्व क्रियाओ करवी ) ४.

संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहण पभावणा तित्थे ॥
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥

भावार्थ—श्री संघ उपर बहुमान राखवु, पुस्तक लखाववा अने तीर्थनी प्रभावना करवी श्रावकना आ कृत्यो छे, ते निरंतर सद्गुरुना उपदेशथी जाणवा ५ इति

इति श्रावक दिनकृत्य सज्झाय

## ॥ अथ सथारा (पोरिसी) विधिसूत्र ॥

---

निसीहि निसीहि निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाइण महामुणीण ॥

अर्थ—पाप व्यापारनो त्याग करीने [त्रार त्रण] म्होटा मुनिओ एटा गौतमस्वामी विगेरे क्षमाश्रमणोने नमस्कार थाओ.

अणुजाणह जिट्टि (ट्ठ) ज्जा ! अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहि मडियसरीरा ! बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थ—हे वृद्ध [वडिल] साधुओ ! आज्ञा आपो, म्होटा गुणरूप रत्नोवडे सुशोभित छे शरीर जेना एवा हे श्रेष्ट गुरुओ ! आज्ञा आपो ! पोरिसि लगभग सपूर्ण थइ छे हु रात्रि सबधी सथारो करु छु ?

अणुजाणह सथार, बाहुवहाणेण वामपासेण ॥
कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमि ॥ २ ॥

सकोइए सडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ॥
दव्वाइउवओग, ऊसासनिरुभणालोए ॥ ३ ॥

अर्थ—संथारानी आज्ञा आपो ! [गुरु महाराज आज्ञा आपे एटले] हाथने ओशीकु करीने डाबा पडखे, कुकडीनी पेठे आकाशमा पग पसारवाने असमर्थ छतो जमीनने पुजे [ पुजीने त्या पग राखे छे ] अने ढींचणो संकोचीने सूवे अने पासु फेरवता शरिरनु पडिलेहण करे वली [ जागतु होय त्यारे ] द्रव्यादिनो उपयोग करे [ तेम छता निद्रा उडे नाहि तो] श्वासोश्वास रधाने [ निद्रा दूर करवाने जता आवता लोकने ] जुए छे २–३

जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइरयणीए।
आहारमुवहिदेह, सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥ ४ ॥

अर्थ—जो आ रात्रिने विषे मारा आ शरीरनु मरण थाय तो आहार, उपकरण अने शरीर वगेरे सर्व त्रिविधे करीने सघल्ल [मन, वचन अने कायावडे ] वोसराव्यु छे ४

चत्तारि मगल- अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल, केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल ॥ ५ ॥

अर्थ—चार मने मंगलरूप छे–अरिहंतो मांगलिक छे, सिद्धो मांगलिक छे, साधुओ मांगलिक छे अने केवलीए प्ररूपेल धर्म [श्रुत अने चारित्ररूप] मांगलिक छे ५

चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥

अर्थ—चार लोकने विषे उत्तम छे–अरिहंतो लोकमां उत्तम छे, सिद्धो लोकमां उत्तम छे, साधुओ लोकमां उत्तम छे अने केवलिए प्ररूपेल धर्म लोकमां उत्तम छे ६

चत्तारि सरणं पवज्जामि–अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

अर्थ—हुं चारने शरण तरीके अंगीकार करुं छुं–अरिहंतोने शरण अंगीकार करुं छुं, सिद्धोने शरण अंगीकार करुं छुं साधुओने शरण अंगीकार करुं छुं अने केवलिए प्ररूपेल धर्मने शरण अंगीकार करुं छुं ७

पाणाइवायमलिअं, चोरिक्क मेहूण दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥८॥

कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्न रइअरइसमाउत्त ।
परपरिवायं माया-मोस मिच्छत्तसल्लं च ॥ ९ ॥

अर्थ—प्राणातिपात [ हिंसा ], मृषावाद, चोरी, मैथुन [ स्त्री सेवन], द्रव्य [धन-धान्यादि पौद्‌गलिक वस्तु] नी मूर्छा, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग तेमज द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान [ परने आळ देवु], चाडी अने रति अरतिवडे युक्त, परपरिवाद मायामृषावाद अने मिथ्यात्वशल्य ८-९

वोसिरिसु इमाइं मुक्खमग्गससग्गविग्घभूआइं ।
दुग्गइनिबंधणाइं अट्ठारस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थ—मोक्षमार्गना गमनने विषे अंतराय करनारा अने माठी गतिना कारणभूत एवा ए पूर्वोक्त अढार पापस्थानोने [हे आत्मा!] तुं वोसराव [त्याग कर] १०

एगोहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥११॥

अर्थ—हुं एकलो छु, म्हारं कोई नथी, हुं अन्य कोइनो नथी, ए प्रकारे अग्लान चित्तवाळो [ सावधान चित्तवाळा ] आत्माने शिखामण आपे ११

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदसणसजुओ ।
सेसा मे वाहिरा भावा, सव्वे सजोगलक्खणा ॥१२॥

अर्थ—शाश्वतो [सदा काळ-नित्य रहेनारो] अने ज्ञान दर्शन युक्त, एक मारो आत्मा छे, वाकीना सयोग लक्षणवाळा सर्व भावो माराथी वाह्य अर्थात् माराथी जूदा छे १२

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ।
तम्हा सजोगसवध, सव्व तिविहेण वोसिरिअ ॥१३॥

अर्थ—सयोग ( धन कुटुंबादिक ) छे मूळ कारण जेनु एवी दुःखनी श्रेणी जीवे प्राप्त करी छे ते माटे सयोग सबध में त्रिविधे ( मन, वचन, कायाए ) वोसिराव्यो छे १३

अरिहतो मह देवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्त तत्त, इअ सम्मत्त मए गहिअ ॥१४॥

अर्थ—यावज्जीव सुधी अरिहत म्हारा देव छे, साधुओ म्हारा गुरु छे, वीतराग देव भरपेल तत्त्व ( धर्म ) मने मान्य छे, ए प्रकारे सम्यक्त्वने में ग्रहण कर्युं छे १४

खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ, - [illegible]काय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह [illegible]

अर्थ—सर्व जीव निकायोने खमावीने अने खमीने हु ( रहु छु के) मारा सर्व अपराधो खमो. सिद्धनी साक्षीपूर्वक हु आलोचना करु छु, मारे कोइनी साथे वैरभाव नथी १५

सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमत ॥१६॥

अर्थ—सर्व जीवो कर्मवशथी चौद राजलोकने विषे भमे छे ते सर्वने में खमाव्या छे मने पण तेओ खमे १६

ज ज मणेण बद्ध, ज ज वाएण भासिय पावं।
ज ज काएण कय, मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

अर्थ—जे जे पाप मनवडे बधायु, जे जे पाप वचन वडे बोलायु अने जे जे पाप कायावडे करायु छे ते मारु ( सर्व ) पाप फोगट थाओ अर्थात् ते पापनो मिच्छामि दुक्कड दउ छु १७

## ॥ देव वादवानी विधि ॥

---

प्रथम खमासमण दइ, इरियावही पडिक्कमी लोगस्स कही, उत्तरासण नाखीने खमा० इच्छा० चै-

त्यवदन करुं ? इह कही चैत्यवदन करी नमुत्थुणं अने जयवीयराय [आभवमखडा सुधी] कही, खमा० दइ चैत्यवदन करी, नमुत्थुण कही ऊभा थइ अरिहत चे० अन्नत्थ० १ नवकार काउ० पारी नमोऽर्हं० पहेली थोय कहेवी लोगस्स० सव्वलोए० १ नवकारकाउ० बीजी थोय पुक्खरवरदी० सुअस्स० १ नवकारकाउ० त्रीजी थोय. सिद्धाण बुद्धाण० वेयावच्च० १ नवकारकाउ० पारी नमोऽर्हत्० चोथी थोय कही बेसीने नमुत्थुण कहीने बीजी वार पूर्वनी माफक चार थोइओ कहेवी, पछी नमुत्थु० जावतिचे० खमा० जावतकेवि० नमोऽर्हत्० कही स्तवन (उवसग्गहर अथवा बीजु) कहेवु अने जयवीयराय अरधा (आ भवमखडा सुधी) कहेवा पछी खमा० दइ चैत्य० करी, नमुत्थुण कहीने जयवीयराय सपूर्ण त्यारपछी विधि करता अविधि थइ होय च्छामि दुक्कड दइने, पछी देववद सज्झाय [illegible] वगेरेमां न

ज्झायने माटे एक खमा० दइ इच्छा० सज्झाय करुं इछ कही नवकार गणी उभडक पगे वेसी एक जण मन्हजिणाणनी सज्झाय कहे ( त्यारपछी नवकार न गणवो )

